





क्रम-संख्या 50289

ग्रन्थ-नाम गुटका

विषय काव्य

पत्र-संख्या

पंक्तियां

पाठ-संख्या

प्रारम्भ :-

ग्रन्थकर्ता अज्ञात

लिपि देवनागरी

पत्र-प्रमाण X मि० मि०

अक्षर

पूर्ण/अपूर्ण



Acc. No. → 50289

गुटका १ (हिन्दी)

१०/१२/२



ह्रीं नमो नमो नमो नमो नमो  
इमं नमो नमो नमो नमो नमो  
नमो नमो नमो नमो नमो  
इमं नमो नमो नमो नमो नमो  
ही नमो नमो नमो नमो नमो  
नमो नमो नमो नमो नमो  
नमो नमो नमो नमो नमो  
इमं नमो नमो नमो नमो नमो  
नमो नमो नमो नमो नमो  
नमो नमो नमो नमो नमो  
इमं नमो नमो नमो नमो नमो



50289

महोदय

गुटका हिन्दी ।















श्री गणेशाय नमः ॥ अधरागम

ललिरव्यते ॥ जब सुने हरे नंद

या लसंत न को एही साथ मेरे सु

स्त कंदीयो हाथ या जनी की बात

याली नाथ जु बनारि हे ॥ जब तो

छुड़ी सराग सब ही को की फो प्र

कास रां माजी ये पा वसो रखा

सुनै जाई हे ॥ कैरव को बडो भा

र बिभास को सुर प्रकास लखी त

केली ये या छी राम कली बं नारि हे



प्रभातहि बडो उदार ये सो सुंधो  
 देवगांधार पारनां लक्या को पंच  
 ममई ताई हो बसंत तो उगम तो सुरः  
 भरपातरागतालपुर सुवर की  
 सुषगसार सो रामई सो हार हे ॥  
 देसाप को दसायपार बेलामल  
 बडा विस्तार सार मध्य ससरस  
 सो असावरि नहि ॥ छोड़ी  
 को त्रिविधगोन चासिका ये ध  
 रुध्यां न मानतां नगां नला रये



जेनंसरी जुमाई है ॥ २॥ काढे  
रा की को न हार गुजरी जेई न  
भार सारंग को सारसी मछार  
मेघ बधार है ॥ श्री रागागानसर  
दार सिंधु तो सदा उदार नट ह  
के हार खी ये परवी मो डार है ॥  
ष भाय ती लु ती समीर राय से  
तर मे जु ओर आं लो नी को धी  
र सो गौरी जो दनार है ॥ दीपक  
रो दी ये के साथ काढे रा की का



हाक ऊवात भात भल्ली भाई है ॥ ३  
 नायकी को नोहि मोल कानडा  
 को कीयो तोल बिहाग डीकि वात  
 सो भल्ली भात भाई है ॥ के दर  
 तो काहं न रूप इंदो नही अडाणी  
 रूप को नग वे रूप सो तो मैं मार  
 को भेद ताई है ॥ सामेरी सहा सुहा  
 ग जे जे वं तीय ती भाग राग  
 पीछे रग में सो रही सो गार है ॥  
 पर ज तो पि छली रास में वा डो फ



योकीरतार सब ही सा थरंगमा

लसरी बोला रहे ॥ राग काव

डापरमान महाजांने की योगां

न पांनपांनी तजीमाने प्रात

नीसगाइहे ॥ तीनकी हपाफ

रमानं कवीतकी योहेगांन

नीसदिनधरी ध्यान काहं

नकाहं नं श्री हलसीरनांइहे ॥

इतिश्रीरागमालसरुजा



ॐ कुरु वंग द्युते च छ जे जे य रं  
इह तं य दधनं प फ व न











अथ वरुणः  
 विष्णुः  
 ब्रह्मा  
 इति त्रिमूर्तिः  
 नमो  
 भगवते  
 श्रीगणेशाय  
 नमः











ਮਧ ਆਦਾ ਪਾ ਕੁਨ ਧੀ ਧੁਈ ਏ॥ ਆਉ ਸੇਰ ੨  
 ਆਉ ਭੁਭੁ ਧੁ ॥ ਪੁਛੇ ਕੁਟਾ ੫ ਮਾਂ ਹੁ ਚੁਠਾ ਦੀ  
 ਏ॥ ਪੁਛੇ ਜੋਲ ਸੇਰ ੨ ਮੁਕੀ ਧੁ ਪੁਛੇ ਤ ਕਾ ਲੀ  
 ਧੁ ॥ ਪੁਛੇ ਕੁਲ ਕਨਾ ਧੀ ਏ ॥ ਤੇ ਕੁ ਹੀ ਧੁ ਚੁਠੀ ਏ ॥  
 ਤਜ ਕੁ ੫ ਤਮਾਲ ਪਤਰਾਂ ਕੁ ੫ ਏ ਚੁਠੀ ਏ  
 ਕੁ ੫ ਨਾਗ ਕੇ ਲਰਾਂ ਕੁ ੫ ਏ ਚੁਠੀ ਗਟਾਂ ਕੁ ੫ ਏ  
 ਏ ਕੁ ੫ ਧੀ ਪੇਰਾਂ ਕੁ ੫ ਮਰੀ ਏ ਕੁ ੫ ਏ ਲਾਂ ਕਾ  
 ਨਾਂ ਆਏ ਵਾਟੀ ਕੁ ਪੁਛੇ ਏ ਆ ਕੁ ਰੀ ਏ ਪੁਛੇ ਮਾਂ  
 ਹਨਾ ਧੀ ਏ ਹਨਾ ਦੀ ਤਨਾ ਰੀ ਏ ॥ ਪੁਛੇ ਨਾ ਸਾ  
 ਮਾਂ ਧਾਈ ਮੁਕੀ ਏ ਏ ਕੁ ੫ ਨੇ ਆ ਸੇਰ ਪਾ



यो ॥ उधरुनं दाने ॥ अरुची नेटाले ॥ मबु  
जाइने टाले ॥ उने टाले ॥ मबुने इति  
प्रादा फफुस धूर्ण ॥ अमुको चापा  
कली पत ॥ कोचो सेर ॥ एषो सेर ॥  
पड वास सेर ॥ गुंदर सेर ॥ नलवी ज  
सेर ॥ एवा ना चार मेली कीणो वारी ॥  
सेर ॥ रुपड ठाण कर ॥ पछे धुध सेर ३२  
मोहे नाषी कटाया मोहे वाली ये चुले चु  
होवी ये ॥ पछे मंद मंद अगनी कीजे ॥ पछे  
मोड्या मतार घी रं सेर २ सुकी ये पछे वी



॥ या सर ॥ मोट्ठी बोधी ॥ धर्म सो मुक्री ये  
 पछे नीचो ईश्वरी जे कुचा कल ॥ काषी ये ॥ प  
 छे हा ए दार पायतारे मोह धोई सर रक्षा  
 लाये ॥ पछे कल कनाषी ये ते कही ये छी ये ॥  
 तज टां ५ तमा जपत्र टां ५ ए लकी टां  
 ५ नाग के सर टां ५ ल वंग टां ५ अक  
 ल करो टां ५ सुत टां ५ पी पुर टां ५ म  
 री टां ५ सुक उ टां ५ तगर टां ५ अगर  
 टां ५ संमुद्र सोष टां ५ मुसली टां ५



गोषस्तु टांक्र ५ सुखवीज्जोक्र ५ (क्रूर)  
 टांक्र ५ केसर टांक्र ५ छुट्टांक्र ५ पारो  
 टांक्र ५ अश्वक्र टांक्र ५ व्यंगंटांक्र ५ चा  
 बुटांक्र ५ विजया टांक्र ५ लोहटांक्र ५ अ  
 श्री एटांक्र ५ ए-ओसटांक्र टांक्र ५ मु  
 श्रीपेक्षा पाक्र मांक्रा वीये ॥ हंला वीये  
 सांक्रस्तेर ३ मुक्रीये पंछे उत्तारीये ॥  
 योयडा वां ॥ गमां घां वी मुक्रीये स  
 क्रं २॥ ने-आसरेष्वंरा श्री सुतो अंठांक्र  
 रंगारनाथमेहनेतालने नं वंजाईनेता



१५ ते वाचनेन ताले पुनः नैरा लेहना रोगनेरा  
 लेहति च डसपाकसुमापः ३  
 अथ सुं न्या कलिष्पते सुं वर २ श्री ए  
 पातिये उधसेर १६ मध्ये पचावी ये सुं वंड  
 धमा १ पीहजा वीये पछे जाडु या यतारे वी  
 इस्ते १ सुश्री ये पछे दाणा दारया यतारे कल  
 कना वी ये ते कही ये छी ये तज्जं पं तमा  
 जपत्रं तां क ५ एले वी तां क ५ नाग के सर तां क  
 ५ जे वंग तां क ५ के को च तां क ५ जा वें नी तं क ५  
 जाय क जे तां क ५ के सर तां क ५ वी पली



जसो कं ५ अमरका कडी सो क ५ कहर तो  
क ५ अमरकली ५ जोह तो ५ एकर क  
जी एका कली पे ली पा क्रमो ना की येह जावी  
पछे सांड सेर ३ मोहे ना की येह जावी ॥  
चो पडावा सण ना क जे मुंजी ५ पछे  
दी क ५ ने आ सरे सुवरा नी ५ ॥ मा पुं  
जंतुरहे आ प्यो जल तोरहे ॥ वाय ने टी  
जे वेहे राट तेरा ले ॥ जलंतर ने टी ले ॥ मा  
थां मा वेग आ वता हो ज तेह ने टी ले ॥  
सुं व पा क्रस मा सः ॥



४ अथ लवंग पाक लीष्यते ॥ लवंग सर ॥ वाटी  
 मुक्रा क्रजि ॥ पिछे दुध सेर ॥ मांहे पचावीये  
 पले दाण दारया सतारे धी ई स ॥ मुक्रा ये  
 पले धाण वण तुथा यतारे कुज क्रना वीये ॥  
 ते कुही ये लीये ॥ तज रां कु ५ तमा जप न रां  
 कु ५ एलची रां कु ५ नाग के सर रां कु ५ क्रम  
 लक्रा कुडी रां कु ५ सुक्रुड रां कु ५ अगर रां  
 कु ५ तगर रां कु ५ के सर रां कु ५ जाय फल रां  
 कु ५ लवंग रां कु ५ अक्र लक्र रां कु ५  
 वरा स रां कु ५ वेसला वन रां कु ५ ए जी



ए० वा० टी० भु० जो० करी ये क्र० प० र० छा० ए० करी ये  
 मा० हे० ना० पी० ये ॥ पु० छे० लो० ह० टां० रु० न० नो० बी० ये  
 सा० क्र० र० से० र० नो० पी० ये टां० क्र० शो० जे० वा० स० र०  
 प० व० रा० नी० ये श्री० तो० ग० नें० टा० ले ॥ न० व० ज० र्श० ने  
 टा० ले ॥ वा० यु० ने० टा० ले नि० धा० तं० ने० टा० ले ए० र०  
 आ० रो० म० ने० टा० ले इ० ति० ज० वे० ग० प्रो० क्र० स० म० तं०  
 अ० थ० प० ड० वा० स० वा० क्र० ली० प्य० ते  
 पु० ड० वा० स० से० र० श्री० ए० वा० टी० भु० जो० की० जे० प०  
 छे० दु० य० से० र० ३२ मा० वा० पी० क्र० म० ई० या० मा० हे० व०  
 नो० पी० ये ॥ प० छे० अ० न० वा० वे० ए० हे० वा० अ० न० पी० जी०



५  
ज पछ जाइयायतार धीरैसरं मांहेना  
धीये॥ पछेसाणषण्डुंयायतारैकलेक  
नाधीयेतेकहीयेछीये॥ लवंगलंक्र५  
तजंटांक्र५ तमालपन्नंटांक्र५ एलेंची  
टांक्र५ नागकेसरंटांक्र५ रं एउंक्रंटां  
क्र५ अक्रलक्ररोटांक्र५ समुद्रसागरं  
क्र५ अजमोफोरासान्नीटांक्र५ चुनी  
क्रवावाटांक्र५ वेरीगुंदरंटांक्र५ जाय  
कुलंटांक्र५ जावंचीटांक्र५ हीगलंक्र५



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ले॥ सुन्नां रोग नैरा ले॥ नब लाई नैरा ले  
धात जाती हाय ते हे नैरा ले॥ गर्भ रहे  
तो न होय सो गर्भ रहे॥ वायु नैरा ले रात  
आ रोग नैरा ले सही इति पड्या सपाक  
समाप्तः अथ आसंध पाक नीय  
ते॥ आसंध सेर २ जीणी वारी मुकाफी  
जे॥ पछे दूध सेर १६ मांहे उका लीये  
पछे अन्न पाक एहे वो अग्नी कीजे॥ प  
छे मांहे वायु तार वीर सेर १५ मांहे वापीये



५ छेदाणा हार वायुता रे कलक नीमीये  
 ते कही ये छीये ॥ तज टो क ५ तमा ले प्रत्र  
 टो क ५ ए ल ची टो क ५ नाग के संय टो क ५  
 जाय फल टो क ५ जावे च्री टो क ५ ल वंगे रा  
 क ५ अ कं ल करो टो क ५ अं ज मो गी रा सा  
 नी टो क ५ वी डंग टो क ५ वी च्री टो क ५ वर  
 धारो टो क ५ सु आ टो क ५ सुं व टो क ५ पी  
 पेर टो क १० मरी टो क ५ च व्य क टो क ५ अ  
 ज मो दी टो क ५ हल द र टो क ५ दां रु ह  
 र टो क ५ श ल वरी टो क ५ रा से नी टो क ५



Missing Page



हवे लावे ॥ कैंडक माली होय ते ते नो लावे ॥  
 का सो फल ला होय ते हे नो लावे ॥ कैंडक  
 माली होय ते छूटे ॥ सो धि कल ती होय  
 ते हुनो लावे ॥ केरुने टाले निबु जाई ने टा  
 ले नि धी त ने टा ले ॥ ए ट जा रों गने टा ले ॥  
 रति : अयु जस ए पां कली वु ते  
 जसा ए सेर २ जी ए क चरी मे ॥ पके दुध  
 सेर ३२ मां हे ना पी बु ले चहा पी मे ॥ पके  
 सेन पा चुरे हवी अग्नि त ले कौ जी ॥ पके



जाडुका सुनारे घीई सेर । मांहे ना पीये व  
छे मध सेर । मांहे ना पीये ॥ पछे कलकना  
पीये ते कही ये छीये ॥ बज बीजे तां ॥ २॥  
सुं वटा ॥ पीये रतां ॥ मरी तां ॥  
पर धारो तां ॥ चीत रो तां ॥ उप जो  
र तां ॥ पुस कर म लतां ॥ अज मो  
ही तां ॥ हलद रतां ॥ दारु हल रतां  
सुं वटा ॥ पदम कटां ॥ एल चीतां ॥  
तन रो ॥ तमा लपत्र तां ॥ गाजे



सरतों २॥ सता करी तों २॥ सुभा तों २॥  
 सा गोडी तों २॥ देवदार तों २॥ रेंछ तों २॥  
 २॥ वज्र तों २॥ रासना तों २॥ गोप रु.  
 तों २॥ मोय तों २॥ एत जा कुल कुलीण  
 वाटी भुको करी ये पाव मां मां पीये ॥ पछे पां  
 उंसे ॥ मंहे ना पी हला बी में ॥ पछे हे वु उ  
 तारी ये ॥ पछे चा पडा वा स ए मां घाली ये  
 पछे तों २॥ पने आं सरे पनरा पी ये ॥ वा य  
 रागने ताले ॥ सुलने ताले ३॥ सुसने ताले  
 आंतर गलने ताले ॥ करनी न ताले ॥



सनेरा ले वक्राशेनेरा ले ॥ गोला नेरा ले ॥  
 हेडक्रीनेरा ले ॥ डेहरीनेरा ले ॥ पीयानेरा ले  
 आफ्रानेरा ले ॥ नबुजाईनेरा ले ॥ क्रोटनेरा  
 ले ॥ क्रोटवलती होयते फूटे ॥ पका धातने  
 राखे ॥ संक्रावाउमेरा ले ॥ अग्नीमंदने  
 राखे ॥ माधुकलतु होयते हेनेरा ले ॥ अम  
 रोगनेरा ले ॥ सोध्यकलती होयते हेने  
 राखे ॥ शरीरने पुष्टि करे कलतरनेरा ले  
 गेटे वा सुखनेरा ले इति लक्षण पा कस

भाषा :



ਅਖੰ ਆਰੰਤੀ ਪਾਕੁ ਲੰਬੀ ਖੇਲੀਏ- ਆਰੰਤੀ ਨਾ  
 ਗੋਲਾ ਸੇਰ ੨ ਆਗਾ ਕੁਚਰੀਏ॥ ਪਚੇ ਭੁਖ  
 ਸੇਰ ੩੨ ਮਾਹੇ ਨਾ ਖੀ ਖੇਲੁ ਭੇਚ ਭਾਖੀਏ ਪਚੇ  
 ਜਾਝੁਧਾ ਧੁਤਾਰੇ ਧੀ ਆਰੰਤੀ ੨ ਮਾਹੇ ਨਾ ਖੀਏ  
 ਪਚੇ ਦਾਣਾ ਦਾਰ ਧਾਧੁ ਤਾਰੇ ਕੁਲਕੁ ਨਾ ਖੀਏ  
 ਨੇਕੁ ਹੀ ਖੇਲੀਏ॥ ਤਜਰੇ ਕੰ ੫ ਤਮਾਲਪ  
 ਚਰੇ ਕੰ ੫ ਟੰਗੀ ਟੰਗ ੫ ਨਾਗ ਕੇ ਸਰ ਟੰਗ  
 ੫ ਜਾਧਾ ਕੁਲ ਟੰਗ ੫ ਜਾਧੇ ਟੰਗ ੫ ਭਖ  
 ਗਰੇ ਕੰ ੫ ਅਕੁਲ ਕਰੇ ਟੰਗ ੫ ਖੇਲੁ ਭਾਖੀਏ



१५  
१५ चीत्तरोतंक्र ५ पीपेरतंक्र ५ वीपंकीम्  
लतंक्र ५ वीडंगतंक्र ५ अजमोदितंक्र ५ ता  
लीसपत्रतंक्र ५ वजतंक्र ५ हलदरतंक्र ५  
दारुहलदरतंक्र ५ शतावरीतंक्र ५ सु  
आतंक्र ५ जीस्तंक्र ५ काजुंजीरुतंक्र ५  
मज्जीवतंक्र ५ गोषरुतंक्र ५ रासनातं  
क्र ५ देवदारतंक्र ५ कलबीजतंक्र ५ सुं  
तंक्र ५ सागोडीतंक्र ५ पुसकरमज  
तंक्र ५ अमोहतंक्र ५ राउकतंक्र ५  
नगरतंक्र ५ शठीतंक्र ५ जोहतंक्र ५



नोबुलोकपु अंभकरोकपु-वैपुलोकपु  
 तरुजाकलकलेरिणीएगवारीमुक्रोक्रोरी  
 मोहनाषीयेपतेहजावीउत्तारीयेतं.  
 कपनेआसरेषवरवीये॥संचिवाने  
 ताले॥आगगलनेतालें॥कलेतरनेस  
 ले॥मोलातेतालें॥उदरवायनेतालें।  
 अगनीमंदनेतालें॥सुनीवायनेतालें  
 पतुनिवायनेतालें॥जोमपमेहनेतालें  
 हेउमीनेतालें पुदुरोभएनेतालें वी.  
 संप्रमेहनेतालें मायानीरोगनेतालें



बक्रारीने साते इति एरंडी पाकसमाप्तः

~~अथ कडा पाकसमाप्तः~~

अथरीगंली पाकली मते रीगली पंचां  
गसेर १२ पाणी सेर ३२ मां हेक वा चक्र रि  
मां हे हर डे पल १०० मुझी ये पछे चो ये मा  
गे पाणी रहतारे ३ तारी ये पछे ता डे माय  
तारे कलज ना की ये ते कही ये छी ये सुं च  
जं क ५ पी पेरं तो ४ मरी ता ५ त ज ता ५  
त ना पु ३ न सो ५ ए ज्वी ता ५ ना ग क  
सुर ते ५ ए ट जा क ल क मां हे ता वी ये ह ला



वीये पढे मध्वसेरः॥ मोहे ना पीउं नारीचे  
पढे चो प्रडावा साण मो मरी नुजीये दोऊ  
ने आ सरे पवरां वीये वायं नी उध सनेरा  
ले प्रीतनी उध सने रा ले॥ कफनी उध  
सने रा ले॥ कयने॥ हा ले पीन स रोग ने हा  
ले रीति रा पा क स मा प्रः



ਅਬੁ ਸੋ ਨਾਮ ਧੀ ਨਾਂ ਅਨੁ ਪਾ ਨੁ ਲੰਘਾ ਚੁ ॥  
 ਸੋ ਨਾਮ ਧੀ ਰੰਗ ੪. ਤੇ ਹੇ ਨੀ ਪਤੀ ਧੀ ੨॥  
 ਕਰੀਐ ॥ ਤੇ ਹੇ ਨੁ ਅਨੁ ਪਾ ਵ ॥ ਮਧ ਸਾਧੇ  
 ਧਾਧੁ ਤੋ ਈਝੀ ਕੁਲ ਵਾਧੇ १ ਧਾਂਤ ਸਾਧੇ  
 ਧਾਧੁ ਤੋ ਗਰਮੀ ਪੀਤ ਜਾਧ ॥ ਸਾਫੁ  
 ਰਸਾਧੇ ਧਾਧੁ ਤੋ ਐਗ ਕੁਲ ਧਾਧ ॥ ੩॥  
 ਵੀਜੋਰਾ ਸਾਧੇ ਧਾਧੁ ਤੋ ਮੁਖ ਕਾਗੇ ॥ ੪॥  
 ਦਰਾ ਧਨੀ ਫੁਲ ਸਾਧੇ ਧਾਧੁ ਤੋ ਧਰਤੀ



गया य॥ ५॥ गायंता सोपण साधि पा  
युतो घर डो ह्ये युतो जवान या य ६  
आमक्षानारस साधे पाय तो कफ  
जाया ॥ ७॥ काक्रेड नारस साधे पाय  
तो सोपड पती रहे ॥ ८॥ नजोड न  
रस साधे पाय तो कफ जावे ॥ ९॥  
अंगवज यायुं हाप गग रुत तारहे  
॥ १०॥ लीवनारस साधे पाय तो मेरे



१३  
दुषतुं रह ॥१०॥ श्रीं वा नारस साधे  
वायतोषो डुरोग जाय ॥११॥ गोष  
रु नारस साधे वायतोधातु पुष्टा  
य ॥१२॥ पुरा सानी अजना साधे वा  
यतो गो लो मती जाय ॥१३॥ छाली  
ना दुध साधे वायतो के डु डु वती रह  
॥१४॥ गा घना दुध साधे वायतो जी  
भवो बुडी सारी थाय ॥१५॥ अरु



को जाना नारस साये वायलो प्रम हजा  
 ये ॥ १५ ॥ अजमाना नारस साये वाय  
 तो हाय पग कल तारहे ॥ १६ ॥ अने  
 सर दीजाये ॥ १७ ॥ पीपेर नापाणी  
 साये वायलो मापुंड पतुरहे ॥ १८ ॥  
 लवंग नारस साये वायलो अस्त्री सा  
 ये पीत घाणी वाय ॥ १९ ॥ पतीरी नाडु  
 धसाये वायलो स्त्री सुं सनह पाय ॥ २० ॥



१४  
तलमोरससाधेवायतोसापउची  
षउतरे॥१०॥ डाडमनारससाधे  
वायतोहीकआवतीहोयतेरहे२  
सांडणीनादूधसाधेवायतीदसघ  
एजेरवाय॥११॥ एमीदीआव  
अनागुणलेप्पाके वडीएकवीसक  
रीनेएकवीसहाटासुधीवावीगुण  
वायसही॥



Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



५५  
मुं घसीनै लेष न कीजे तो वीछीनुं  
विषउतरे ॥१॥ समुझ फलवा सी  
पाणीनंगोउ नारससुं ना सदीजे  
तो मापुं डपतुं रहे ॥५॥ समुझ  
फलजी फलासुं ना सदीजे तो स  
नेपा न जाय ॥६॥ समुझ फलनी  
रगुंडी नारससुं अंजन कीजे तो  
फुले जाय ॥७॥ समुझ फलमी गते



लसुं अज न कीजे तो नेत्र रोग जाय ॥

८॥ समुद्र फल माल वी गो लसुं पा

यंतो मगी रोग वायु आवतुरहे ॥ ९॥

समुद्र फल भांगरा नारस सायेष

करावी येतो वेहे राह टले ॥ १०॥ स

मुद्र फल अज मोद सुं ना सदी जेतो

मापुडु मतुरहे ॥ ११॥ समुद्र फल

प्रांड सुं वा यतो धातु जातीरहे ॥ १२॥



१६

समुद्रफलत्रुणशुंषाईयेतोपेरं व  
 थाजायउषतरहे १३ समुद्रफल  
 अजमोदशुषाईयेतोमोहराविष  
 उत्तरे १४ समुद्रफलनीबुआशुं  
 वाईयेतोसलजाये १५ समुद्रफल  
 हस्तपणवजंशुमर्दनकीजेता  
 प्रस्वेदपीजाजाय १६ समुद्रफल  
 नीबुशुंषाईयेतो क म रा वा त जी



१०॥ १०॥ समुद्रफलपुष्पमुखायमेता  
 अतिसारजाय॥ १८ समुद्रफलली  
 कुनारसमुद्रमदिवकीजेतो कमलवा  
 तंजाय॥ १९ समुद्रफलनिरुं डी  
 मुखायतोपेटव्यपाजोय॥ २०॥  
 समुद्रफलहरदेवालीनाघतमुं डी  
 जेतो कमलवापुजाय॥ २१॥ समुद्र  
 फलश्रजापुनः मुखायतोपेटव्यपाजोय॥



७  
॥ जाये २१॥ समुद्रफल कालीछाती  
नामुत्र सुं अंजन की जीये तो छायाप  
उलजाये २२ समुद्रफल सुं लजव  
॥ सुं मात्रा मुत्र सुं लेपन की जे तो म  
लक शूल जाय २४ समुद्रफल अरी  
जनी काल गो मुत्र सुं सखीर स काली  
गले नासदी जे तो अंधा पो जाय २५  
समुद्रफल अज मो पी पे र दो प रां सु



चंसमात्रभाग पाउमुगोलादी १२

प्रभातेषाम्यतोअंधाहेरोजाय १६

समुद्रफलवृद्धीछातीनाइधंमुअं

जन्तकीजेतोआंषेतेजआवे २०

समुद्रफललवणघतंमुदीजेतो

समस्तांसेगजाय २८ इति समुद्र

फलकृजयसंस्तुति ॥



ਅਥਾਹੁਤਾਧਾਰਲੀਘੋਲੇ ਏਰੰਗੋਨਾਂਸੀ  
 ਜਸੇਰ ੧ ਗਾਥਨੁਮੁਤ੍ਰਸੇਰ ੨ ਤੇਸਾਂਹੇਪਾ  
 ਲੀਯੇਦੀਵਸ ੨ ਸੁਖੀਰਾਧੀਨੇਪਚੇਜਾਨੀ  
 ਯੇਤਾਰਪਚੀਯਾਨੀਯੇ ਪਚੇਗਾਮੁਨੇਰੰ  
 ਮੁਤ੍ਰਸੇਰ ੩ ਸਾਧੇਤਾਵਡੇਬਫਾਨੀਯੇ  
 ਗੋਮੁਤ੍ਰਸਸੇਤਾਰੇਤਨਾਰੀਯੇ ਸਰਸੀ  
 ਤਸੇਰ ੧ ਧਾਲੀਯੇ ਪਚੇਕੁਲਕੁਨਾਨੀ  
 ਯੇਲੇਕੁਲੀਯੇਯੇ ਹੰਗਟੇਕ ੨ ਸੁੰਦਰ



ਟੋਕ ੨ ਪੀਪੇਰ ਟੋਕ ੨ ਮਰੀ ਟੋਕ ੨ ਜੇਥ  
 ਨੀ ਟੋਕ ੨ ਡਾਡਮ ਸਾਰ ਟੋਕ ੨ ਚੰਨੀਕ  
 ਟੋਕ ੨ ਸਵੀ ਟੋਕ ੨ ਤੇਂਤ ਨੀਕ ਟੋਕ ੨  
 ਆਮ ਲਵੇਤ ਲ ਟੋਕ ੨ ਵੀਡ ਲਵ ਆ  
 ਟੋਕ ੫ ਕਾਚ ਲਵ ਆ ਟੋਕ ੫ ਲਿਖ ਆ  
 ਵਾਂਗ ਟੋਕ ੫ ਸੇਵ ਲ ਟੋਕ ੫ ਸਮੁਤ  
 ਲ ਵਾਗ ਟੋਕ ੫ ਜੇਥ ਪਾਰ ਟੋਕ ੫ ਨਵ  
 ਸਾਦਰ ਟੋਕ ੫ ਸੁਰੇ ਪਾਰ ਟੋਕ ੫ ਸਾ  
 ਜੀ ਪਾਰ ਟੋਕ ੫ ਟੇਕ ਆ ਪਾਰ ਟੋਕ ੫



११  
पीपली जुल टोंक ५ अज मोद टोंक ५  
जीरू टोंक ५ असा ली यो टोंक ५ हल  
दर टोंक ५ बाव डंग टोंक ५ नसातर  
गोंक ५ हर डे टोंक ५ केंपी लो टोंक ५  
सुवा खेर ॥ अज मो सेर ॥ सर्वे नाषी  
नेतार पछी ली बुनोर स सेर १ तेंदी  
नंस नए लगण पर देई ये छा पडे  
सुम्वी से पछे एरंटी धार जीपनी



तेही नखते रोके रने आसरे संचारे त  
कासरे सो रेख वरा वीये को मजगा  
व तथा वा गोव मंदो गि वे धुं ए  
गो लोपी यो पेट वि जार स र्व ना श  
कामे पादुमा रु ते जयुं इति श्री  
एरंडी वा ग से पूणि॥



अथ अंतालीया पाऊली प्येते  
अंतालीयो सेर १ या मनु डुध सेर १  
तेमो हेउ काली ये पीर करी ये क व र  
या यतारे छा यामो लुका बीये पंके  
सर्व कल कलेते कही ये छी ये हव  
दर पेसा २ भार का लुजी रूपैसा  
१ भार कर कंडी फुला वेली पेसा १ भार  
अज मोद पेसा १ भार सो हा मी पेसा



१भार कीचा छालपैसा १भार लोहर  
पैसा १भार मोयपैसा १भार खवंग  
पैसा १भार जायफनपैसा १भार  
जावंचीपैसा १भार उदकंलनीजड  
पैसा १भार केसरपैसा १भार कौरा  
सानीवजपैसा १भार अकलकरो  
पैसा १भार पापेरपैसा १भार मरीपै  
सा १भार एंजनससर्वपैसाभारने  
समारेलेची वालीअपडछाएकरी



३१  
ये पछे तो लीये ते वरा वरचीनी सा  
करवाटी ओषध करना पर्व। पुराण  
करवुंते पावुं रोग मात्र ने टाले । र  
गत पीत जाय विस्फोट कजाय । मू  
ल कर्म नुदरद जाय राज रोग जाय  
पथरी जाय मुख गंधी जाय वाशीला  
जाय कलेजा बंध पा तो होय तेहे  
ने कापे - अजीराण रोग जाय बंदा  
रोग जाय बवेसी रोग जाये



श्री ली लो र रोगं जाय ॥ श्री चंदी जर  
 ए जाय ॥ पांडुरोग जाय ॥ उधु स रोग  
 जाय ॥ शर जात ना रोग जाय ॥ ब्रु  
 ना रोग जाय ॥ ए दे वा प्र कार ना रोग  
 जाय ॥ लो क २ ने ॥ का तरे ॥ सु ॥ सु वा रे  
 ग जाय ॥ मा पा ली जर ए जाय ॥ हा ड ड  
 ट हो व त रोग जाय ॥ अ स्म ली वा पा फ  
 वा य तो ए ट का रोग जाय ॥ ग र मी वा य तो य  
 ई वा ॥ व ए सु य पा य ॥ र ति अ स्म ली वा य ॥

क त रोग



अथ विधि वैरजा की इंदु बोह जे गत्त से चैतै रज्ज के  
 धोय कर दो तजे चंभे चवाय तजे वैरजो लेर पावें रा  
 त सोधी सुकें १ बोहरी बोध अत्त जे चढावे नीचे  
 आचवा तय कायले मात्रा मासा ३ सा तम सा थं  
 वाय तो न पुंसक ता मिटे गुत्ता वसाय साय तो ज्ञा  
 त सक निटे सुरवंत साये वाय तो न ह मिटे पुष्प  
 ता होय दुधी साय वाय तो प्रमेह मिटे गुरु का  
 दुध साय तो निवला इ मिटे पुष्ट ता होय पात मे  
 वाय तो वादी पूर होय गा पाछी मे मय तो लोजा  
 के मिटे उटंग रासाये वाय तो नाम र्द मर दहो  
 य नीचूं ले वाय तो रूप हानी होय दिन २१ तब  
 य प्रमेह मिर्वस्त ता धातु क्षीण मिटे सुख वैजा



दादीजीजी

सोईसंमणीनाना ३

धोइकोइधसीकोयाको

बारि४.नोपंकरकरचाईपरपुटदे १४

प्रारना ३०-आवदे



सनाइंटं कदे बुजन दोटं कसहत सों पाय तो हं ही वल  
वंत होय सकर सों लाय तो पिसं जाय निश्रों सों लाय  
तो स्त्री संभोग करे गाय के माषन सो लाय ते गरमी जा  
ग पिड खरसो लाय तो दुधा लाजें दाष सो धोय तो  
लंबी दृष्टि होय तिल के तेल सों लाय ते सर्व बिभन  
रिजाय छोटी हरडे सो लाय तो दृष्टि ती गदला  
पानी सों लाय तो कान सुनै काला नंग त कारल  
सो लाय तो दर बुटाज अंत होय दित दृष्टि  
गी का हृष सो लाय तो दृष्टि घोडा का जोर होय  
रहा की भिंगनी सों लाय तो मुत्र पुल्लस होय  
अनार के रस सो लाय तो धाती दुष नाम कच  
सो लाय तो वाइ दुष जाय महुवा के रस सो  
लाय तो अष्ट गुन ते जी होय आदे के रस सो



स्वायत्तो ताप तेजरी जाय उटके इंसो साय तो व  
 वे न ले य जाय के घ त सो साय तो तों त लो वा व्य होय  
 किस प्र स सो साय तो बलें वत होय अ व लो के र स  
 सो साय तो जल धर मिटे पि ड स जर सो साय तो  
 मुख गंध जाय य लो म फं र सो साय तो आष ड  
 जाय गिर गुडी सो साय तो घाय पिं ड की जाय मि  
 नू के र स सो साय तो प्र ट हुं कं जाय मे ख त के  
 इ ल सो साय तो अ लो कै यु त होय व क र के इ  
 थ सो स्वाय तो क न र को ड स जाय अ न या इ  
 से साय तो सर दी जाय पी पर से स्वाय तो सिर का  
 दर द जाय लो ग सो स्वाय तो इ प्री के प्री त त  
 भूरा कु मूडा सो स्वाय तो अ ने ल जा व इ ति तं न  
 इ क ल्य द स मा प्र म



Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



श्लोकादिः से कं की तिल = गिरीपुराणी - विरहं  
 मीमांसा - अविद्या हलदी - अरुंदोली - सोवाकावी  
 ज - हात्पू - हाथीदांत काबुलदा - लौग १।  
 जावित्री २५ जायफल २५ दालचीनी २५ तर्ज -  
 मैदाल कडी - मांल कांगरी - समकुं कूट  
 कर वोडली बांधे ४ दिन से ती सेक मदि रा मे  
 तथा मे ५ का दुग्ध मे ४ दिन करे द्रव्य द्रव  
 होय १ अथवा १। जमने योग्य पुह कर मूरत व  
 रावर मदि रा मे ५ लैय कर नागर पात से कं क  
 पर बांधे क पडा कुपय तारत वेटे पाछे नु पाऽ होय  
 दिन ३ बांध कर गिरीफा घी लगखे त वल क स  
 क संत ही त व का ही नित्य त गावै -



Handwritten text in Gurmukhi script, likely a manuscript. The text is arranged in approximately 10 horizontal lines. The script is dark and somewhat faded, with some ink bleed-through visible from the reverse side of the page. The characters are well-defined but show signs of age and wear.



ਮਿਲਦੀਆਂ ਨੇ ਮਿਲਦੀਆਂ ਨੇ  
ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ  
ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ  
ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ  
ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ  
ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ  
ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ  
ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ  
ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ  
ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀ ਨੇ



Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org







ॐ श्री गुरुभ्यो नमः कतेत्राय भगवते विश्वरूपे सर्व  
गुणेश्वर्योपत्रे लोकाय गथायैवेलापप्रदाय नमः  
ॐ नमः श्रीगुरुभ्यो नमः नक्षत्रीवीजं नमस्कृत्य  
यत्रैकं तत्रोदितं सपक्वः स जालिकेरः कृ  
तं नोदितं जेहे चित्तमप्राप्तं प्राप्तिरतु पलातं  
समस्तं तां प्रत्यक्षः स्याद्विज्ञे  
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः स्ति मम मनीषिनि  
गुरुस्वतः त्रिस्तंभं नमस्कृत्य वाटं नमः









३  
न.क.ई.ने.ता.ले.॥ क.म.ला.ने.ता.ले.॥ क.ई.ने.  
ता.ले.॥ हर.को.रो.ग.ने.ता.ले.॥ इ.ति.हर.उ.प्रा.ज.लं.गं.



जीये ॥ तज टांऊ ५ तमात्र पत्र टांऊ ५  
 एलची टांऊ ५ तागंऊ सर टांऊ ५ घेर  
 सार टांऊ ५ वरासवाल १६ वंसलोचन  
 टांऊ ५ एटलोवांनोऊणी वाटी ऊपडछा  
 एऊरो मांहेसुकीये ॥ पछेहलावीउतारी  
 ये ॥ पछेचोपडावासाणं मांघालीसुकीये ॥  
 पछेटांऊशानेआसरेषवरावीये ॥ तपत  
 आवतीहोयतेहेनेटाले ॥ जीरणज्वर  
 होयतेहेनेटाले ॥ पीततावउध्रसनेटा  
 ले ॥ सुऊवानेटाले ॥ वातजेतनेटाले ॥

२ पाणी साधेनी साउ पुरजीणी वाटी ये ॥  
पछे लोटा नी बालणी वाहे काली गल्ली ये ।  
कुचाहर डेमां जा काटी नाषी ये ॥ पछे क  
हाया मां हे घांली ये ॥ चुले चटावी ये ॥  
पछे तले अंग पाजे एहे वो अंगी की जे ॥  
पछे जाटु पां यतारे घी ई सेर १ मां हे ना  
षी ये ॥ पछे गोख सेर २ मां हे मुकी ये ॥  
साकर सेर १ ॥ मुकी ये ॥ पछे मध सेर १ ॥  
मुकी ये ॥ पछे कलक मुकी ये ते कही ये



ਬਾਂਧੀਏ ਜਵਾਨੇਰ ॥ ਤੇ ਕੋਧਲੀ ਸਾਂਧਾ ਲੀਏ  
ਪੁੱਛੇ ਬਾਣੀ ਸੇਰ ॥ ੨੦ ॥ ਮੁਕੀਏ ॥ ਕੋਧਲੀ ਸਾਂ  
ਹੇਲ ਭੰਬ ਭੰਤੀ ਮੁਕੀਏ ॥ ਤੇ ਲੇ ਅਗਨੀ  
ਕੀ ਜੇ ਪੁੱਛੇ ਸੇਰ ५ ॥ ਪਾਣੀ ਰੇਹੇ ਤਾਰੇ  
ਉਤਾਰੀਏ ॥ ਪੁੱਛੇ ਕੋਧਲੀ ਸਾਂ ਹੇ ਕੀ ਕੀ ਭੀ  
ਪਾਣੀ ਗਲੀਏ ਕੁਚਾ ਕਾਢੀ ਸਾਂ ਥੀਏ ॥ ਪ  
ਉਹਰ ਡੇ ਸਾਂ ਥਾ ਜਵਾਨ ਕਾਢੀ ਨਾਥੀਏ ॥ ਪੁੱਛੇ  
ਹਰ ਡੇ ਕੀ ਲੀਏ ਸਾਂ ਹੇ ਥਾ ਕੁਲੀਏ ਕਾਢੀ  
ਨਾਥੀਏ ॥ ਪੁੱਛੇ ਪੈਂ ਹਰ ਡੇ ਪੈਂ ਲਾ ਕੁਵਾ ਧੁਨਾ

१ मधुप्राज्ञनी की धीनः ॥ अहरउ

प्राज्ञनी धीनः ॥ अघ मंजु वी ममेवा वीये ॥

ते कहिये छीये ॥ संघां क नी टों ५ दशम

लसर ॥ उकर मूल टों ५ शरी टों ५

धमा सो टों ५ कौचों टों ५ बलजीज.

हं ५ अघे डी टों ५ गंज पी पेर टों ५ ग

लो टों ५ सुंठ टों ५ पाठि टों ५ पी पली

मूल टों ५ चीनी छाल टों ५ रास ना टों

५ एट लों वानों नो क वा य करीये हरउ

सेर १ सोलः आणीये ॥ तेहरउ नीको पली





श्रीगणेशायनमः॥ श्रीकृष्णायनमः॥

अय नरसीहनेहेतानीहरमात्मानां

कीरतनलप्यांछे॥ ॥ रागअनादरी

॥ हरि लोककहेनरसैओखंपटवा

धृतीवातराज्ञाएजांणी॥ सेवकलेड

वामोकलोमंडलीके॥ रागपरारव

रदंसारंगपांणी॥ टेक॥ जोमांहारे

कपटनधीरे॥ कुरुणाकरासीरायसोला



हार

॥१॥

जस्वामी जमाहारी सुंदरी सहित रुं  
गांत करूं सदा ॥ माहारेहरणं प्रीत ता  
हारी ॥ रासोर वस रुं जो वाम लु सु जने  
नागर लोक पार वेड बोले ॥ की रत न  
नां सुकु सं फल क म द्या पति ॥ जो मे  
सहित महि शेष डोले ॥ तंत वी णार  
स स छरी शो सरा ॥ घरि पा ग्य स्रण  
कार बोले ॥ नर सैया चा चां श्री नी घंट ॥

दाता सदा सामलासमो वडकोर  
नहि जंतो दो ॥ १५ ॥ हयाकुंडक  
पदी खंपटी काहचो सदा पारखंडरु  
पनागरजात रायमंडली कमरुभ  
रएमओचरे सांभत्येसर वंस भाजवा  
त टेक हरिराष्ट्रारणांगता अमो  
हु अणहुता दांमोदरताहारी मेवात  
जांणी मीगानी मात्वाकुंघातीक



जर हार

॥३॥

री॥बोलेमंडलीककरवाणी॥३॥जो  
भांगीभोगलहरितुनेहारआपसे॥  
तोमुजनेदोषनथीमैहेता॥आप  
खवावीनादहिछुटोनागरा॥ताहारे  
सबलदामोदररायेप्रीता॥३॥माट्ये  
तीलकपारखंडुरचेसदा॥आजपडो  
जीवजंजातमांतो॥सणेमंडलीक  
धरतसुणजागरा॥शुःजानेसभाह

मदफरगातो ३॥ ॥ पद॥ रागागाडी  
माइमाहारेहरिगावांनीटेवपडी॥  
महाराणाथजीनेनांमुकुयेकचडी  
वेधीखुमनअलगुत्तांरहे॥ माहारेहरी  
सुप्रीतजडी॥ टेक॥ आंरवा दिवस मोरुं  
रखीरवपीआंबो॥ मापनीयेनांमुकुपं  
परि॥ मेजांणुएवेरणमाहारी॥ मापनी  
नोहेगोरणी॥ ॥ जेपीनामानुछाप॥



नृसिंहा

॥३॥

रुछाही आपुं कबी रजी नेअवी  
चलवांणीरे ॥ एहवुजोईनेरोसेंफ  
रंगो सुहे छबीलो जी मुकसें गा  
णीरे ॥ २ ॥ धन्य यमुनां नट ॥ धन्य व्र  
दावन धन्य राधारु क मणी रंगीरे  
धन्य नरसै आनी जी भलडी ॥ जे जपे  
छबीला जीनी वांणीरे ॥ ३ ॥ कीरन न  
॥ ताहारे कोण छे छबीला ने कोण ॥ ३ ॥

कोण छे नाथ॥ कोणे दीधो ता सारे  
मस्त कं हाथ॥ हला तुं विषयरस मां  
फा जी रस्यो॥ हरी मलवानो मारग की  
हो॥ १॥ लंपट पणु तुं सुं की दे॥ अण जो  
टपी अध्यातम ग्रहे॥ २॥ शुद्ध वैराग्य पंथ  
जो मुखे॥ तो गर्भ वासनो फेरो टले॥ ३॥  
आसर वसन्पासि के हे छे तुं न्हें॥ पछे क  
ही शंका रो नहि बुन्हे॥ ४॥ श्रीम पणोनर  
सेवा कां फेरी॥ गुरु निपा गयो लंज आवे कर्म॥



नृसिंहा

॥४॥

जे नर रछा इश्वर गाय ॥ ते कामिनी के  
ठनां मुके हाथ ॥ ६ ॥ एवै सवता कपां हां  
थीलही एणी पेरे फीमे पुछु सह ॥ ७ ॥  
॥ कीरत न ॥ ८ ॥ ॥ हारे भाइ  
कणिण कारज सुने भाषी ये दीधु ॥ ९ ॥  
सावी गयो हूं वन मोझार ॥ उग्रत पव  
न मां हे कीधो ॥ दया करी सुने त्रिपुर ॥ १० ॥  
रगराटे का ॥ गोपेश्वरे वा हूं नर ॥ ११ ॥ या जे  
मागे ते स्त्रा पुतुने ॥ १२ ॥ म ॥ १३ ॥ भु जे तम ॥ १४ ॥

नेवाहालुं॥ कृपाकरिते आपो मुन्हे॥१॥

मोली चक्रवर्तुष्टं यथा॥ ततक्षण

मान

अवीग्रहोहाथा॥ सोलसहस्रगोपीसं

गरमतां रांसदेवाडी ज्वाहां वैकुण्ठा

था॥ श्रीवृषभां ननुतानंदलाव

खिसमांणीसंरुहसाथा॥ परमदयाल

कृपांलवरसुंदर॥ दीपधरा व्योमाहारे

हाथा॥ तदेतकरी मुन्हे देखादीधीमा

हारो कृपां गालाप्पमी नरतार॥ नर



नृसिंह

॥५॥

सेयातुंलीलागाजे। जेकीधीहल्ला  
अवतार॥४॥ कीरतन॥५॥ ॥आगे  
कलीजुगनालोकविषय। तेमांहेसाग  
रातुंविषयागाय। हल्लेकीधुंतेआप  
णकमकीजे। तेअमुमोटावेकुंठराये  
टेक। हल्लेजोनेगोवरधनधरियो। ते  
आपणेकमधराय। हल्लेजोनेकात्वा  
नागनाथो। तेआपणेकममथाए॥  
हल्लेजोनेरवानलपी। तेआपणे

कमपीवाए॥ कल्लेजलमांपरं वत ता  
रां॥ ते आपणे कमंतराए॥ थासंन्या  
सी॥ जिरहे काशी॥ भलो होय तो नीगु  
पाग्रहे॥ सीम सणें कांभुलो नर सैया  
आंभुमी॥ चिने सुपरामजी कहे॥ ३॥  
सी॥ जनि॥ ६॥ ॥ हारे साई गिरटा धैसं  
तपारे रामजी कही शु॥ हवडां कत्या नो  
माहारे खपनथी॥ छे ल छं बीलो ने  
डोगालो॥ मा॥ शरंगो बीली यामांगीरु



नृसिंह

॥६॥

लपती॥ टेक॥ हलायडमुकीनेडाळे  
कोणवल्गे॥ कुरमुकीनेकुक्कसकोण  
खाए॥ रंगीलाछुबीलाछोगालने  
मुंकी॥ ताहारामभगवांनीयानेकोण  
गाय॥ १॥ माहारेकृष्णजीमातनेकृष्ण  
जीतात॥ सगांसहोदरकृष्णजीसहाए  
कोपेमुन्हेनंदोकोएमुन्हेवंदो॥ मेप्री  
कृष्णजीमुक्काकामजाए॥ २॥ सनकस  
नंदनमुनीजनवंदन॥ तेभाकारमाहारे॥

हृदेरहे **ग**ीरिवरधारी कुंजविहारी  
भक्तवत्सलव्रीदवीठलवहे **॥३॥** स  
रणब्रह्मसदाहितकारी **॥** दोहखुंदा  
सतगुरुनवासहे **॥** सणेनरसेयोसांभ  
लभुरफीमडा **॥** तुंगजनाकरिसुरवे  
सुखजीकेहे **॥४॥** **कीर्तनि ॥ ३॥ ॥ राम**  
**नर ॥** जुयोरेंरामजीनेनंदेनागारे  
एहंनेअध्यातमग्रहानोआचरो **॥** देक  
**॥** रामजीबीनाकोपांनवजदंतारि **॥**



नृसिंह

॥७॥

जोनेमन्त्रविचारीरे॥ चरणरजनापस  
एथकीजोनीउचरीगोतमनारीरे॥  
सागरमांहेजेणेशाख्यातारी॥ धीमर  
नेवैकुंठआपुरे॥ चिरंजीवविष्णु  
पाकीधोरावणनुकुलउध्यापुरे॥  
रामजीनेजांणेशंकरजेहेवा॥ जेतार  
कमन्त्रनुहारदलखेरे॥ भणैभीमका  
भुलोनरसेया॥ तुंगजनाकरिनेमुष  
रामजीकहरे॥ ४॥ कीर्तन॥ ८॥ हला

॥७॥

रेहरे वेशी राम दासीया॥ ते तो देखी रा  
म उपासीया॥ टेक॥ हट्यारामजी तासे व  
कहोये समदृष्टी॥ ते कोहे ने कहै कोइ मा  
तुरे॥ राम हक लमोहे अंतर सो नो॥ ए ज्ञान  
ताहो रुसर बेनातुरे॥ १॥ हट्या प्ररण जल  
छबी लोमाहारो॥ जेणो गो कुल माहा॥  
गोचारी रे॥ ब्रह्मा इन्द्र नारद कुतशान॥ दे  
वग चास बहारी रे॥ २॥ जेणो कंस कुल नि  
कंदन कीधु॥ उदारा जणना॥ देवासी शर



हार नृ०

॥८॥

राजा विभीषण उग्रसेन थाप्यो ॥ ये अ  
द्य अंतजगदीशरे ॥ ३ ॥ वेरागी बणोराम  
जीमले नहि ज्वांहां लग्गी नां आवे वि  
वेकरे ॥ भुरफी मडा एम कहे नरसेयो ॥  
राम कलखे ऊंकरे ॥ ४ ॥ कीर्तन १ ॥  
राग काहेरो ॥ नरसिंहाश्रम कहें संन्या  
सी ॥ पंचाशषटम समे की धी कांक्षी ॥  
आतम अप्पासी रूंध्रयो ॥ तो हेनां म  
ल्या मुजने अवीनास ॥ टेक ॥ बोहो तेर

षट्मासरुं प्रयागमां नाह्यो॥ सवा  
सोमपुंरं जीसेवुरे॥ तोहेमेस्वपंनेह  
रिनव्यदीगा॥ तोतुन्हे दरशनकेहेवुरे॥  
सतषट्मासनीमीषारणसेवु॥ पुह  
कररह्योपंचासरे॥ केदारगढकामरु  
प्तमीप्तमीआंव्यो॥ तोहेनांमल्याअवी  
नशारे॥ ॥ हवडोसरवउफरासंन्यासी  
यांसेताहारीपततोमाशेषरी॥ नर  
सिहाममकहे॥ सैयांबेरी॥ रेहरीतु



नर. हा.

॥ ७ ॥

हारी हरी ॥ कीर्तन ॥ १० ॥ हलातुरे  
हेरे भगु आल वंल व कर तो वारु छु  
आं हां थो उठी जा ॥ ब्रथा वचन ता हां  
नहि चाखे ॥ तुं टाठी बोली ने भागरणा  
टेक ॥ हला वैल वं ना भोग ते न थी दी ठा  
त्ये दाटा डुष ना वेगारे ॥ भावे ये टका  
पाविणी विणी एपे टा वड ना टे टारि  
जो तुं हेत वां छे पोतानु ॥ तो सुं र र शाम  
छ बीलो गा ॥ भगो वर सै यो सां भल जे

वेर

॥ १ ॥

गीडा मात्ना पेहेरी नेवै सव था ॥ २० ॥

॥ कीर्तन ॥ २१ ॥ माहारांड नो मुन्हें मात्ना

धरावें ॥ जो तां कपटी सुधा सह ॥ चिरं

ती लक ने छापांचो दे ॥ जातु बालन मा

गण चो नही ॥ टेक ॥ हव डोंमी ता स्रं

काढी देखाडुं ॥ जो उं अष्टां दश पुराण

रें ॥ की दा पुस्तक मां हे तन पुछे एह बुं ॥

मात्ना पेहेरे मतने सारंग पांणारे ॥ न तुं ये

गेहे तनो नेरा जागे हे नो ॥ दोहनों को हो

ने नथी कानरे ॥ मरने या युगं कहे नर



नरसै हा

॥१०॥

या रेहेवादेताहारीचुंदरशांम॥२॥ कीत

न॥२॥ वटलोनागरनरसैयोजेणेचो

टुआहिरडानुषाधुरे॥अवररससरुं

ढोलीढोलीदीधो॥अमरसायणदा

धुरे॥टेक॥ब्रह्माउपावेदवषाणो॥लागा

जोगेश्वरतालीरे॥शुकादीकनेसपने

नांआवे॥तेरासरमेवनमालीरे॥दुहा

लाजीनेषांध्यकामलीहाथलाइडी

गोधेननरावाजयेरे॥नरसैयानागर

नेसाथेतेडीनेमं॥साडीनेषायेरे॥१०॥

की लनि॥ २५॥ जो ब्राह्मण तो वैष्णव क  
चा॥ वैष्णव तो सुब्राह्मण नाम॥ मात्वा  
ती लक पापंडर ची नो॥ ते वण साड सा  
रुगांम॥ टेक॥ धूरत पणो त्ये सर वंधु ता  
रु सोरग मांस रू वैष्णव की धा॥ नट या  
नी पेर करि नेना गरा श्री रामी दर नै वै  
डुपुणा दी धुरे॥ २६॥ पार वंडे पेर बासां  
बं रूपे रे॥ आज मंडली के सा हो हा  
य॥ मणो मी मतो लुटो नर से या॥ जो  
गर जना करी नो को लो र पुना या॥



नरः ५

॥२२॥

कीर्त्तन ॥ २५ ॥ अदेषा लो क ते अटक  
ल बोले वाहा ला जी नो मर म नां जां  
णो जाये रे ॥ जे हनु चित्त जे सुं बाधु ते  
हने ते हविना क्षणु नां रे हे वाय रे ॥ टेक ॥  
बीजा पदारथ सरं व को जां णो ॥ प्रीत भ  
ली मन मां हे रे ॥ स्त्रे ही पुरुष नु कारण  
मो दु ॥ ते हनी आं ष डी अलग्ग जणाय  
रे ॥ साम ली यो मा हारे ह दे स मां णो ॥ ते  
मु वं डा लो क शुं जां णो रे ॥ भणो नर सै रा  
सा भव्य भुर फी गं डा तुं फो क ट सां ने त ॥ णो रे ॥

कीर्तन॥२५॥ ॥ राग असावरी॥ गोविं  
दाश्रम कहै नरसैया॥ अमो प्रीत प्रीछी  
ताहारी॥ महावायक उपदेशी॥ ना तु  
ने नहि मले देव मुरारी॥ टेक॥ प्रीपात  
यइ मेसवस्व मुकु आहोग जोग मेसाधो  
री॥ अमो दंड कामंडल नाधारी॥ तमो मा  
लाधारी॥ क्यम वाधारे॥ मेहे ताजी नाचे  
कुहे नेता तब जांडे॥ परम पद नय लहा  
येरे॥ उदर भर बाषाण उदर बां मलीन  
कने अंदेषाक हिमरे॥ मेहे ताजी न



नर. हर.

॥२२॥

लामुकीनेसंन्यासीघायो॥अमोआपु  
ॐकाररो॥गोविंदाश्रमकहेनरसेया  
मागोपणनावेनहिआपेहाररे॥३॥  
कीर्त्तन॥१६॥ ॥रागमारु॥ श्रीपातने  
सिद्धिनांहोयेरें॥वैलवचीनातरोना  
कोयरे॥टेक॥कोहोजीकीहोसंन्यासी  
शरणजषाम्योदंडवेषजटाधारीरे॥  
तमोवैलवनीनंदाकरोभुंडाओनरक  
नाअंधीकोरीरे॥१॥तमारीअस्त्रीमरे  
वेषावाटलेत्याहेतमोअयुआपेहेरोरे॥२॥

प्र। तपसक्तिवैराग्यविनोफुकोकोन  
जबेहेरोरे॥ तमाराॐ कारनुकरो  
अथाणुं माहारे ब्रंदावनचात्नोरे॥ प  
पोनरसैयोमेहेलोइडकमेडलमाहा  
रीपुवेतालवजाडोरे॥ च॥ की॥ तनि॥ ॐ॥  
मेहेत्त॥ बांकीबांणीरेमेहेताताहांर  
बांकीबांणीरे॥ ॐ॥ कारपिनेतालवषा  
णीरे॥ टेकाहलातुरगकरीकरीकी  
रतनकरां॥ वलीकोटहलाबांरेउतपा  
सबातसरवश्रीप॥ ज॥ तेहनेतुंवा



जोर हार

॥१३॥

दस लाख बार ॥१॥ तुं निगुणि ब्रह्म राम  
ने मुकी ॥ श्रु विषय गाय रे ॥ नाचे ब्रा  
ह्मण भ्रष्ट यया श्रु सुतो वैकुंठ राये रे ॥  
हला तुं नंद करंछा परम हंसनी ॥ को  
णो की धोछे गेहे लोरे ॥ श्री मभणो मज्जा  
रामने मुक्य कल छ दी लोरे ॥ ३ ॥ को  
तने ॥ १८ ॥ हरी ने कप ममुकी ये रे ॥ जे अ  
धक्षणा मुक्यो नव जाये रे ॥ स्रक्ष मरुपी  
सांम लीयो ॥ ते माहा ॥ देसां रखो समा  
रे ॥ टेक ॥ अमा च भव छु छे ल छ दी ॥ १३ ॥

लाजी ना॥ आशुसम प्रेगो सांइरे  
ब्रंदावनमां कल छे वी ले॥ दीधुगोप  
आंने सांइरो॥ १॥ नरसेयो हरविने हरि  
गुणगा से एमी मडोरी से मरसेरे॥ आ  
पणवे डूने वाद मंडाणी॥ नां जाणी ये  
को तरसेरे॥ २॥ हरिरसनो स्वा एशं कर  
जाणो॥ वली गोपिये ली धो छे मागीरे  
मांगूद सनकादि क शुक्र जाणो॥ त्याह  
नरसेयो नागरादि पागीरे॥ ३॥ ली ली  
॥ ४॥ राव नामान रा॥ वै लखं वी नात्मने



नथीपांमवु॥ अकलसरूपभगवो नरे  
समरांदर्शनिकांहाथी आपे वीना आ  
तमज्ञानरे॥ टेक॥ विरागसुनकादिकभ  
गवे ध्रुव अमरीषप्रल्हादरे॥ तेहेवीर  
तत्पाहारी कांहाथी नागरा॥ तेमिथ्याक  
रवोवादरे॥ वैराग्यं जो नीहवो॥ तेपाम्पो  
देवमोरारीरे॥ ताहारिपिरे कोणोगासरे  
उघाडोसणगाररे॥ लंपटपणोतुंलन  
हीपांमां॥ राटमीछुं लागीरे॥ सहचर  
नेदस्वामीजी केहे॥ उ नरसेया॥

रागीरे॥ ३॥ कीर्तन॥ २०॥ हारेभाईमुंड  
मुंडाविनेटोपिघाले॥ अमोनव्यथंईये  
वैरागीरे॥ अमोवैसवछछेलछबिला  
ना॥ माहारेहरिशुतांतोलागीरे॥ टेक  
अहममताभागीतेवैरागी॥ जेहनीअन  
हृदसिंगीबोलेरे॥ वैषधरिनेवैषकरेते  
वैरागीअसुरनेतोलेरे॥ अमोसंसारव  
हेकारसरवेसान्वविये॥ विकारपीवेग  
कारहियेरे॥ सरवचतसमहंदलेरंव



१५५  
वीए॥ तेहने वैल्लवक हीयेरो॥ ५॥ अभी  
माने तम्या सुकत पोहूँ तेषी तरंगन थी  
लागोरे॥ फणो तरसैयो विराग मुकी ने पे  
देरे भांच वरुन नो वागोरे॥ ३॥ कीर्तन॥ ३॥  
गगन सोरठ॥ रेहे रेगो हेताना गरा॥ ये बडो न  
कीजे वादरे॥ वैल्लवनाम के हे वरावीये  
तो बढवानो सो संवाहीरे॥ टेक॥ हरिजन  
ने वक बुकशु॥ जे लषमी वरमां लीनरे  
पांच मुषे पंचवरे॥ सजीने संगरो गेक॥

कोपी नरो॥१॥ शुक्रदेव व्यास इव सा.  
सरषाकर ताभगु आनो अंगिकारें  
नहु आनी पेरे नागरा तुंकरे छे सणगार  
रे॥२॥ कृष्ण स्वामी सरवेनो छे। बली भगत  
जननो विसरां मरे। माधव आश्रम कांहे  
नरसैया॥ नथी पीन के सवने रामरी॥३॥  
॥ कीर्तनि॥२॥ रागासंधु डो कडपा॥  
कोपावा कोरने विन बुनी ठला। कमला  
नाथं मन शुं विचारो। रुप ही द्या जने का  
न॥३॥ गद्ग हरि। हुष। जे मेह वां दस ता हारि



टेक ॥ प्रगटथायेनामभरतलमांभुधरा  
 जेनरसैयानाथएहवुबरदकाहावो ॥  
 सेवकसंकष्टालीयेत्रिकमातमोना  
 थपुलाजकाहावो ॥ लोकदेविसरूक  
 उतंगकरेवुं मंडलीकमदपरचुरवो  
 ले ॥ नरसैयाचास्वामीहमयेकआपीए  
 जोगीयांचाबलशांतहोये ॥ कीर्तन ॥  
 ॥२३॥ ॥ रागभारु ॥ हरितुन्हेहारनहीआ  
 पेरे ॥ हरितुन्हेहारनहिआपेरे ॥ तुन्हेसं  
 न्यासीशानदेरे ॥ टेक ॥ हत्तापुरा ॥

सुखो भमेरे ॥ जीव जंजा खेवाखोरे ॥ घण  
दिवस छांनोदं भवत्वाचो ॥ आजतु न्हें कं  
वेसाखोरे ॥ प्रीतपर ब्रह्मपरमेश्वरनी  
रखो विश्वप्रकाशीरे ॥ तेसाथे ताहारें मैत्र  
कशीरे रषेवाहि जांतो नाना ॥ २॥ तं राम  
नी निंदा करेरे ॥ गोहे लागर वजराखेरे ॥  
सीम भणो तोहार जडे ॥ जो मुखवरामजी  
सांखेरे ॥ ३॥ कीर्तन ॥ २४॥ हलासु न्हें आ  
पनां लागेरे ॥ हाखो डगिआ आगेरे ॥ दे  
खोरे ॥ जमरी पसाथे हच करो गांतु



७७॥

ओयइनेगागोरे॥ फगतहेतसुदश  
नमुकु॥ केहेवोरुषिजीनागोरे॥ शफरी  
रुषीजीत्यांहांशरणजआव्यो॥ हरिज  
नमोटाकीधारे॥ अमरीषकारणकृष्ण  
जीए॥ दशवारजनमलीधारे॥ राजांम  
डलीकगेहेलोथयो॥ सिद्धजोगीनांजा  
पोरे॥ नरसैयोकेहेनिरफलनांजासो  
मेकसवषाणोरे॥ ३॥ कीर्तने॥ २॥ ह  
लैभुकेहारविचारेजडशोरे॥ हलातनु  
हारविचारेजडशोरे॥ हलातनु

पडशेरे॥ टेक॥ हलातुपाघडी बांधे  
खुणाहरी॥ श्रीणा ज्ञां मापटकारे॥ अ  
स्त्री साहासु जोई आरव्यनचावे वली  
करेहायनालं टकारे॥ हलानगरलो  
कतुन्हेमोहिरया॥ तुलं पटवेषदं भंधा  
शेरे॥ कीहेरे कंठ बांहधरी नौ॥ क्यमंगचा  
वीपरनारिरे॥ हेलां हारमगाबोमेहे  
तांजी॥ क्याहां छंदे वमोरांरी रो॥ मंडुली  
कंकहेवेघडीनुसाह॥ प्रछेनां विस  
मजरे॥ कीर्तन॥ २॥ रामनरजीयो॥



॥ १८ ॥

हं तो त्याहारे फरो से वलु धोरे ॥ माहा  
रासा मलीया साथे छु सुधोरे ॥ टेक  
मंडली कसुजने मार सेरे ॥ त्पारे तमो गो  
कुल मांकमरे हेवा सेरे ॥ माहारे तो कां  
इजां ननथीरे ॥ ताहारु भगत वलु लव  
रद जाशेरे ॥ १ ॥ प्रह्लादथी हिरण्यकश्य  
पहारो ॥ अंबरीषथी बसिरे ॥ येक  
रमंडली कंथी नरसेयाथी मंडली कहा  
रे ॥ ताहारि सुते छे आसरे ॥ संन्यासी  
वैरागी विसमुचोले ॥ एषणा ॥ १ ॥

सणो नरसै योहार आपा माहाय बाहा  
ला ॥ माहारे हावु मलो छे छे करे ॥ ४ ॥  
तुनि ॥ ७ ॥ ॥ राग सामेरी ॥ रेहे रे गुणा वं  
ताना गरा ॥ हरि सुनकी जी एवा दरे रहे  
हार आपे नहि ते सुख तपो ऊं सर बेरे  
टेक ॥ हठे दान वपद वी पांमं तेर हे थोडा  
काले रे तप बले वर दोन आपे पछे उ  
थापे गोपाल रे ॥ १ ॥ हिरण्य पाक रूप परा  
वण हगी गया बली गयो तेउ यो धिनरे  
अकल सरूप सु अदक कसी तुमारे



नीममतामन्त्रे॥३॥कमवाहालो जी  
लज्जाराषेताहारी॥तेहरिभजाप्यमत्प  
मरे॥अटपटीगतगोपालजीनीएमकरे  
अदभुतआश्रमरे॥कीर्तन॥२८॥  
रागसिंधुदोंकेंडुषा॥हरितमोदयासील  
ऊदीनदामोदरा॥जुओदिनानाथहृदेवि  
चारी॥चरणनेशरणआ॥व्योहृपानाथ  
जी॥करोगोपालसंभालमाहारी॥देक॥  
देवनादेवतुंदेवकीबालका॥भगतपा  
लकएहवुवरस्ताहारे॥एहवुजांभीजे॥

घटे ते की जी ये त्रिक मा अवर पुरुष  
को नहि जमा हारे ॥ १ ॥ माम की नां मे तमो  
तन तारी तमो विना कोण उगारे मोरार  
दुए मा वे तमो पुत मा तारि ॥ २ ॥ जम हू त ना  
तमो संग निवारी ॥ ३ ॥ जो मा हारा कर मने  
मा दसो सुदरा तो पति तपां वन तां हारु  
वरद जासे ॥ छंड तां नहि छुटो रे सरपां  
गता ॥ छंड सो तो उप हास यावो ॥ ४ ॥ दुप  
दी नां तमो अंवरी पूरी चां ॥ ५ ॥ थां पियो  
अव अवी चल आगे ॥ एह बुजां पीने



नरसैयोनांमताहारुजपे राष्यचरणे  
रषेत्ताजलागे ४॥ किन्नरि॥ २८॥ राग  
सामरी॥ गरवनांकी जेगेहे लडा सुंगर  
वेग्यांनगमाओरे सुक्ततलज्जाषोदि  
हववडे आगविनेशु कामकमायोरे टेक  
नेत्रलतां अंधशुंथयो जोनेमनसुवि  
चारिरे मोटुफारणमायातपुमुक्याश  
मविसारि॥ १॥ शानेअरथेअहांअग्नियो  
अगविनेकामशुकीधुरे॥ अमृतरससुकी  
ने शुंहलहलपीधु॥ अणचितवुंवा

लियेनहि॥ हरेखुंयु छै शुन्य अवि  
त्य आश्रम एम कहो करो मेहेताजी सु  
न्य॥ ॥ कीर्त्तन॥ ॥ ३॥ राग सिंधु डाक डप  
येक अचनी धरा॥ देवदामोदर कहुंगु  
पातोरडा कवण बाणी॥ शकरसारद ना  
रदनिगम हरि॥ अविगतगत कयमं जाये  
जाणी॥ टेक॥ विश्वपावक तुं सात्य कर  
माहरी॥ टाट्य फेर राग भवि सकेरा बार  
ण दोश्री हरि दास जाणी॥ कही आनस  
मरय को नहि अनेरा॥ १॥ रागुण सार



हर

॥२५॥

धर बुंदर शुभमंती ॥ विनति जुगपति  
सुणारे स्वांमी ॥ संसार पार उतारी कम  
लापति गोविंद गोपा लगरू डगांमी ॥  
नंदनानंद मुकुंद मुरली धरा गोकुल  
चंद गोविंद गोपा ल ॥ सार कर माहरी  
दीन जांणी करि नर सै यो रे क ता रूं ज बा  
ल ॥ श्री ॥ ३॥ श्री रघुनंद मणिमं  
द हूं मां नवी ॥ ए हवी दानवी बुद्ध टां क्षो  
ज देवा ॥ मन ना स्वादने वाद करि बोली  
से श्री ली ये रां मजी तो रि सेवा टेक ॥ अंक ॥ २१ ॥

तु अविनाश प्रकाश बुद्धि की जीए  
दी जीये दरसन रां मरुडा ॥ ताहार में  
मनो हट विश्वास आव्या नथी तेनरी  
सब जल मध्य बुडा ॥ ५ ॥ अमरीष विषी  
षण परम विचक्षण ॥ अंजली सुत बुल  
सी जदास ॥ फीम भणो ते जो राम भोले  
गा ॥ वामी यो ते माताग फवास ॥ २ ॥ की  
तुमि ॥ ३२ ॥ ॥ सगत चारि एतु हलका  
हावां सदा ॥ आज माग मुकी कांरे नर  
नाज कात्ता ॥ नंद वै संचर दा मांने ॥



नर. दू. २५

आपीयो॥ आजकपणथयोकारे  
॥ १॥ डाटा॥ टेक॥ हरिमाहारोहाथीची  
जेणेकाट्नीनागनाथियो॥ अघउतर  
डीयोदांणघाटे॥ तेवखताहारुक्कां  
हांगसुंनार्थजी॥ नाशीगयोसुंमंडली  
कमठे॥ नरकासुरसुसुपाखजरासं  
धतेंजीतीओ॥ अनंतजोधानातेबंधछो  
ड्या॥ प्रखंववगासुरतरणतेंताडियो  
केशीकंसनातेकंठमोड्या॥ सावेकुप्रा  
वेजेणेतुंउप्रासीयो॥ तेजराबीग१॥ वी॥

सनां आवेवततो॥ फणोनरसेयतसे  
तुमाधवा॥ राष्मराष्म बालकनेवापव  
ततो॥ ॥ कीर्तन॥ ३३॥ ॥ रागमारु॥ ॥

मेहेताजीरामनुलीजेनांमतेणेभबछु  
टीयेरे॥ येहस्यथीनहिसरेकाममिथ्या  
तालकुटीयेरे॥ टेक॥ नीमलनांमरामैया  
जीनु॥ पीतांपातराजायेरे॥ रामजीनुनांमनां  
मदेबेलीधु॥ तोमोईजीवाडीगायरे॥  
राजीबलोचनहलाहलंमोचनंदीनो



॥२३॥  
ना दयालरे ॥ रामजी ने मुकी शृंग्रह  
रखा छो गोविंद गोपाल ते डा लरे ॥ २ ॥ सी  
ता स्वांमी अंतरयामी जे हने नां मे भव ज  
ल निस्ताररे ॥ रघुनाथ आश्रम कहे नर से  
यां मग परामजी पास हाररे ॥ ३ ॥ कीर्तन ॥  
॥ ३४ ॥ ॥ ताहारो रे हे वादे भगु आरामा ते  
हनुमरती वेलां छे कामा ॥ अमी नव्य जा  
नीयेरे ॥ टेक ॥ ज्पारे केश पत्ताये ने निरग  
लाये ॥ ज्पारे श्रवणो सां भल तारहि येरे ॥

लखुतावाधेश्वाननीपेरे। त्पारेताहांरा  
रांमजीनेकहिपेरे॥ हखातुंजममनो  
जोगीकुटुंबवियोगी। षोहिबेगोधणा  
न्याणीरे। रंगीलोलेबिलो। छोगादोगी  
वालो। तेनरसेयानागंरनी। बाणीरे॥  
॥ कीर्तन॥ ३५॥ हारेहेलांहारमगाव्यरे  
नगरातुंहेलांहारमगाव्यरे॥ ताहारेसा  
मलीयोसुताजगाव्यरे॥ टेक॥ कोधिप्र  
संबबोलेपरफांन॥ मेहेताजीउतारोन  
नी॥ वाहकरंतं। धरुडि। वार। लंगट



नागरनां आव्याहार॥३॥तुं संतथ योतु  
हेस रूको नभे॥तुं परनारि शुं रंग रमे॥३  
वैलवथ इवण साडुगांम॥हावेन थीना  
गनु काम॥४॥आज मंडली क कोप्पोमे  
हेराणां मीथ मृत्यु आवुं निवणि॥५॥तो  
कह सारथ हवडाथ शो॥लं पट नागर  
ताहारोज सजसे॥६॥प्रलंब प्रधान करे  
बहुरीस॥वाहाणु वाशोत्पारे छे इसेसी  
स॥७॥की लंब॥३६॥॥राग काफ़ी॥साम  
ली यां शुं शुतो सो इतांणी॥मेतो ताह

दुष्मण कांश्निथी जों एणी रे॥ टेक॥ समो  
वड साथे शोफ़ी ये रे॥ दो अवात जुगदी  
श॥ की डि उपर को हा डो मुजरं क उपर  
शीरी स॥ १॥ ब्रंदावन प्रमसी तल छाया  
यमुनां नट समी रे॥ राध काजी ताहा  
रां चरण तलां से घणु उंघो शाम शरी रे॥  
ज्यम ज्यगपो प्रदी मे का जे हा घी नी  
की घिवाहार रे॥ जरा संध ने जी तिनु का  
व्या॥ राजा की सहजार रे॥ ३॥ मां नी तिने  
ते लारो॥ पार जग तनु सांडो॥ एक



नरसै  
॥२५॥

नरसै याने हार आपतां तु न्है की हो चढ  
से पाडुरे ॥ ४ ॥ ता हारा वसु देव नंद तो मो ते  
सु आछे ॥ सुज उपर शो क्रोध रे ॥ फणो नर  
सै यो वा हांण बाशो जाग्य जाग्य मा हारा  
ज्या दबा जा सुरे ॥ ५ ॥ कीर्तन ॥ ३७ ॥ ॥ ता हा  
रे वे रे सुतारे सामली यो ॥ ता हारे वे रे सुतारे  
टेक ॥ ज्यां हां विषेत्यां हां निस्तु नहि रे एम  
बोले वेद पुराणारे ॥ राम तपजी जेणे विष  
य गायो ॥ ते पुरुष शको पाशाणारे ॥ १ ॥  
सुखवा दिक संकर नारद ॥ १ ॥

नकसुजातरे॥ गोरषदत्तवसिहेगाथ  
तेनिर्मलश्रीरघुनाथरो॥ नारायणने  
निद्रानपीरो॥ नरसेयाकरूपविचाररे  
मसादशरि॥ कहेत्यारेहरिसूतो ज्यारे  
तेगायोसणगाररे॥ ॐ ॥ कीर्तन ॥ ३ = ॥ ॥  
रागासिंधु उक्त उपा॥ देवाभक्तिवाहाली  
तुन्हेभक्तिवाहाली॥ वैकुण्ठपीभरनि  
आस्योरेचाहली॥ अखिलरूपताहा  
रुदेवनेदुहभगोपियां चंगलेनीत्य



॥ २६ ॥

घाटी। टेक। देवाश्रीमुखे कहो जेऊं  
मक्तनो आधीन हउ माहारादासने प्र  
पानीपेरे राषु सरवने सारकरे तुह जह  
सज। आज म्हा हार के म प्रिय यु लो वों  
मद की मद की जगो रा घेर उपनो  
कस कुलनाशनाथो जे काली। सगत  
हेत अमरी पंडगा रियो अवतार ली धा  
ते वाली वाली। षं भ मां हेव शा तमो  
मक्तने कारणो दास प्रल्हादने अपने

शंनद्रो धु॥ नरसैया च्या स्वांमी जग  
तव छल सदा हारने कां ते असुर क  
धु॥ ३॥ कीर्तन॥ ३॥ ॥ राग सामरी॥  
हठली धे अरथ नां थाये॥ गेहनाह  
ठली धे अरथ नां थाये॥ आठमा  
सवापे यो टटन वटने॥ प्रणामे घपांण  
नां पाये रो॥ टेका॥ साचि से वा विना  
गम मत्ने नहि षोटी तं मारी प्रीतरे



आफणी ये हरिहार आपरो जो होय  
जोग संधान नीरित रो ॥ वायु नुरोधन  
शरिर नुरोधन घट घट मंदिर निरपो  
रे ॥ फेर नजार थी के हे नर सेया तुं जो  
गीथा अमसर पोरे ॥ २ ॥ कीर्तन ॥ ४० ॥  
॥ राग मारु ॥ हला अमो भोगी रे अमो  
भोगी रे ॥ जे हनु प्रण पाप हसे तेथा  
से ज न मनो भोगी रे ॥ टेका जटाव धारे ॥ ३ ॥

जुगदी समले तो वडवै कुंठ चाले  
डंड धरे दी नो नाथ मले तो अंधल  
कुटीया साखे रे ॥ १ ॥ न समची ले नग  
वांन मले तो खर छार मंगले टेरे ॥ २ ॥ डंड  
तकरे दी नो नाथ मले तो सरप भोम  
ने फोटे रे ॥ ३ ॥ जंगोटा क छोटा कथा गा  
र डी ओ शंख सिंगी फुको रे ॥ ४ ॥ न पीन  
र सै यो प्री तन जांणो हरी नी तो मिथ्य  
वद बुमुको रे ॥ ५ ॥ की न ॥ ६ ॥ रातर हा



थांडीरे। नागरा रातरही थोडीरे सने  
हदी गोता हारा सामळी यानो तुं से ना  
आवो प्रो डीरे। टेक। सोर वस ऊको  
जोग मृत्यो कार अरथे सां से धोरे। ह  
जी आशा तु न्हे हार तण। छे। कोणगे  
हे लोकी धोरे। पाग्य लाग्य सरख  
सी पातां नो। मुक्य मात्ना उतारी रे।  
तो मृत्यु धक्की उगरो नर सेया। एम  
कहे श्री। धर। बल चारी रे। की ननु।

राग वेराडी॥ जीवनि साटेरे माटा मोहा  
री जीवने साटेरे॥ शुभयुं नृ सुपां म्याम  
टेरे॥ टेक॥ उग्र पुन्रहित माटा पांशु  
ते आज मुक्त॥ कर्म जाये मे॥ नरसे  
ओ माटा उतारे॥ तो जगत प्रलेखाये रे  
नवसें हे नवां पुअवली चाटो॥ समुद्र  
साते सुकेरे॥ मेरु चढे पश्चिमेर विप्रग  
टे॥ तो हे नरसेयो माटानां मुकेरे॥  
पोजोगां सरवे रे स॥ पणामो॥ ना



रुसिभा  
री पूरता लव जा डोरे ॥ मणे नर से यो

जोग धरिने ॥ कां मानव जनम वण सा

डोरे ॥ श्री चरित ॥ ४३ ॥ ॥ माला मन न

राषी ॥ मरे ता जी माला म तूरी राषोरे

तुलसी का ए मा भार घणो ॥ छे गले थों गुं

छे लां काढी नां पोरे ॥ टक ॥ जस ती लक

धरो ललाट पर मन आनंद पमा डोरे ॥

सो हं ब्रह्म ने चो गगा यो ॥ अनहर ता ल

जा डोरे ॥ आत्म विचार निना अ ॥ प २९ ॥

रेनाहि॥ दुखसमलंबोरामरे॥ विश्वेश्वर  
आश्रमकहेनरसैया॥ लुदानुनयीका  
मरो॥ ॥ कीरतना॥ ॥ वैल्लवण  
मांभारजोगडा, छिछणोरो॥ मनुमाहि  
लेहबुरीनुनामजेहोयेगुंगंजारे॥ टेका  
अमोबीरलावैल्लवजना॥ मगटहरिगुण  
गाइयेरे॥ अमोपीजीयेहरिरसपांन॥  
साहामांनेपाइयेरे॥ ॥ हलाचोरीनो  
लेमातलजेपुयोकाजीहरे॥ अमोनाच



नृ  
॥३०॥

कीजेकीत्तन॥ लजातजीएरे॥२॥ आ  
गलनीसरदुसरीआण॥ परे पोंषा  
रीएरे॥ नात्यकुललोकाचारा॥ सरव  
नीसेरियेरे॥३॥ नथीजोमोव्यापीक  
कुस॥ आंअफटकारीएरे॥ नथीत्यागी  
तुन्हेश्रीपातप्रेमकटारीघोरे॥४॥ लट  
कालोछवीलोनाथ॥ रंगसरफणीयेरे  
न॥ तेसोकहेसंडळीकरायनेचणवत  
॥५॥ कीत्तन॥ ॥६॥ रंगन

॥३०॥

राजाकोप्पो आंप्प चढावीरे वातक  
रतारै वातयई गाढीरे ॥ टेक ॥ षडग  
काढीनेरेकोप्पो. भूपातरें ॥ कोरे चत  
यो बोलेमुख आदरें ॥ १ ॥ वरताजा  
रे. राजपमारांणीरे ॥ सभामध्य आंयारें  
बोलेमुख बांणीरे ॥ रीसनांकी जेरे पु  
त्रविचारीएरें ॥ नगतने ब्राह्मण तेहने  
कपममारीएरें ॥ रामरमनां जोणेरें वैल  
पंथनारे ॥ नेरसे सोचाह ॥ २ ॥



नरिः

॥३१॥

हरिजनपी डतारें घणुपी डारहरा  
मेहेताजी नेमना वारे कुरबी नत  
कर ॥ ५ ॥ मंडली क जो वारे हठ मुकुं  
नही ॥ फगत जी उरें रजनी थो डीरही ॥  
हरी जमसाथें रें हो डकी जैनहि ॥ हरिज  
नसमो वड को आवेनहि ॥ ७ ॥ कीत  
न ॥ ४६ ॥ ॥ राग सिंधु डो क डपा ॥ देवा  
हमची वार कपम वेद न पडैला ॥ तुम  
जपुला ॥ मकम को सरा गइला ॥ टक

॥३१॥

ध्रुव अमरीष प्रल्हाद विष्णु वृषाणां  
माच्यो हाय तुमहु धपेईला ॥ टेक ॥ अ  
सुरमांहे कबीर ते ओधारो नामानुलाप  
रुआप्पुछाही ॥ जय देवने परमावती  
आपी रवेनांगरने जातोवाही ॥ अमो  
षत्य भक्ततां तमोषत्य भक्तसो ॥ गोकु  
लमांरहि क्यम सकशो ॥ तमोराधिका  
जेंसंग ब्रह्म वनरमतां ॥ अमोकी नाविना  
दते क्यम करशो ॥ २ ॥ जोरनासंड ली



नृसिंहः  
॥३२॥

कसुजनेमारसे॥ तोचपटी एकधूल  
पं॥ जाईजाशे॥ कीर्त्तनकर तां कहे शें  
नरसेयोमारीयो॥ भगतवहुल ताहा  
रुवरइजाशे॥ ॥ कीर्त्तन॥ ४७॥ ॥ रागमं॥

५॥ सुकोली धीवातमेहेताजी सुकोली  
धीवात॥ कश्यपसुत उदयाचल उद  
ओ हवडां थयोपर भात॥ टेक॥ नृत्यक  
री करिचरण जथाकां॥ तालबजाडी

हाथरे॥ गुणगुणगुण॥ स्वरथयो जाडो॥ ॥३२॥

नां आद्योगो कुत्वनो नाथं रं ॥ सोर  
सह मे आगना आयो ॥ आप आपणों घे  
रजा एरे ॥ वास्तु रेवा श्रम के हे तो जी वो  
नर से या त्ना गो सी पात ने पाय रे ॥ १ ॥ की  
र्त्तन ॥ ४८ ॥ नो हे रे पाषंडा ॥ नगु या नो हे रे  
पाषंडा ॥ हर आप्या वी नानर से या ने  
कम उगे सुर मे रु डंडा ॥ टेक ॥ नो ओ सर  
हं कीर्त्तन कर तो जो भागी पड़े ब्रलांड  
रे ॥ हरि गुणंग सां स्वर मा हारो विसे तो



नर

॥३॥

जीकाकरुषैशतषड॥५॥ छबीलाजी  
नेमुकीकममनेनमु॥तेपेपाडुपीडरे  
फणेनरसैयोहवडांहारसुगाहुंमुका  
बुतमारोदुंदरे॥कीर्तन॥४९॥ रागसी  
धुडोकडपा॥ लंपटीकपटीसीवातकु  
डीकरेबोल्पबिचारीविवेकमेहेता॥  
षटशास्त्रचारवेदपरनांजाणेताहा  
रेसबद्वदामोदररायप्रीता॥टेक॥सुर  
तवरुभूरदुसुंजोचरेवागशआपदा

॥३॥

वी क्यमवैसवथर्यै नां रि नोत्पमा  
अधी कमटकाकरे येणी पेरे सामलाच  
रण जइये ॥ हलामनमती अती घणी  
सुंदर के ला अती घणी रामरसायण  
जुगाधणी जफाहाये ॥ फणों फी मनु सांभें  
वनरसेया ॥ तुजवा लने लो कमा कोण  
लावे ॥ की लनि ॥ ५० ॥ ॥ हला लंपटी  
कपटी ते जनमनी जुगे सरा ॥ नेदामोद  
रायने शरण लाव्यो ॥ ही नने ही नचरण



नरः

॥३६॥

टतेयाडीचो जेहरीजनथीडुरकाहा  
व्यो॥टेक॥हलाअसत्यअन्यारितेवो  
लफांषेकसा कोणधरमेहीबोलेमूढ  
मातो॥तेहरीजनथीरंकसुगोफरेकुबु  
धविषेनेरंगरातो॥१॥हरिजनसाथेहोड  
होसिकरांजोयेतुंभीमडाप्रीतमाहारी  
फणोनरसैयोहरिहारमुनेआपसेपछे  
कोणकुबुधिप्रीतताहारी॥२॥कीतनि॥  
॥३॥ श्रीरघुवीरधरणीधरासुपकरा

३४॥

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



नर. हां ७

॥ ३५ ॥

अधुवि अनंतां न ता हा रु मन चो हो दी  
स भ मे ॥ पर ब्र ल नी प्री त तुं क्य म जां णे  
प्री त वि णा प्र र व रे भु र भ र मे फ रे ॥ ए ह अ  
ज्ञां न तुं क्य म आं णे ॥ टे का ॥ वि श्व क ला  
व्या प कं ह रि स द ॥ ते र घु प ती ने तु ज जां  
॥ वे द ने ती क हे ॥ ना र द सु नि न व्य त्न हे  
ते ह रि गो पि का प्रे म मां णे ॥ श्री रा म र  
घु वि र ध रा धी र धा रि स द ॥ द श र थ सु त  
र घु वी र का हा वे ॥ सर व थ ॥ अ त्न गो र  
गे नी त सु न म स द ॥ ते घ ट घ ट मां ह रि

॥ ३५ ॥

क्यम आवे॥२॥ हला अल बुद्धि औ  
अरथ ब्रथा करे हरि जनवी नाह  
रिहाथ नावे॥ सपी नरसेव्यो असतन  
हि ओचरु॥ हला दीन ये गुण तुं क्यम  
गाए॥ कीर्तनि॥ ५३॥ रांगमारा॥ सुक  
लीधी वातमे हेताजी मुकोलीधी वांत  
सेतो फोक टकरवी आस॥ पारभागी  
गधारे॥ टेक॥ सनेहत मारो सरवेदी  
गे॥ उगेनेवा हाणु वायुरे॥ प्रवण अ  
पवित्र थंया अम्हारा तमो सण गार



नरः शारङ्ग

॥३६॥

हृत्सहस्रगायोरं ॥ शरवोटेपाश्ये भी  
ता चठेनहि जुगी प्रीतनव्यहोयरे ॥  
गोविन्दमन्त्रे जो नाचे कुदे ॥ तो शरस्त्रप  
पो नहि कोयरे ॥ घुघरा छोडो नेपाल  
वओढो जोडो वेह्ये हाथरे ॥ विश्वं प  
रमम केहे तो जीवो नरसैया जो जागी  
कहोर घुनाथरे ॥ ३॥ कीर्तन ॥ ५४ ॥ ॥  
हारे माहारो हरि नहि जाये हाडरे ॥ आवी  
उपारही छै कं माडरे ॥ भोग स्वप्नांगसे  
रे ॥ टेक ॥ ज्पां हो विसवां सत्पा हो विश्वं पर

३६

हरा जननी प्रीतनां होये रवीटी र वैल  
वमारगमांगो थां रवाये तमसरषा जोग  
लख कोटी रे १ नाच्या ब्रह्म नाच्या नार  
द नाच्या नीगमच्या रे त्रास्त्र तमाय  
वांधी राषो हरं जी आपसें हार रे २  
हवडां सांकलव छुटी नेता त्नां चुटे म  
धुरामां जमकी धुरे सणे नरसे यो हर  
इस्त नदी जे ज्यमदेव की नेदी धुरे ३  
को लीन ॥ ५५ ॥ रागा धन्यासी ॥ सन्यासी  
सर देमली ने वेता सो कंरवा विचार रे



नर. शूर

३९

दामोदर रायना के वसा थे तांणी बांधी

७ छे हार जी टेका मंडली कने सीषा

मणदी धी नर से याने बिहा वोरें पडग जी

काढी ने रायजी रहो उफो बेडी पाग्य

पेहेरानो जी पडग काढी ने रायथ

यो उफो तारे रांणी ये सा ह्या हाथरे

ब्राह्मण ने वली भग्न हरिनो दुपाय

वैकुंठ नाथरे जे पुरुष शुभवां छे पडे

तानु ले पा दश तंजवां अपत्न दणजी

पर प्रव्य पर नदा पर नारी नां कर वावव

नपरी लोपजी॥३॥ कुंडी साधन हत  
नांरमबुहरी जनशुनकरबोकोपज  
अस्त्रीनीसीषामणारायेनांमानी त  
वारां बोढ्यांमातजी॥४॥ धीकरेकुर  
धीककुलताहांसुधी कंताहारोतात  
जी॥ आधनआचारधीकंताहारोदी  
नदयाधीकारजी॥५॥ बलगुणरूपवि  
द्वधीकंताहारंधी कंधी कधनभंड  
रजी॥ गयुरेराज्यकयऊकंस्वगाहंर  
नरसेयानेनांलेडरे॥६॥ मातावचन



नर-हो-न

॥३८॥

लोपिनेवाट्यो॥ करिहरिजननीकेडरे ७  
त्पारे श्रीधरसंडितेराजावारोशोअर  
येआयुधलीधुजी॥ येहनीपुत्रीयेपरी  
झाकीधी॥ एहनेहरियेमोसालुकीधु  
जी॥ ८॥ तोहेपंडितनुकहूंसव्यमानुआ  
व्योसफामोशारजी॥ मेहेताजीहारमगा  
वीअमारोषडंगकादुवाहारजी॥ मे  
हेताजीयेपुत्रीतेडावी॥ विषमवेलाजो  
इजी॥ श्रीदामोदरअमोतम्योशरणग  
त॥ तमविनाअवरनहि कोयेजी॥ १०॥ ३८॥

॥ कीर्तन ॥ ५६ ॥ ॥ माता धसी सन्यासि  
आत्मा ॥ ज्वांहां रू तोरा जन्म जी ॥ दो ब्रह्मा  
माता कुपर सां फलो ॥ आवडु शुं अज्ञान  
रे ॥ २ ॥ माता रोस मननां धर सो ॥ जु ओचात  
विमांसी रे ॥ बल चारी के डे म्पई लांगा ॥  
तेह वासर वसं न्यासी जी ॥ ३ ॥ माता तेह वा  
पी मडो मुजं ने प्रे रे छे ॥ कर्म की जी येवली  
तेह जी ॥ प्रलंब अध्यान को पेच डो छे ॥ ते  
हनी दुजी देह जी ॥ ४ ॥ सोर वसू की जो  
काम ल्यो छे ॥ सहने गमती बा नं जी ॥ सह



नरः हार

॥३८॥

चरः स्वामीजी केहे छे नरसै येमांडी  
छे विख्यातजी ॥४॥ साहां नेक उतगनाग  
रकरे छे वाये चंगमृदंगनेता लजी ॥ न  
गरभ्रष्टकरे छे माहार ॥ सद्बोले छे  
वाणी आलजी ॥५॥ बलतामातायेणी  
पैरे बोल्यां दुष्टलोकताहारी पासेरे ॥ तुं  
मूरखवैल्लवने दु भवे छे राजपताहारु  
सरवेजाशेरे ॥६॥ धीकतां हाराहस्ती पो  
डा ॥ धीकताहारो भंडारजी ॥ फटमूरख  
ताहारु नूरखनां जो उंछपनो तुने जहं

॥३८॥

कारजी॥७॥मिथ्याताहारांदांनभसंघ  
लांमिथ्यामेंतुजमायेजी॥पृथ्वीप्रलै  
जायेरेपापीजोवैल्लवजनहुफाएजी॥  
श्रीधरपंडितनेतेडीनेपुछो॥मिथ्याए  
हनोरुआरजी॥एसमोवडकोएवारुन  
यी॥आपणोरांजधारजी॥८॥कीर्तनि॥९॥  
रामआसावरि॥श्रीधरपंडिततेडावीया  
मंडुलीकेतेणीवाररे॥माहारुमनभ्रष्ट  
यउंकोणपेरेमुन्हेकोहोतेविस्ताररे  
देव॥पंडितवत्सताओवर॥तमोसांभ



नर. ह.

॥४५॥

लोरे आनरे ॥ असं त्यरुं नहि ओचरु  
दारद बुतु स्तेजी जज्ञां नरो ॥ १ ॥ एनागरे ल  
जा लोपिनथी ॥ वाये चंगमृदंगने ताखरे  
येणे जगर भ्रष्ट करुं नथी ॥ गायले गोवि  
दना गुण रसाखरे ॥ २ ॥ लकमुद्रा शोभ  
तां ॥ जेहने कंठ तुलसिमाखरे ॥ विचित्रवे  
स्त्रव वेश सुंदर ॥ दीसं तो दयाखरे ॥ ३ ॥ रा  
यजी मुख विचारी ने बोलीए ॥ हरिं ज  
न साधो होडरे ॥ नरसै पावै लवने ॥ ४ ॥

वो छो॥ तमने मोटी लागी पोडे स्थाये  
कमुखे कथा हूं सी कऊ नेहने श्री दामो  
दर सुंप्रीतरे॥ पंडित कहे राय सांभलो  
नी पनुइहां विपरितरे॥ ५॥ की॥ ५॥  
राय प्रतिपंडित ओं चरे॥ तं मोचुणा के  
रो अपराधरे॥ जे पुरुष शुभ बांछे पोता  
नु॥ तेह कप मउ वेषे साधरे॥ टेक॥ ये कवा  
रूप हास एहने करं॥ नागर लोक मह  
लंडरे॥ तीरथ नासी घेरमी कदा नरसे  
जो दरे पां पंडरे॥ प्रणाम करी ने मे होता



नर-हाः

४१॥

जीने रुपैयां आप्पासे हे सातरे दार  
कामां हुंडी सकारि सामन्ती ये श्री वै  
कुंठ नाथरे ॥ नर सी हमे हे ते मन विचा  
हुं ॥ नगरे करुं उपहासरे ॥ सामन्त सा  
वरदपाल जो ॥ हुंडी लंघित मदासरे ॥  
तीरथवासी चाल्पा द्वार को मन करे  
विचाररे ॥ एचरित्र धरत तणु ॥ एणो धन  
हरु निरधाररे ॥ सामन्त साथ ईहारे  
पधाश ॥ हुंडी सकारि माहाराजरे ॥ भग  
त वहुल भगवान जीये ॥ राषि से हेताना ॥

४१॥

लाजरो॥ ५॥ वली मां हामे रू ए ह पुत्री  
नुकीधु॥ कुअर वारि जे हनु नां मरे त्रणप  
सहस्र नागर दोले मत्या जुनोगठ ज्य  
हांगा मरे॥ ६॥ लषमी नारायणो लज्जाराष  
नागरस भामो साररे॥ ७॥ अ बर रिसव  
सो नैये॥ हरषियो सव परिवाररे॥ ८॥ धरंत  
लोक पाषंड जो वामत्या त्यां हा अनेकरे  
अंत्रक्षर हिने माहामे रू ए पर ब्रह्म  
मी विवेकरे॥ ९॥ वली वेहे वारि एघ गु व  
गो ओ॥ १०॥ लमे दे लुनी ररे हरिनाजन



नर. हा. १४

॥ ४२ ॥

सीतलदातेदातेनहि शरिररे ॥ ९० ॥  
त्याहातात्मसावीनरसेये ॥ आत्माप्यो  
मेघमल्हारो ॥ चैत्रशुद्धादशीयेमेघ  
आवीयोतेणीवाररे ॥ ९१ ॥ एहेवाएवैल्लव  
कंहियेसदासाफलोरायजीवातरे ॥  
मूरखमंत्रिणीमंडोतेहेवासरवसीपात  
रो ॥ ९२ ॥ तमोकडुमारुं करो ॥ करो नरसे  
यानेप्रणामरे ॥ श्रीधरपंडितओचरे ॥  
जीसरोतमारांकामरे ॥ ९३ ॥ कीर्तन ॥ ५ ॥  
रागद्वगंधार ॥ ५ ॥ वली श्रीधरपंडित

॥ ४२ ॥

कहे सांभल राये माहारि तब क  
था कहु माहि माया ॥ १ ॥ ज्यारे वात अवं  
स्ता माहारि हती ॥ त्यारे मुने ब्रह्म हत्या  
लागी अण लुती ॥ २ ॥ बल ता अमो मोटा  
यया ॥ काशी नगर मा भण चागया ॥ ३ ॥  
वेद धनी मुखे ओचरे ॥ त्यारे ब्रह्म हत्या पा  
कार जकरे ॥ ४ ॥ ऊं अष्टा दश जाण पुराण  
असत्य ऊं नहि बोलुं निरवाण ॥ ५ ॥ पं  
चास कोटि नी प्रदक्षणा करी ॥ मे अंष्टा  
गजोगे आराध्या हरि ॥ ६ ॥ मे माहारु



नर. हार

॥ ४३ ॥

क. ग. ने. की. री. स. मे. अ. ती. रु. प्र. क. र. चो. वि.  
स. आ. तो. हे. ब्र. ह. त्पा. मा. हा. री. न. व्प. ट. व्.  
क्ष. ण. क्ष. ण. दे. ह. डी. मा. हा. रि. व्. व्. ॥ प. वा. त.  
ज. ग. न. अ. जा. मे. ध. ज. करी. मे. अ. ए. मा. हा. र.  
न. आ. प्पा. मे. न. ध. री. ॥ २ ॥ वी. ए. वि. द्या. रू. पा.  
ठे. म. णी. मे. दे. ह. द. म. न. की. धो. अ. ति. घ. णो.  
॥ १ ॥ तो. हे. ब्र. ह. त्पा. मा. ह्स्वरि. न. व्प. ट. व्. ॥  
क्ष. ण. क्ष. ण. दे. ह. डी. मा. हा. रि. व्. व्. ॥ १ ॥ ए. क.  
वा. र. जु. ना. ग. ड. मो. सार. ॥ रू. अ. र. ध. नी. शा.  
ये. आ. व्यो. मे. हे. ता. ने. वार. ॥ २ ॥ मे. म. न्. सा. वा.

॥ ४३ ॥

कर्मणा करी॥ नरसैया नीक थाने व  
पोधरी॥ ॐ मेये धन्य वेस्स द जांणी ॐ  
चरी॥ माहारी ब्रह्महत्या तत क्षण उत्तरी  
२४॥ कीर्तन॥ ६०॥ राग असावरी॥ पेंडि  
तनी कथा सांभली ने राग्ये विचारु मन्त्र  
फगत जनना साक्षी सदा समरथ जुग  
जीवन्तरे॥ टेक॥ मेमा तुं वचन मां तु न ह  
न बलाये करि वरूपे ररो॥ साय स ह म  
लो जु न्दो॥ मीम विरे उं पजा वु धी ररे॥



नर. हा. १५

॥४४॥

सेनक वार वामो कलारायजी अमा  
रेनथीकांर कामरे प्रलंब प्रधानने  
कलारायजी येनांलेशो एहनु नामरे  
रीसकरिनेराय ओचरा जायो आपणे  
सरूपेरे अमोसंवाद सानेक संवैस  
वसाथेवेरे रीसेवक कहेपर धानने  
तमनेरायकरे छेरीसरे मेहेताजीने  
घेरमोकलो नहिकर कोप करशे  
गदाशारे ॥४॥ सीपात सन्यासि सलूमलया  
शोविचार वोभमरे सरवमलीनेमो

४४

लामुकुंदत्पांहां अश्रमरे कोनित

॥६१॥ ॥ रागदेवगांधार ॥ रजनसिध

लीवहिगइ ॥ एहनोदामोदरतोआव्यो

नहि ॥ मंडलीकेनागरउपरकरिदया ॥

अमोसंत्यासीसुंअमंथारखा ॥ पतुवेल

वनुउपरकरेश ॥ संसारसागरतेणोक

योधरेश ॥ ॥ षटदरशाननाधरमवहि

गया ॥ येवडांवैलवसाचायया ॥ ३॥

मुन्हेंआवडेअएदशपुराण ॥ असए

नहिवोखुनिवांणि ॥ ॥ मुन्हेंआवडे



नर ह३७

॥४५॥

रेवेदास लधरम नोजाणु भेद ॥५॥  
साढात्रणकोडमेकी धांवत ॥ माहारु  
रुदेछे परमपवित्र ॥६॥ साढात्रणकोड  
तीरय आव्योफरी ॥ सुहे सिद्ध वाचाआ  
यीछे हरि ॥७॥ तुहे अमो कहूं मंडलीक  
राजा ॥ आज अमारि जाय छे लाजा ॥ मा  
गे भोग लदामो दरराय ॥ नरसैयानेक  
रेहार पसाय ॥८॥ जो दामो दर कहूं नस  
करे ॥ तो नरसैयो मा ला कहूं ना धरे ॥९॥  
अमारु कहूं नहि करे नरेश ॥ तो तुहे

॥४५॥

बाली असम करे ॥ ११ ॥

॥ राग मेवा डो ॥ राजा को पड़े रहा वे मुने नदी

काई दोसरे ग्या न मुका बोरे मेहे ताजी ने

मंडली के धरो मन रोसुरे टेक म दगल

हस्ती मगावी यो रे काई मुका बांवा जी

चरे ॥ वेडी माग्य पे हेरा बी ये रे या का व

रण करि बहू नृत्परे ॥ मन संग थर

रे सर वे मान नी रे जे करति रू ती गां न

सोर वस रु ए जी वामं लुं रे लज्ज

खे प्र ॥ रावानं रे मेहे ताजी ये पुन



नर. हार.

॥३॥४६

ते ~~वै~~ विपरित वेला जो रे **दु** अ  
रवार रे सास रे पधार जो माहारे आवे  
का एम हो रे **३॥ कीर्तन ॥ ६३॥** सास  
रीये पधारो रे माहारि कुरी **सास रे प**  
**धार जो** विपरित वेद न जे आपणे ते  
सर वे विसार जो रे **टेक ॥** छेपी हरत मा  
रुहुं कडुरे **छे गो कुल मां हे प रि वार रे**  
**फर शो रु द या फाट ते रे** नथी को ये अं  
**न न टो हो नार रे ॥** माहारे निधन न प  
**दंतु का प डी रे** तमो काई न पां म्यां सु

खरो॥ नवोरनात्यनांगरतंप॥ राखाम  
वांमदिधां दुषरे॥ तमो मनो की जेर  
माहारतातजी राषोनायजी सुनेहरे  
सारघणी की धी ले साम लेरो॥ आजक  
मदेशो लबी लो लेहरो॥ जेणे माहाम  
रुसुजने करू॥ राषि दुष्ट सप्तामां ला ज  
रो॥ हुंडी ने सकारिरो॥ एणे साम ले॥ तेहा  
र आपरो माहाराजरो॥ सासरे जरि ने  
रुसुकरू॥ ज्यारे रुता सां रंग पांणी रे  
ज्यारे मंडीली कलमने मार सरो॥



नर हा १०

(४९)

निम्नो ॥ अशा प्राणारे ॥ ५ ॥ की त्वनि ॥ ६ ॥

आधाररु तो रे हरि मुन्दे ताहारो रे ॥ अ

नो अबला उबलनारी रे ॥ प्रीत डी नि

रुती रे पेला भक्तणी ॥ ते क्यम मेहे लांसा

र विसारी रे ॥ टेक ॥ पटकुल छुप दी नांत मा

परियां रे ॥ राषि दुष्ट सभामां लाज रे ॥ श्री

नजाणी ने रे प्रभु जी दया करो ॥ मेहे ताज

ने मुका वो माहाराज रे ॥ ५ ॥ ग्राह्य क

गज मुका वीर्यो रे ॥ वाहारे धाया ॥ ३ ॥ पु

र चरण रे ॥ दासनां दी हल रे सही न

(४९)

वंसकोरे॥ तमो श्रु सुता सा मल्लवरेणारे  
 ३॥ स्तोत्र वस हूये हसा वायुरे हार न घणी  
 लगाडी वाररे॥ अमो हल वापडा श्रु हरे वे  
 भरो॥ वारु नांकी धुनंद कुमाररे॥ गुण  
 दासं भारी मेरे रही नव्य संकुने॥ ये कलंडा  
 श्रु कर शोरंग विलासरे॥ दीन जाणी नेरे  
 प्रभु जो दया करो॥ प्ररो अमो अलख जाहे  
 रि आसरे॥ ४॥ विनति अमारि रे नव्य  
 सां प्रदो॥ तमो वर दपा लेक पंत्य वान  
 कर जी विने करे विनती मानवा रि



नर. हार

॥४८॥

लेमानर **नि॥४८॥** दामोदर ताहा  
रारे मेहे ताजा पुनारयेरो जनम जनम नो  
दास तमारो **तम** कीधी घणी घणी सा  
रेरो **टेक** नरसेयाने मंडली कर जामार  
सेरो **तम** प्रोठारा धाजी नेघरेरो गोपीयो  
सुरेरे गेर मोरो ताहार सेव कनीसी पेरेरो  
प्रोठडी ना बांधारे प्रभुजी प्रधार जो **आ**  
वी आपणरमी येरंग विल्लासरे **मोगर** ली  
मा लारो **लेता** आवज्यो पुरो अमो **पुव**  
**कैरा** आसरे **ब्र** सांड **द** कीनेत

॥४८॥

मो भुलापडा पाम्यांगो कुल मारो मरे  
नरसेया साथे रेले रित्या सणु एमन ही  
सरे सामली या कां मरे ॥ ब्रह्मचरन मारे  
लाडलडा चीयां ते क्युम विसारं आज  
रो रुठडा अमोरो दोहले परं एमन ही  
सरे सामली या काजरो ॥ ४ ॥ दी नजांणी  
नेरे प्रभु जी दया करो नरसे ये मुकुले  
मानरो एछे रतन चाइनी विनती रे ॥  
सामली या ने करे छे सो मरे ॥ ५ ॥  
न ॥ ६ ॥ ॥ रागागास ॥ सामली या सिने



Missing Page

दमेरे॥३॥ कांहां न बरि करे छेना भव  
हादजाजी विनतीरे नरसैयेसुमुकु  
छेमांन अवरएहनेकोयेनधीरे॥४॥  
कीर्तन॥६॥ सखितुं केहेतीजेकांहां  
नापेटोपीठारमारे॥ एहवोसुंदर  
तुरसुजाण॥ नहिनरनारमारे॥ टंक  
बांधोसामंदीयासुसनेहप्रीतजर  
चातकीरे॥ सुंडादोकाडावालेछेआ  
लाखरीजनपावकीरे॥ हरिगुणगा  
तांलाजभागेतोलागजारे॥ कपूरखा



नर. श. ३  
॥५०॥

तो दात भागे तो भाग जोरो ॥ सुव  
र्ग पेहेर तांकां नचुटे तो चुट जोरो ॥ पु  
न्य कर तां पंडार पुटे तो पुट जोरो ॥ ३  
सुइ मुकी कोण बल गे डाल ॥ काल स  
सक समरे ॥ कुअर बाई कहे मानो वि  
श्वास हरिनहि मुके कप मेरे ॥ ४ ॥ कुकी तेन  
॥ ६८ ॥ ॥ राग सांजरी ॥ मरु हारा जीवन  
जाद्वारे ॥ बाहालामाहारी विनत डी  
अविधुअरे ॥ विनी ताते जेनत नहे पिने  
वे ऊवडी सी बडी वार ॥ टेक ॥ अडुर

॥५०॥

जनदेवतां आपोमेहेतज्जीनिहार  
वरंदतमारुपात्नजो तमोसेवकजन  
आधार १॥ तज्जातेतमनेखागत्रो स्वां  
पगतवल्लुतज्जात्रांनारिनाथरं सार  
करोतमोसामलां अमरोरांकनेसादने  
हाथ २॥ तमोगुणसागरगोविंदजी क  
रीगोकुंलनीप्रतिपात्नरे अनाथन  
तमोनाथकाहावो अमोदिननादय  
ल ३॥ वरुदांनवजोगेवहिगंयांसमो



नर. हा. २३

॥ ५२ ॥

का हूना पंम्पा गमरो ॥ अमो वीना  
व्यपु रही नहि सकी ॥ माहारी से जसु  
ष विसरां म ॥ ४ ॥ लंपटने लज्जानथी  
दुन्दे कोण के हे शो माहाराजरो ॥ प्रीत भ  
ली पान बाईनी अवसर मोटो छे आ  
ज ॥ ५ ॥ कीर्तनि ॥ ६२ ॥ ॥ राग माहरी ॥ १  
॥ श्रीजी माहारि दिनति सांभलो जीसा  
रंग प्राण ॥ संकष्ट छे तो कहिये घण ए  
म खोले सुरसेना बांण ॥ टेक ॥ दासतमा

॥ ५२ ॥

रं दोहलारे॥ तमो क्यममे हेक्ष माहि  
राज॥ आज विलंबना की जे विलंब  
गई सरव को नी लाज॥ १॥ अमो हृदय  
पडां दामो दरा॥ हावे ता हा रा गुण कोण  
गाय॥ आज वर रनों पाली सुखा तो  
अमो क्यमजी वाय॥ २॥ सज्ज सेनाया  
ओसों मला फोगल फांगो नी अज  
हार आपो तमारा दांसने जाये नंदल  
कनी लाज॥ ३॥ अमो दीना तमो येक  
ला॥ मों क्यम करवगे विलास॥ ४॥ रसप



हार नृ

॥५२॥

रस छे का हा न जी ॥ अमने तमारी आस

४ तुं शल हल तो रे सुंदर वर ॥ अमो छे ता

हरी नार ॥ नाह विना नारि क्य म जी वे

त मो करो नी मन्त्र विचार ॥ ५ ॥ स्वामी जी

से न घी जांण ता मन घी उतारो नी री

स ॥ अपराध अमारा क्षमा करो नां मे सु

खे ना सी स ॥ ६ ॥ अमो अदलात मन ने न

सु ॥ अमने करो निषसाये ॥ आज नर से

याने उदगरी ल्यो ॥ त्पारे हसा वै कुं वना थ

॥ सुर से नाना ॥ विनती सा जल जा ॥ श्री

दामोदरराये॥ आसनथी हरि उठी या  
करी दासने पसाये॥ ८॥ कीर्तन॥ ३०॥  
॥ राग सामेरी॥ सुरसे नानी विनतिजो  
पीरे॥ आसनथी आवासा रंग पांथी  
रे॥ टेक॥ संछह बं तो ब्रह्म ज आवाये  
सरिये हरष धरि ने वधावोरे॥ स  
यली चारि जानो बिडु जापी रेरी से म  
रसे सय लापापी रे॥ नम जों पो नर  
सेयो नंद पमो सारने मंड पंथों आवे  
लागे वमो रादरे॥ श्री गुरु गोपात्र



नरः शरः

॥५३॥

जुगदीसरे॥ नामीरुखासरवसरवि  
यांनेसीसरे॥ ४॥ तमारीस्ततसहिन  
व्यजापरे॥ नम्योसरवसरवियोनेपा  
यरे॥ ५॥ सरवसरवियोनेआलिचनरे  
दीनवचनबोल्याजगजीवननरे॥ ६॥  
सरवियोनेकंठेआरोप्याहाररे॥ नैई  
जेलुछेनीप्ररणनीधाररे॥ ७॥ तमोसां  
नेकरोछोविलापरे॥ मेसरपुतमने  
आपरे॥ ८॥ तमोमुहेगोवकन्याथी  
वाहरलीरे॥ तमारेकाजेआव्येहुचा

॥५३॥

ह्यीरे॥१॥ तमो मुने वचो तो न च। उर  
 काचे तां तणे वां ध्मो जा उर॥१०॥ ब्रह्मा  
 दी कने वसन वथा उर॥ जगन को द  
 करे त्यां हां न वां जा उर॥११॥ ऊं तो जन्म  
 मले सुखिया उर॥ संध्या वांधे त्यां हां  
 न वम जा उर॥१२॥ जे हने फण वात ए  
 अपा मां नरे॥ त्यां हां न व जा उं करे भ  
 गवां नरे॥१३॥ शिवसन कादिक धरे ध्या  
 नरे॥ ते तो नहि हरि जन्म समानरे॥१४॥  
 एतो सत्य वचन रूप तां उर॥ हत ते न जा



नरः

॥५४॥

मोमीगपुरे ॥५॥ तमोमागो ते हू  
आपुरे ॥ जननु बचन कयमेनां उधापु  
रे ॥ ७॥ तमनेक ऊ विस्तारिने वातरे ॥  
मेहेते माहारु सुषहरु विख्यातरे ॥ ७॥  
मेहेला जने की हो जे केदारोगा यरे ॥  
केदारोगाया विना हार कयन अग्रायरे  
॥ ७॥ हुं तो जई बेसु आसनरे ॥ तमोमाने  
पुजवचनरे ॥ ७॥ आसन आव्यादामे  
दररायेरो ॥ सरवसारविओने हरषनां मा  
यरे ॥ ७॥ कीर्तन ॥ ७॥ रंगसानरु धन्य ॥ ७॥

सरवसरखियो ते आनंद जपं मी ॥ १ ॥  
रेरी सासारंग पांणी जी ॥ हसी हसी  
ने श्री मुख बोल्या ॥ धन्य धन्य वैसवनी  
वांणी जी ॥ २ ॥ सरखियो रे बांणी आंच  
रिरे एणी चेरे सांभला भाहार बार्त जी  
दामो दर राय ने घणु वांहा ला छो ॥ ते म  
नो अमारि बात जी ॥ ३ ॥ गिरि वरधारि ने  
कुंज विहारि ते साथे छे हो ड जी ॥ दामो  
दर राय सुप्रित बंधांणी ॥ तेरा गढ़ के दा  
रानी जो ड जी ॥ ४ ॥ मेहे तां जी मन निरक



हारः

५५  
रिराषेन हि मुके नाथ तमारोजी ॥  
श्रीदामादरग्यनेघणुवाहालाछो  
तेगायो निराग केदारोजी ॥ मेहे ताजी  
कहे पुत्रिमाहारि देवा लुआ केहे वाई  
येजी सागरु पैये घरेणो मुक्यो छे कोहे  
नो केदारोगाई येजी ॥ धरणी धरमे  
तानेमें दिराषत लखिने आप्पुजी ॥ व्या  
जसहित धनपो होता बिना गाउं तोजी  
काका पुंजी ॥ अटक संभली मेहे ता  
जीनी समरथ सारंगपंणीजी ॥ केरा

रोमुकावानेचाट्यां भक्तवच्छल  
जीनुरूप भक्तवच्छल प्रीतपरवनीज  
प्रीजी ७॥ कीर्तन ॥ ७५ ॥ रागकाकर  
केदारोमुकावानेचाट्या भक्तवच्छल  
भक्तवच्छल धरणी धरनागरनेचरु  
चेरचाट्यामेहेताजीनुरूप टेक धन  
आपीषतमांगीलीधुमेहेताजीनोम  
हिमावाधोरेवरु धरणी धरनागरनेघर  
अपंगलुलरीरुतीरेवरु तेहनेगेहे  
लंडीकहिनेरुकोबोलावेतेरुनेम



नरः सः

॥५६॥

दिरपधारा श्री भगवान् जी ॥ मुस्त कह  
थ मुका ने उठाडी तेह नुरुप की धुलष  
मी समान जी ॥ येक पंथ बे काज करे  
ता हरि आव्यानु ॥ नाग ठ मांहे मे हेता  
जी न्नी लेंष त नासु अं नी क्षरहि वैरु  
वरांये ॥ ४ ॥ तेश्री पातां सर्व कोणे दिव  
मंडली कपासे माग्यु मान ॥ नर सैयाई  
श्वर नो सेवक कखु करे हठी लारा जा  
न ॥ ४ ॥ अन्यो अन्य सह वात करे छे ॥  
हरि एष त आ प्युद माद राए नर सैया

५६

नागरनेघेरमोकंदो नहितर आपण  
महिमा जाये ५ तो लाजाथी तत क्षण  
आव्या कहे धरणी धर सांभ जो राये  
हरिना जन हरि संरषा जाणो मेह ता  
मीने लागो रे पाये ६ ॥ कीर्तन ॥ २५ ॥  
कारका पोद्या कमला पती रामानंद प्र  
त्ये कहि विनति ॥ ५ ॥ तमो जु नाग ठम ध्ये वे  
गे जायो नर सेहाना गरने करो पसाये  
२ ॥ आव्या रामानंद सज्जनो सार एह वे  
सभाये धरणी धर के हे छे विचार ३ ॥ मि



हार. नर.

॥५॥

हेतानेरूपे आवाश्री भगवान् माहा  
रि अपंगव हूकी धि तरवमी समान ॥४॥  
गरथ आपिषतली धु हरि ॥ अहेवी धर  
चा धरे वाणी ओचरि ॥५॥ तेसी पातसां  
मत्तो रत्नगी रथया मंडली कराय वि  
चारि रत्न ॥६॥ अन्यो अन्य वारता एम अ  
चरे वैलवसाथे वेषज कोण करे ॥७॥  
दक्षणा वंत गंगा दक भरो ॥ नरसेयो  
नागर वैलवषरो ॥८॥ गायेर तनगलाण  
राय ॥९॥ तन जडेने जीवेगा य ॥१०॥ येवडी

प्रीतदामोदरकरे॥ फांगी भोगटनहार  
 कंठधरे॥ १५॥ तेमाटेसेहेतानेमीकलोघे  
 र॥ आपपाब्राह्मणसाथेनांकीजेवे॥  
 ॥ कीर्त्तनि॥ ३४॥ ॥ रागसामेरी॥ ॥ स  
 मायेसभापतिओचरे॥ नरसेनाना  
 तुंअविधररे॥ लंपटपंणुछाडिदेतो  
 हरिहेलांआपेहाररे॥ १॥ जायोनागारअ  
 मोजुगतिजाण॥ एमउचराश्रीपातरे  
 पीमवांणीओचरे॥ अमोजाणोताहार  
 नाथरे॥ ३॥ मेदिताजीनेमदनचकईछ



नर हा

॥५६॥

अमोजोर सघली पेररे ॥ तम्पो ब्राह्मण  
ने अमो क्षत्री सांने की जे वेररे ॥ ३ ॥ मंड  
ली क के हे छे नर से याने ॥ हा वे जा यो तमा  
रे घेररे ॥ तप वारां रामानंद ओ चरा ॥ तम्पो  
जो जे संसार नी पेररे ॥ ४ ॥ चतु आपुं दाम  
रे त्पारे स रूथ या साव धां नरे ॥ सर ह  
मली ने प्री छु वो तम्पो द्यो मे हे ता जी ने  
मानरे ॥ ५ ॥ नर से यो हार मगा वजो मान जो  
अमारी द्रा तरे ॥ रू दार कं यि आवियो  
रामानंद श्री पानरे ॥ ६ ॥ ॥ ५७ ॥

॥५७॥

देवगंधार॥ ॥ जे हरि जननी निद्या करे॥  
 ते कोटकल्प वर सनरक सांचरे॥ टेक॥  
 जे कोइ को हो निरर वपक्ष करे॥ ते सैन्या  
 सिनरक सांचरे॥ नर सेयानागर तु ज  
 नु धार॥ सर वेपां डुर पुर मी झार॥ १॥ १॥ १॥  
 प्रणे आंणी म्मत गाय॥ ते इवांधी सख  
 ली नस भामा हो॥ २॥ आनाम देवे गाय नि  
 सजीवन करि॥ तो तुलसी माता के वज  
 धरि॥ ४॥ तेनाम देवे जी वाडी गाय॥ एह  
 वास मरय दे॥ कुंवराय॥ पड़े सुरे लो



नर. हा

॥ १९ ॥

कअलगाथररिया॥ वैसवनाधरम  
सान्वाथया॥ १॥ जगंतभगतनेआदेवे  
र॥ तेमेहेताजीनुचितघेर॥ ७॥ जोप्रल्हो  
दजीनेकोप्पोतात॥ विष्णीषणनेदिधी  
विरल्लत॥ ८॥ अंबरीषउपरडुवासाव  
पियो॥ डुववैसवतोवनमांगयो॥ ९॥  
अवणसाथेअबलाअडवडी॥ भरथ  
वैसवनेमातानडी॥ १०॥ सुधनवाउपर  
मेहेलुंबाण॥ कोप्पोकरणनेकोरवअ  
जाण॥ ११॥ फांचलीनां॥ घरुणग्रहो

ऐहवांरामानंदेवायकककत्यां॥१२॥तेमा  
टेमेहेताजाहंतुजन्तेकाहं॥संसारचरि  
त्रहंसघलांतलुं॥१३॥जोहारलीधावि  
नाजाशोघेर॥तोवैस्सवजनुनीकोण  
पेरे॥१४॥फांगीफोगातुमगावोहार॥  
त्रिभुवनवरतेजेजेकार॥१५॥नीजधरंम  
नासाक्षीमाहाराज॥गंमगमभगत  
नीराधित्ताज॥१६॥रहोवेगच्छाआपआ  
पणीगंमहावेडगमगसेआवेकंस॥१७॥  
ऐहवांरामानंदेवायक॥जोचरा॥सारे



नर. हार

॥ ६० ॥

मेहे तो जी हरषे भरा ॥ १८ ॥ कीर्तनि ॥ ३८ ॥

॥ राग के दारो ॥ माहारो वाहा लो जी राग

मुकावी लाव्या ॥ पतवां चिनेषो पारारे

पहुं के दारो आलाविने गायो माहारे

सांमन्नी ये हणुनां विसारोरे ॥ टेका ॥ म

धुरे स्वर के दारो गायो माहारो गो रिये

गमां पो आव्योरे ॥ तम के धुध रिने नृत्य

करो माहारो राग के दारो मुकाव्योरे ॥ १ ॥

वगद ध्याये पातली य सप्तामां मुज

ने आपो हारो ॥ आवो ॥ ल ल बी ला

सांइडिदीजे। आंनेतंगगाडोछोवाररे।  
 मलपतामंडपमांआगवो। हरिमेंजाणो  
 दिनदयालरो। सप्तासरतदेखतां।  
 काहानुडा माहारेकेवआरोपोमाह  
 रे॥ एमकहिमुस्तकषतमुकपुसरव  
 अखियोथरसावधानरो। जयजयका  
 रंबोलीकहेनरसेयोसरवसुंदरि  
 योकरोगानरो॥ ४ ॥ किंति॥ ५ ॥ राग  
 गोमनहार॥ जीरेचोहोदिशजोउंता  
 हारीवाटड। माहागीसंगुनांआवे



भर-हार

॥६॥

मंडली कंषडगंकाठी रहो तुज विना  
कोण मुकावे ॥ टंक ॥ हवी लाजी हर  
मुकीये हार आपिए मुन्हें ॥ मारा पूरे  
माहारा नाथजी लज्जा लागो तुन्हें  
॥ तमोगंज कंरणांगरु डबे डीयो अणु  
ओंण उंजाणो ॥ नरसैयाने हार आपवो  
आवडो सुरिसाणो ॥ ॥ वामन रूपे वं  
ली छलो ॥ धरा त्रिपद की धी ॥ इंद्र इंद्रा  
सन उगारि खुशुब वलने दिधी ॥ वा  
हा लाजी ॥ गंगा खुकी धु भलु गरथ

॥६॥

गोंठेजीहोतो॥ वेगेलखमी वर आवि  
या मुन्देकी धो समो तो॥ ४॥ तमो राधा  
शुरंगो रमो नरसेयो सुक्यों विसारी॥  
छबीलाजी निजके वर्या हार आपा  
उतारी॥ ५॥ नरसेयो विनंति विनवो दा  
मो दर राय सुजाण॥ तमो हवे नथी  
बोखता मंडली क अजाण॥ ६॥ कीत  
न॥ ७॥ राग आसावरी॥ देवा तुमक  
साग कोर हमक सासेवका करम  
चाखे पशु साणी नांजाणे मंडली क



नरः हारः

॥ ६२ ॥

हारनेपेरपेरपरभव॥ छविखावि  
नाडुः खकोहोने केहेवाय॥ टेक॥  
मुन्हेयेककहेखंपटीयेककहेलोपी  
यो॥ येककहेतालकुटीयोजषोटो  
सारकरमाहर॥ दीनजांणीहरिहार  
आपोस्वामीतुजमोटो॥ १॥ ऊरेवेइव  
इयेअतिरेविगोरियो॥ उल्लजलमु  
कीउपहासकीधु॥ मेघमोकलीय  
हतांणीनांषुतेहनु॥ आपुलाहासने  
मानदीक्षु॥ २॥ मुन्हेमाहादेवजीनेह

६३

पाहं वि॥ तं हि नो मे लक्ष्मी वरगायो  
माहामेहेराबेला माहारो महिमा जाता  
रूतो गरुड मुकी वाहारे तुं ज धायो ॥ ३ ॥  
माहारे धेऊ पासे सुंदरी के व वा हो धरी  
के सवाकी तन एम होयै ॥ अ नु वि अ  
जानी लोक ते अ सं तप वो पी वर पुन्य प्र  
साद ते प्रेम होयै ॥ ४ ॥ ही रनी हो रिये हार  
यै गुं यो छे ते दामोदर माहार के व धा  
रे ॥ हां पुं वा से तपारे दास ने मार से  
आघो कर करि मु न्हे ॥ ह प्र जातो ॥ ५ ॥



हारनर

॥ ४३ ॥

मुन्दे सौरव मां हंस रुदो सा डी कहे ॥  
आवि प्रन्नी ने माहामेरु तेज की धुना  
गरिना तप मां रेडु चढावी यु नर से याने  
अभी मां नदी धु ॥ ६ ॥ की नून ॥ ७ ॥ भो  
गल भांगी ये राय दामोदरा उचो जडु  
नाथ देवाधि देवा राय मंडली कमरु भ  
र ओचरे नर से याना गरनी सा विसेवा  
टेक ॥ भगत पातक दया तन तुं सामला ॥  
माहारे परण पर ब्रह्म श्री ततादारी ॥  
नागर साथे नवल ते हराषवी अकल

चरी अतमी हरि मोरारी ॥ २ ॥ जो माहारे  
नर हरिनां मरु देव सु ॥ तो पति तपा  
वन ताहा रुवर एका हावो ग्राह्य क  
गज मुकाव्यो चरं वड ॥ त मनर सेया  
नागर ने मुकावो ॥ २ ॥ ॥ किं नि ॥ ॥  
हे छ स छ पानि ध के शवा ॥ रुं ज अ  
नाथ तुं नाथ क हिये ॥ मंडली कहा  
रने पेरे पेरे पर भवे ॥ छ बिला विना  
उः ख को हो ने ज कहिये ॥ ऐकु रुं





सारकस्यसारकस्यसारकस्यसा  
मला॥सनमुषयर्निजोनीआज  
अमोनीगारजवाराहठकरिवोल  
पुनहिरापुत्रिकमातोरिल्लजटेक  
हट्यागोकुलंमांहेंगलंकतोफ़रं  
काहानुआनवनीतआहिरनॉली  
जचोरी॥चंचलचोरमुमुषनधीवी  
लतोहवांअमोल्लकारपुजतोरि



नरु हा

॥ ६५ ॥

हला बहू परे गोपिने ला डलडावी या  
अन्न आहिरनां ले रे चापी नटु आपे  
पोरंग भोगली ला करं ते नागर नर  
सें यो रघो जसां पी ॥ २ ॥ की तने ॥ ८२ ॥  
मोगरे शुंमी हिरया छो सामला ॥ हार  
आपो जसर व्यात वाधे ॥ केहे शो नागर  
को होनु नामगा तो रुंतो ॥ हे हल सज  
तुजने को ये नहि आराधे ॥ टेक ॥ हला  
सारि पातिनां दीक सर वेमलपा जेह ॥ ६ ॥

नी सारकरशो तेहनी पासयाशो॥  
प्रीतने भावे नरसेयो बिहितो नथा  
हेक स्रनी ताहारो जस जगदीश  
आशो॥१॥ रजनी सरव वहि गर त्रज्ज  
नहिराषु॥ ज्योतक्षी ण घर जायरेद  
वा॥ केशवा के वथी माला बडी क  
रो॥ आरोपो नरसेयानी जग्री वा॥२॥  
किनि॥३॥ हलाहारने का जे सुहव  
करां सामलना॥ भात्रवाने तोरे पास आ



हारनर

६६

व्यो राधिकाने संग बै गेरे वा तो करे  
की हारे वै कुं व थी तुं ज ला व्यो टे क ता  
हारु नां म विश्वं भर धरु ते व गं सी यो  
तुं लंद नो छो करो छा स पी तो ॥ कां म र  
ओ ट तो ला क डी हा थ मांगा व डी चार  
तो व न्न रे हे तो ॥ मा हारे मा त छुं ता त तुं  
भ्रात तुं सु धरा तुं ज वि ना ए दु ष को हो न  
ज क हि ए ॥ भ णे नर सै यो ता हारा गु ण गा  
जी विये ए क ला ॥ त ल मा क्य मर हि ए ॥

॥ हट्याहारने काजे शुविछं ववाम  
गणे नहिरे कंस तेमा मन विहसमे  
नहिरे कौस्तभ मणी विद्रुम माता ॥ उ  
नला पुष्पने सूत्र नीतांतणो तेणे शुभा  
हिरयो छे नंदना जंकांला ॥ टेक ॥ हला  
उंचने मुकी कोइनी चने आंसरे ॥ जीनी  
तुजा दवामन विमांसी ॥ राजानी दिक्क  
रित कमणी परहरि ॥ कंसनी कुवडी  
घेरवासी ॥ १ ॥ हंलारुजानी सरप असप



नर ही

॥ ६७ ॥

रही लज्जान हिराषु ॥ जो त तक्षण थार

जायरे दिवा ॥ केशवा कंठ थी माला वड

करो आरो पो नर से यानी जय्री वा ॥ २ ॥

॥ कीर्तनि ॥ ८५ ॥ ॥ हल्या आप्परे हार

सुदेव सुत नंदना ॥ आप्परे आप्प तुन्ह

लाज थोडी ॥ कं सना भय थ की नास

गोकुळ गयो ॥ रहोरै आहिर डों श्रु प्रीत

जोडी ॥ टेक ॥ हलागर जमाटे माय बाप

तेवेक स्या ॥ से सुर असुर मुनि सब जोत ॥ ६८ ॥

कसेनोदयकरो काजंता हाफुस सं व  
जवापदां मेहे लावन शेतां ॥ १ ॥ भगत क  
रि आहिर नोनां हवो ॥ तो मुन्हे हार तुं क्य  
म आप्या ॥ भणो नर सै यो रजनी यो डी  
रहि आप्य आप्य तस्कर मुन्हे का संता ॥  
२ ॥ ॥ ॥ ॥ हत्या उच्य रे सोम  
लां मेहे ल्प्रमन आमला नथी बोलतो  
मुं अफी मां नमाटे ॥ आपिए हार के प्रग  
ट हव डां क सं ॥ जे काम की धु वंशी बट धा  
टे ॥ टेक ॥ हत्या अण्ड निनां रूते मो गव



नरः सा  
॥ ६॥

मुधरा परणताग्रथनी वेजे जताहारे  
हारनी वारथी नारभागी गयो ॥ मुकही  
येनाथजी वारे वारे ॥ कली जुगमांहे  
प्रतीतगईलोकनी वैलवनी वेला कोण  
थासे ॥ फणे नरसेयो हूज हल वो पड्यो  
ताहारो जसहा वेकोणागासे ॥ २ ॥ कीर्तन  
॥ ३ ॥ केरो कीर हिरगधि कारंगजामो  
घणो रसी लारा तरही जथोडी नंदना  
नंदतुंसांने अलस करु ॥ मुजनागरसा  
येकांप्री ततोडि ॥ देव ॥ देवकपालीयो ॥ ६

निकाम्मजादी ये ईश्वर पद पांमी यो  
उमयात्त स्वांमी सामन्ना तु जनै लो  
कलं प्रटक्क हे थयो विष्णो चारि कां हान  
डकांमी ॥ हव करंते हयुं हव करे सोम  
का च्चट्ठो सनेह वि कम तं णो ॥ णो न  
रसे यो अव ध्यं सर्व वं हिं ग र्मिं डली क  
मुजने मां रसे जं वां हां णो ॥ ॥ कीर्त्ति ॥ ॥  
हत्मा उवरे अटप टा ॥ न थी वो ल तो चर  
पंटा ॥ लं प टा त्या ज ता हारी स वं जा वो  
व्रज पति रंग मां के ली घंटां करं त्यां हा



नर हार  
६२॥

नरसेया विना बाहारे कोण धाशे ॥ टे  
का हंला उवतुं ह ड बडी ॥ सु बे गे ह ड ब  
डी ॥ वात घाटी पडि मुज सा ॥ धी कटा  
वरद का हावु ते फो कटा ॥ निगमी लाज  
ते तुज हाथे ॥ हंला जो वडु सगमगे ॥ अ  
ग अमर फगे ॥ गमगे नेत्र जोवाने रूप  
नरसेयो लगमगे लोक सर्व जगमगे ॥ को  
प्यो मंडली कडु ए भरप ॥ २ ॥ की त नि ॥ २ ॥  
हंला नव दोला सांम ला ॥ आवडा सा आ  
मला ॥ मांमला मन्त्र ते क्य मरा ॥ कोट

६२

ब्रह्मांडपतिव हेतुनवऊनला आ  
ज अमोहायथा क्यमनांष्यां ॥ टेक ॥  
हलागज उगारियो गिरिते तारियो वा  
रियो रावण लंक पक्ष ॥ हवा रंक तुहा  
रियो के कोणे वारियो ॥ के नारिये मोहि  
रह्या निजरूप ॥ ॥ हलां मुकुरे मर के डां  
का फो के टशां फरडका ॥ हरषे अंग सुं  
के जवाहाला ॥ नरसेया विना कोण  
प्रीछवे सांमला ॥ नगरनाथ ये नंद  
नाज काला ॥ ॥ ॥ ॥ परपरे



हरनर

॥१०॥

काहानुया ॥ ताहा रुम नफ मे जु जु या  
जाणो नागरो कां इ दान आपो ॥ लषमी व  
रला लचकरां सदा ॥ सुजरां व नेतस्कर  
कां संतापो ॥ टेक ॥ हत्ना तां दुल ले इरी च  
विप्रने बो कटी ते हनु भो वन की धुवे  
कुंठ सरपु ॥ माहारे दान ते ग्यां न छे पुद  
रा ॥ नात पत ताहारां चरण नीरपु ॥ १॥  
हलाम न्न मोडु करां ॥ कंठ मा ला धरां ॥ ह  
रषि हेलां मंडप आवो ॥ मणो नर से यो  
रजनी सर ववहि गइ दुष्ट बंधन द्यी मु

॥१०॥

नहेहकावो॥२॥**वी** **स** **न** **म** **ः** **२॥** **म** **ग** **र** **ग** **ग**  
**पार**॥ विष्नी चारि शुरे प्री तडी प्री रंगे  
तुरातो मे डली कहारन प्रफ वे बोलेन  
हितुं मद फर मातो **दे** **क** **ह** **द** **ना** **क** **ाम** **ी** **य** **य**  
रे के स वा **क** **र** **ु** **ण** **ा** **नी** **ध** **प** **ा** **पी** **लो** **फ** **ी** **ल** **प**  
मी नाथ तु **ए** **त** **ना** **सं** **ता** **पी** **म** **ा** **ह** **ारे** **वा**  
हारे चढो रे वी वटना ताहार बरद जांशे  
मंडली क नर से याने मारु शी त्पारे तमो  
वप मरे हे वात्रो॥२॥ **की** **स** **न** **म** **ः** **२॥** **म** **ग** **र** **ग** **ग**  
**का** **र** **ह** **रे**॥ **म** **ह** **ार** **ां** **ड** **नी** **सु** **प** **ां** **पी** **ना** **बो** **ले**



हारनर

जो ज्यो जु गो य हुभा थरे ॥ धुतारो धरण  
धरजांण ज्यो ॥ अट क्यो नां मु के वातरे  
टेक ॥ गो कुल मा हे थ यो रे गो चाली यो  
नवनी तनो चोररे ॥ फोली भगत नो आ  
धीन सरा ॥ येणो जु वां प्रा सां बोररे ॥ पर  
आधीन थर पेट ज फर तो ॥ त्वे तुं गुजर  
नां धां नरे ॥ नर सैया सा ये हारने काजे  
आवडु थुं अफा मां नरे ॥ ॥ ॥  
माहारे मंडली क थुं पडी छे हो डरे ॥ मुन्हें ता  
हारां चरण जो वानां को डरे ॥ मुन्हें भव

चा बंधन छोडरे॥ तमो जषमार सो ने  
मुन्हे हार आपशो॥ टेक॥ मुन्हे तमो वे  
चो तो वेचो उरे॥ काचे तां तणे बांध्यो जा  
उरे॥ हुं तो गुण गोदिंद नागा उरे॥ तमो.  
जषमार सो ने मुन्हे हार आपशो॥ १॥ तुं  
न्हें गुजर धनार बांधती तांणी रे॥ त्पारे  
हुं मुकाव तो सारंग पांणी रे॥ मे तो प्रौठ  
मताहारि जांणी रे॥ २॥ लोक बरु या वो  
ले छे माहारं रे॥ दां कप माहारं रे॥ उघा  
डी अताहारं रे॥ ३॥ हवे तां हां रा मनडां



नरहा

हजु नथी हारंरो। तमो०॥३॥ तुम्हें  
षषभांन सुतार हिछे राषीरो। तेमाहा  
समनमांरह्यो छुंसांषीरो॥४॥ मेतोकर  
णाताहारी भांषीरो॥५॥ अमोनागरवर  
डकबोलाक हियेरो। कस्यो कथनमां  
आंणीयेहैरियेरो। तुंविणशरण अमो  
कोहोनेरहियेरो॥६॥ ताहारो नरसैयो  
रोसैभरायेरो। मुजबिनाजसताहारी  
कोणगायेरो॥७॥ तुंतिनावाहारेमाहारे  
कोणधायेरो॥८॥ कीतनि॥९॥ रंग

॥ ११ ॥

रनाति॥ भांगपभांगपभोगलसाम  
लडारेसाथी॥ गोहेलडांमुकोरेगोवा  
लारे॥ आहिरडांनेआवडोशुंअटक्यो  
मुन्हे॥ आप्यमोगराजीमालारे॥ देकह  
वेनहिदेउंगादनरहरनाहनडीया॥  
बाहुडामेवतवतजाणारे॥ शिपविरं  
चिताहारोपारजांजाणो॥ तुन्हेचेइपुरां  
णेवषापोरो॥ १॥ शुक्कसनकारिकधा  
नांधरेसहा॥ तेनंरतण्मेपीडारोरो॥ ते  
लंपटकहिभीमेरेबोलावियो॥ तेमल



नरः हा

मवांक अमारोरे २० आदो आलिघ  
नदिजेवाहाला सुंदर मुष डनिहा लु  
रे ॥ मणो नरसेयोर जनी स्वव वहिगई  
ययुत्रे लोकमां अजु आलुरे ॥ ३ ॥ कित  
न ॥ २५ ॥ जागौ जडपतिर जनी वदि  
गशिमंडली कमुजने बिहावेरे ॥ अरुण  
उदयोने हरणो आथ मणी तोहे तुन्ह  
दयानां आवेरे ॥ टेक ॥ बलोणां बलो  
वायेने वेद भणाय ॥ मां मनी यो भरे  
छे पां ॥ २६ ॥ आविसको नहि सुरधीर

मां हारो सको यशोदा जी ये बांध्यो ता  
पी रे १॥ सुचकंद कुंभ करणा वेहू ते  
जी त्या तेहू नी निद्रा तुजने वाधी रे ज  
दुपति दिन हू कांई नव आणु ता हारो  
नर सैयो नागार अपराधी रे २॥ संको प  
त वांचतां अमो रे षो पारा ते तनने च  
ढी छेरी सरें ॥ आचो रे आलि च नदी जे  
सांम द्वा डातपारे हू सा श्री जुगरी सरें  
३॥ अगमारे अंतर कनो रे सांम कनो जे



नरः शरः

दासनो दासरो॥ आंगली मुषधरिनर  
सेयो वाहारे धा यो श्री अविनाशारे  
४॥ कीर्तन॥ ८६॥ ॥ रंगवसंत॥

कमाडकडोंकडकडी यो रे गडग  
डी यों मंडली का नां मंदिररे॥ भोगल  
भागी नेता लां त्रुटां प्रधार शांग सु  
दररे॥ टेका खट हडी यों घंठ को सी सा  
पडिपोल्य पिंगाररे॥ नाग भुरस भा  
यी सांव को ये धरर होहाह काररे॥ १७४॥

आंसनथी उवा अविनाशि आवा  
मंडपमो साररो सरवसप्तादेषतां  
आरोप्यो वोंतमे हेताजी नेहाररो ॥  
पीतांदरप्री तेओटा दुआप्यां करण  
कुडळ जोड्यरो मुगुट मुस्तंक समरथी  
नाज्या जेजे श्रीरण छोडरे ॥ मुरविमो  
रली मधुरि बजाडे दीनो नाथरया  
करो रंगी लो छेविलो छोगाम्नागो  
चावो तेले गमरी करणमकरो ॥



नर नु  
नर नु

यजयकार बोलै सख वसारविया ॥ ध

न्यधं न्यगो कुल नारायरे ॥ नरसेया

ने फरि फरि सेटे है डे हर दमा मायरे ॥

॥ कीर्तन ॥ ९३ ॥ संन्यासि वेरागी वि

स्मेपां म्या ॥ वरत्पो हा हा काररे ॥ जे हने जे

देवो ते हने ते हवो ॥ व्यापिर स्ये गोपा ल

रे ॥ टेका ॥ नरसिंहाश्रमे नरसिंहरूप दी

तु ॥ मुकुंद आश्रमे मुकुंदरे ॥ अचिंत्य आ

श्रमे अचिंत्य रूप दिनु ॥ माधव अश्रमे

माधवरो॥१॥अबुतआश्रमेअबुत  
रूपदिगा॥विश्वंभररेविश्वंभररो॥विश्वं  
भरआश्रमेविश्वरूपदिगाकेशवआ  
श्रमेकेशवरो॥२॥रघुनाथआश्रमे  
रघुनाथरूपदिगा॥क्रीमेदिगारोमरे  
राजानीमायेचतुर्भुजदिगारंगीये  
दिगासुंदररूपरे॥३॥श्रीपातपंडिते  
सुंदररूपदिगाश्रीधरेदिगाबलचा  
रिरे॥बलभारपीयेबलरूपदीगा



हारन०

प्रसाद हरिये त्रिपुरारी रे॥ ४॥ प्रलंब वे  
प्रलय रूप दिग मंडली के दी गो काल  
रे॥ सप्ताये दिग सुर शिरो गण॥ सज्जन  
दिग बाल रे॥ ५॥ ज्योग ध्यानी ये ज्योति  
रूप दिग कुरार बाई ये दिग तात रे॥ मे  
हेते जी ये लटका लो लुबी लो निरूप्यो  
श्री गोकुल जो नाथ रे॥ ६॥ जेह ने जेह वो  
तेह ने तेह वो व्यापिर हो करुणा लरे॥  
मेहेतां जी ने केव ओरो नी लेइ भोग रा

नीमालरे॥७॥ रागरागनुतांनवजाडे  
मुरलीमदनगोपालरे॥ जेजेकारवो  
शोकहेन॥ सेयोहरिभगतंवहुल  
प्रतीपातर॥८॥ ॥ किरनि॥ ८८॥ राग  
आलापरि॥ श्रीदामोदरेकीधीइया॥  
नरसेयानागरनीराषीरंग॥ आपणा  
सेवकनेसुप्रकारणे॥ रायमंडलीकक  
धोमनभंग॥ टेक॥ कोरिहेकांमीको  
रिहेकपटीपणसेवकनेसमारीजा  
सरे॥ रापिलजसपामांसाचो॥ ८९॥



नर. हार

॥७॥

नसखलाकी धानिरासरो ॥१॥ कली  
जुगमांयेक प्रत्यक्षदितु नरसे योज  
त्यो होडरे ॥ आप्पा कुंड ड्डु त्यां हां वट्ठी  
कां हां ने पितांबर आप्पु कटछोडरे  
॥२॥ येणो जार जात्य ने कोइ ने व्यजांणु  
वेस वस्त्राये की धोवादरे ॥ अंत्य जगत  
अंत्य ज नो जायो ॥ एम बाले प्रजा वर  
धरि उल्हादरे ॥३॥ जय जय कार हयो  
सोर व मां हे हर ॥ आप्पो हार हरी ॥  
मंडली कराये नी मां धानि गयो नरं

॥७॥

या नगर नीरखा कर ॥ ४ ॥ जी ल  
न ॥ ५ ॥ ॥ ओ लगो निफलेना  
जाये जेणे ओ लगो गो कुली यानो  
राये टेक ओ लगो फ्रव प्रल्हाद वि  
सीषण अंवरी पवली हनुमान रे  
अंकर उचवने सदा भो विदुर भगंत  
वर हो नरी ॥ १ ॥ ओ लगो वेगे पुप दतन  
या चरणे अहिल्या तारी रे कुवजा  
नुवंदम मागाली धुएणे गो कुचरा  
पुगि रिधारि ॥ २ ॥ ओ लगो वेगे प्रेज



हारनर

ॐ

नी विनिता तारण तरण मोरारी रे॥

ओ लगो प्रित करि जे जन सुली ला

कुं ज विहारि रे॥ ३॥ भगवत लख सदा

हरि दाता भगवत तपां वरद का हावे रे

नर सैया चा स्वांमी ने समरतां पुनरपि

जन मनः आवे रे॥ ४॥ किं सत्त॥ २००॥

गगन परमाती॥ जीरे धन्य तु धन्य तु ए

म कहेश्री हरि॥ नर सैया तु माहारो भ

क्त साचो मेहेली पुरुषारथ सरविरेवे

शोध गोता हारा प्रेमथ॥ रुरे नाचो टेक

जी रे मुज मां तु ज मां भे द न हि नां ग रा  
मा न तुं मा हा रि वे द वां णी ॥ ह जु ये पर ती  
त नां उ प्र जे हु ज ने मो क लुं मे तु न्हे टा टु  
पां णी ॥ ४ ॥ जी रे मा हा मे रु की धु ते वें प म ग  
यो वि स रि हा र आ प्पो रे प्र त्प क्ष भ र प वौ  
द लो क मां मा हा रे तु ज स मां को न हि ता  
ह रु मां ह रु ये क रू प ॥ ५ ॥ ता ह रो आ सै री क्ष  
ग म्प ने सां भ त्वे तं ह ना कु द्द स हि त पा व  
न थां ये ॥ ६ ॥ न णो न र से यो मी चां चो दी मु री  
सं वो द्वा रे क र मां डी क स जी स सं पा ये



॥ किं नि ॥ २०१ ॥ देवामेगायो ब्रह्म ते प  
रम आनंदं कुरु कर्मचा जीवते मरम बो  
ले धर्म धुरंधरा तुजने ज्ञाणे नहि रत न  
गुजा करे येक तो ले ॥ टेक ॥ निगमने अ  
गम सुगम हं दो गोपिने ॥ ते ह नो पार को  
न अज्जाणे ॥ रमा एती नेरुचे रुचित न ह  
कामना ॥ सोमीना पुंरते भ्रम आंणे  
पुरण ब्रह्म त्यां हा सदा ये आनंद ॥ ३ ॥ आ  
न आनंद त्यां हा आनंद होये नर सैयो  
मंद ॥ निगांय छे गुण कधी कामिचो स

मझोलेकामनोहे ॥ २ ॥ कीर्तन ॥ १० ॥  
हराषिहरिओचरे नरसैयोचितधरे  
सांभलेसर्वसभाजवात ॥ हार आपिस  
रिविनयविनतिकरि ॥ सुनगुपरह्याह  
रिजोडिहाथ ॥ टेक ॥ ममप्राणवैभवंसदा  
जनमजीवनसदा ॥ दाषवीं दामोदरदि  
नवांणी ॥ १ ॥ सुं संलग्नरसरवपरहरिप्रेम  
प्रीतिवरि ॥ सरणपंरबलकहेमेप्रित  
आंणी ॥ २ ॥ आदिकुंदी नलुजनमद्वेदी  
मलु ॥ दोषद्वेष्टा मेहेता हारवोरं ॥ ३ ॥



हारनर

८०॥

टब्बला डपति करुं हूँ विनति नरसेय  
वचनतु मां नमोरां ॥ की दुनि ॥ १०३ ॥  
देवा तु जनाचे हूँ तात्न वा उं ॥ तात्नचे  
शब्दवे कुं वजा उं ॥ अनैक उगतपी गला  
पारषु नाद करि जेद तु ज प्रवेगा उं ॥ टेव  
देवा तु धरां वां सली छू प्र घंटा वटनी त्या  
रे के सरिलंक कटि जंत्र साह ॥ राधि का  
हाथ तु ज वां हिग्री वां धरां ॥ त्पारे रंगनी  
रे लमा हूँ तणा उं ॥ देवा तंत विधार स  
तात्न रिशा सरि ॥ पु पु रि पंगु य ध रि वम ॥

८०

कवां॥ माप्रचष्यवात्समानैरेणां  
लाकरां॥ त्पारेजुवतीना॥ सुधमांरुंस  
मां॥ २॥ देवाकंचुकिबंधउरहारकोस्त  
ममणि सुगुटमणिमेषत्मा श्री यत्न  
वां॥ मान्यनी संगज्यवारां प्रवत्न भमं  
रीफरां ताहाराचरणनी रेणु मांरुं जना  
ऊ॥ ३॥ देवा अति आनंदप्रवत्नवत्नसी  
सतां एहेवांरि सतां देविनेरुंसराउं  
मपौ नरसेयो जिधंटरंगेरमो देवातु  
नसरिप्रडोइ जथाउं ४॥ कीर्तन



॥८॥  
राग असावरी ॥ श्रीमुरव बोल्या प्रोण  
पेमुन्हे वैस ववा हांला ॥ हूं अह निशि  
जेहेने धांउरे ॥ तपतिरथ वैकुंठ तजीने  
ज्पाहां वैस व होय त्यां हां जाउरे ॥ टेक  
अमरीष मुंजने अति वद्वभ छे ॥ दुबासां  
मन भंग की धोरे ॥ मेमाहारु अप्प मोन  
तजीने ॥ दश वार जनम ली धोरे ॥ १ ॥ वैस  
वगाय त्यां हां उभा सां भलु उभा गाय  
त्यां हां जाउरे ॥ वैस वंज गयी क्षणु नहि

अलगो॥ नमो नरसै यो सांचुरे॥ र  
॥ १०१ ॥ वाकोरमा हारा दामोदरजी जे  
णो सारक रिअमारी रे॥ अंतर नाराणो नर  
सैया साथे आप्पो हार उतारी रे॥ टेक श्री  
सुषवोल्पा दामोदरजी॥ धन्य धन्य वैसव  
नी जात्य रे॥ अंतर गत्य नासाही मा हारा  
हू वेचा यो जन नेहा थरे॥ १॥ सखियो स  
रवे हरि नेवधावे॥ सुषवोत्ते जय जय का  
र रे॥ रम रम करुणा हरि परवरिमा॥ आ



हार

॥८२॥

पीमंहताजीनेहाररे॥३॥शुकसनकादि  
कनारदमुनिजनवंतीदेवतेत्रीसकोड  
रे॥अंत्रक्षरहिनेजेजेकारबोलेनरसैंपो  
जीत्योहोडरे॥४॥पुष्पवृष्टिकरिसरवको  
इधन्यधन्यवैष्णवजननरे॥परणप्रीतपर  
ब्रह्मसाथे॥बोलेप्रजाधन्यधन्यरे॥५॥  
अनेकभगतआगेउधरियातमोहृपा  
करोमोराररे॥सोरवसघटोजोवामट्या  
ओहिरख्यानरनारिरे॥६॥एणोजारजात्य

॥८२॥

नेकांश्चिन्नमज्जाण्युक्तीधोवैस्सवशुवा  
दरे॥ अंत्यजगत अंत्यजनोजायोए  
मवोत्तेप्रजाउत्तादरे॥ ६॥ मेरुसहि  
तमहिदांनकरेनीत्यनित्यनाहेगंगा  
तीररे॥ हरिजनसाश्वेदेषकरेत्यारेप्रे  
लयोन्पश्रिररे॥ ७॥ अहमाहादांनआ  
पेनिजमनेधरेषुभजपतपध्यानरे॥  
तेसचतुततक्षणहोयेनिफलेजो  
करेवैस्सवशुआपनीमानरे॥ ८॥ वीत्ते



नरु-धार

॥५३॥

प्रजा दोहोदिसततक्षणा ॥ ये सत्यसत्य  
वेदवचनरे ॥ जेवैस्रवश्रुं वादकरे ॥  
तेहनेरुगश्री जुगजीवन्नरे ॥ ७ ॥ क  
ली जुगमांहे कठीणमानवीया ॥ ते  
हनुमन्ननव्यपती जेरे ॥ भणोनरसे  
योसांभलोमाहारवाहाला मुन्हे  
रणशरणराषी जे ॥ १० ॥ कीतन ॥ ॥  
॥ १०६ ॥ ॥ रागधन्या ॥ सीपातसं  
न्यासीमंडलीकनेरेहेहे छे नमोनर ॥ १३ ॥

११  
सैयाने पायरे। अंधपधाने कांइने व्य  
जांणपुं। आक्रंदकरे छै रायरे। टेक। तु  
रभी मडे भलुनां कीधु रायकरे छै  
विलापरे। रांणी। यो आवीने चरणे ला  
गी। उगारो उगारो आपज।।।।। त्पारे रां  
मानंदेरा जा आंणी माहासुम्मानुं नहि  
वचनरे। असुर बेहाये मृत्पुपां मज्जी  
जार जा तपना तनररे।।।।। त्पारे मेहे तो ज  
केहे ओम नव्य की जे धन्य धन्य रांमाने



नूरुशा

८४

दमुन्यरे॥ अमने दामोदरजी येहार  
आप्पो तेराय दामोदरं नु पुन्यरे॥ ६॥ ए  
विष्णु भग तने दोषनां दीजे मुजने ला  
गे कलंकरे॥ श्री दामोदर राये लज्जा  
राणी॥ हूं उगा स्योरं करे॥ ७॥ मंडली क  
मे से ताजी ने के हे छे मे को पा कर मे ता  
णी वातरे॥ मणि नर से यो तुं अंसुर अंश  
असुर नो ते जांणे छे॥ ताहार मात  
रे॥ ८॥ कीर्ति॥ ९॥ राग देव वांधार॥ १०॥

राजा आच्यो जनिता फण ॥ कोहो माता  
उत पत्त अमतणी ॥ १ ॥ दलती माताय  
वांणी फणी ॥ सां फल पुत्र उत पत्त तुज  
तणी ॥ २ ॥ एस मे पु लुवाने मो कल्यो नि  
मळि वै सवनर सेयो परी ॥ ३ ॥ रुतु धर  
म विषे प्रतिहार ॥ असुर नु मुख दी तुह  
वो तु संतान ॥ ४ ॥ आवी मंडली क मे हे  
ताजी ने नम्यो पाये ॥ दया करो हूं मंद  
मली राये ॥ ५ ॥ प्रलंब प्रधान निनय व



॥ ५५ ॥

॥ ५५ ॥

ऊँकैरे॥ मंडली कनैइणो निशरणस  
रे॥ ५॥ श्रीपातमेहेताजीनेनम्पा॥ अ  
मोमेहेताजीनेअतिघणुदम्पा॥ ७॥ अ  
मोअज्ञानथयामाहाराज॥ राषिदा  
मोदरेजननीला॥ ८॥ श्रीममेहेता  
जीनेप्रणामजकरे॥ ब्रह्मचारिविनम्य  
ओचरे॥ ९॥ वैरागीरुनीयात्पजथया॥  
आजहरिजननामहिमारह्या॥ १०॥ न  
रसेयोकेहेजपोहरिनाम॥ रायदामोद

५५

नेक शेषणाम ११ ॥ कीर्तन ॥

राग आसावरि ॥ हरष्या लोक नगरन

सरव कोये ॥ धन्य धन्य देस वजन अव

तारो ॥ सीर वसंधत चरणे लागो मो

हिरखा नर नारो ॥ टेका सभाये सीष

मेहे ताजीने आंघि छे ॥ वैसवनं दिरप

धारोरे ॥ धसी ॥ रान्ये चरणे शीशानां मु

मे महिमानां जांणी तमारोरे ॥ रामा

नंदवार कां परवरिया ॥ कहे वैलवना



नरसै

॥८६॥

माहमाये रे॥ जे वैस्रव शुं वेष जकरे  
ते निश्चैनरक पचाये रे॥ थप छे नरसै  
हीयो सखियो ने के हे छे॥ सरस सुंदर  
यो करोगां नरे॥ राये मंडली के सीष आ  
पि मे हे साजी ने नम्पा सर वपर ध्यान रे  
अ संवत पंद्रसे हे बांहां लेर॥ १५३२॥  
वरषे मागशर शुदसप्तमी श्रीमवार  
रे॥ तेणे दिवसे श्री रामो दरजा ये मे हे  
ताने आप्पो हार रे॥ ४॥ कोत्ति॥ १५३३॥

श्रीदामोदरजीनागुपागाता तेनर  
दुषियानां होयरे॥ सदासामद्वीयोस  
नेहजरगषे सनमुखयइनेजोयरे॥ टे  
क॥ मूरखमूढहिंडे वलवलतानां  
जांणोहरिनोममरे॥ रंरणप्रीतअमा  
रिहरिभुंएमाहारोपरिव्रतरे॥ १॥ छै -  
लछविलोनेछोगालो॥ तेहनेकेही  
पेरेफज्जीयेरो॥ मंडलीरांयनुमानउ  
तासुतेहनेकेहिपेरेतज्जीयेरे॥ श्रीत



हरि  
॥७॥

करि विन वेनर सैयो हूं संत कृपाये  
पांम्पोरे ॥ हरि जननी चरण रेणु मां हू  
अनेक वेदना वांम्पोरे ॥ ३ ॥ हूं अज्ञान  
अलप बुद्धि मां हारि देष्पा देषी येचा  
त्पोरे ॥ संत समागम अनुदिन कर तां  
हरिये हाथ जसा तपोरे ॥ ४ ॥ जे जे जगदा  
स भगते जन अविचल धरो ती लक  
तुलसि के वंमा लरे ॥ भणो नर सैयो स  
र वंथा गो वै सव गां ओ छ विला जी ७

नो विहाररे ॥ ५ ॥ कीर्तनः ॥ १ ॥ निरप  
लोक नगर नाहर छमा ॥ धन्य धन्य वैस  
व अवताररे ॥ माहापती त आं विचर  
पो लागा ॥ करे हरषनर नाररे ॥ टेक ॥ अ  
मो अबुद्धि नेमी राजा अबुद्धि की धी  
वैस वनी तातरे ॥ स्वामी सेवक मां हे  
केदनहि येवांणी वेद विरम्पतरे ॥ १ ॥  
वासुदेव नावा हाता वैस वा ते सपथे  
शोषे परे ॥ सावु पां सु साम खी या लु



सूत्र २०

तेषां विष्णुनाटात्नेलेषरे॥ हरिजन  
सघटा हरषजपांम्पा॥ वरत्योजेजेका  
ररे॥ मणोनरसैयोधरोती त्वकतुद्व  
सी॥ गओ छवित्ताजी नो विहाररे  
३॥ कीर्त्ति॥ १५॥ हरिनी भगवतिना  
जेजीवे सजनी॥ बीजो अिह अफ्रद्वअ  
वताररे॥ तुलसिमात्ता तित्वकपणपा  
षे॥ बीजाशाषोटासणगा ररे॥ टंक॥ द  
वामासम्भदरदुषपांसी॥ ते अकारज ॥

परभाररे देही धरिने हरिनी दासना  
काहाव्यो तेहनी जननी नेधी काररे  
१॥ वैलव जनवाहातानहि जेहने तेह  
ने कपानहिनी रधाररे ॥ नरसेही या  
वास्वामी विनासजनी ॥ बीजां अने  
कधर्मविचाररे ॥ २॥ कीर्तन ॥ ११२॥  
सरसगांन सुंदरी यो के रां वाये चंग  
मृदंगने ता लरे ॥ नरनारि सरवम्पी ल्यो  
नगरनां जयजय दिन दयाखरे ॥



टेक। सखियां ने कंठ बांही डी धरिने  
मेहे तो जी करे छेगां नरे। सोरठ सरुव  
को जो ईरखु अकल चरित्र भगवांनरे  
१॥ आबी सेहे तो जी मंदिर पोहोता नेह  
रख्यो सरव परिवार रे। हार लेई हरषे  
होइ जी त्या धन्य धन्य वे स्रव अवता  
र रे। २॥ एटले दामोदर मंदिर आव्या  
ते मेहे ते जी ये वधाव्यारे। नागरि नाट्य  
मांदु वडावी उं। हार ले कता लोप

३॥ कुपरवारिये चरणे करघाती  
छोल्यां दिन वहूवांणी रे॥ गंम गंम  
संक एपडे उगारा॥ अमो प्रीततु मारी  
जांणी रे॥ ४॥ निरधनने वली मातुवाग  
रि॥ दामोदर नदे सो अंवतागरे॥ फणीन  
रसे योसां फली माहारावाहा दामो  
गुलु वारो वाररे॥ ५॥ की हनि॥ ६॥  
कहे दामोदर सां फली नरसे या॥ हने  
माप्रिते बंधाणी रे॥ लोक त्याजने कार



पो माहाराग के दारो वे चांणारे टेक  
घण्णा दिवस मे पंथ निहा ल्यो तो हे तुम्ह  
दयाना आवीरे माहारा सुषनो समो  
हटा ल्यो त्पारे मे सुर सेना बोला वीरे  
तमो मंजी नेहूं वशा की धो अवर कोणो  
नवथा उरे मान वारि कांहां नखाई के  
हे करुणा निध हूं तो वैल्ल वहा थवे चा  
उरे मान वारि रतन वारि प्रत्ये बोल्या  
माहारे सुर सेना समुन हि कोयरें कु

परवारियेवांणी प्रकाशी॥ ए भगव  
समागमहोयरे॥ ३॥ आपिआज्ञाअ  
वनीश्वरवलीया सुस्तकमुक्याहाथ  
रे॥ कुअरवारिचरणेजरत्नागो धन्य  
धन्यवेकुंठनाथरे॥ ४॥ निरफेयइरही  
सरवसरियो॥ ५॥ भगवतनीकुवेत्त  
रे॥ तुमश्रुमांहारेअंतरनथी येसु  
पसनातनकेलरे॥ ६॥ भक्तभगव  
तआदीसत्तातन॥ श्रीगोकुलना



रायरे॥ फणोनरसेयो हं दिन उगास्या  
ते संत चरण पसायेरे॥ ६॥ कीर्तन  
॥ १९४॥ ॥ इति श्री नरसिंह मेहेता न  
हारमात्मसमाप्त॥ ॥ संवत् ॥ ॥ श्री  
दामोदरापणि मत्तु॥ ॥ श्रीरत्तु॥ ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ राग चालीस

हंतो सुंण जड नारी हो ॥ करूं ये क  
ब्रात पक्षी ॥ तेरो जनम विगा रो हो  
प्रिया जी कांरा हनां बंदी ॥ तेरी जा  
त्य नजांणु हो रसी करा यश बंद्य  
पा ॥ तेरी ममता बिांटी हो नपायापी  
उअपणा ॥ तेरी माया प्र बल हो च  
पोरा छुद करे ॥ अती नाचन चावे हो  
नट बर वेष धारे ॥ मन सुस्त कंदी या



हो॥ जाओगी को ६ णदशा॥ ते तो न  
अनां जाणा हो॥ चटमां आयवसा  
३॥ तेरे तीनों रसीया हो॥ पल छनुरं  
गकरो॥ पांचां सुं राची हो पची ससुं  
संरु करे॥ तेरे रजगुण तमगुण हो॥  
सतगुण चितनां दीया॥ तेरो जनम  
विगुची हो॥ संतनका संगनां कीया  
५॥ चालसगग नमेहे लां मे हो॥ ज्पां हां  
ते रूची युवसे॥ त्पां हां अनहद वाजे॥ ६॥

हो स्रवमत्नसोदरसे ॥ **ह** ॥ त्पां हों नेर

सरणा रहो शव दस्रण कारकरे ॥

त्पां हों अमी रसवरषे हों अखंडत्पां

हों धारं शरे ॥ **अ** ॥ त्पां हों ईगुत्यापिगत

हो सुषमनासंगलीयं ॥ त्पां हों फुली

फूलवाडी हो मनीहरचित्रदिया ॥

त्पां हों दोउमारगहो आगेयेकरुया

पेय अंगम अगोचरहो ॥ **प्रो** ॥ होवेका

संत सुआ ॥ **ते** ॥ रवी अजन्तमारे हो



ग  
गुरुमुख वात सुणी ॥ १० ॥ सरुव धोषा  
भाग्या हो सल्या मोहे आद्य धणी ॥ ११ ॥  
जगमो अजु आला हो सो हंगम चस  
रदले त्वां हो तो दास कवी रजी हो  
अनी रसरंग भरे ॥ १२ ॥ पद ॥ १३ ॥





श्री कृष्णाय नमः ॥ दोहोरा ॥ नि  
वसुंत पद प्रणमो सदा रिधि  
सिद्धि निधि देइ ॥ कुमति वि  
जा शान सुमति करि मंगल  
सर्व करेइ ॥ अलष अमरत  
अलष गति किन कुन पाया  
नार ॥ जोरि अंगल कर करत  
॥ विमति सार २ ॥

भुवनेदसमपप्यकुरिरच्योऽनुज

माश्रान ॥ अर्थदिषावोपगतक

रिओषधरोगनिदान ॥ ३ ॥ मम

मतिअल्पजुकहलहो ॥ कविम

तिपरमअगाध ॥ सुगमचिकीत्स

चतुरकविंदुमियजुसमअपरा

ध्व ॥ ४ ॥ वैद्यमनेसामामध

देशग्रंथसुप्रकाश ॥ वैद्यम



नमो

सुतनेन सुषका साकी यो विद्या  
स ५॥ अधनाडी परीक्षा दोहरा  
प्रथमज साहिन कहो देष अ  
ममति सो य फुनि आनो अन  
जाद प्रे जै सी मम मति होय ॥ ६  
रि अ गुह मूल ही देष पुन सा  
मकार जा नरु सुष ड मजी ब  
ने विन करु विचार ॥ ७ ॥ आ

हि पित्तं कृनिमधकफं श्रेष्ठं प  
वनजुप्रधानं ॥ त्रिविधित्साल  
तुनं कहों जानतु वैद्यसुजान  
॥ में डंक काग कुंलिंजगति  
पित्तनं साइहिजाइ ॥ हंसनं वृ  
रकनातकफ ॥ नागजलोका व  
इ ॥ तितरजलव वरे रंगति  
सो धननी सनमातं ॥



वेदो  
३

म अति सी त होय नाश करे वड

घात ॥ १० ॥ रुधाव पज धमनी च

ले उछरक्त की जान स्थिर तप्त

की पुनि कहों आम जे नीर वषा

न ॥ ११ ॥ चले वग अरु तप्त डुप

वर लहि तध मनीय ॥ कर ड

विकी तसा मजि के जो सुष पा

॥ १२ ॥ अंज पित्त कफ वा

सकृत्पुनरिदं न॥ चोपश॥ विषमांश॥

अजोतापेष्वा रु॥ कृधातरवालेव

कृत आहारु॥ कडुकतिलकसम

दिरावान॥ सेकै अग्नि को धपुमा

न॥ उक्षजुषायेध्वयमेगांश॥ आध

रातदुपहरंहीसमे॥ कातिक अंश

अरुचैशाप॥ पित्त विकारप्र

नरिजाय॥ मधु॥ हृदय



नैव नैव नीत लो न षट्पाई पलक क  
त नो जन न न पि और दी न सो वे  
फाल्गुन चैत स मे क फ हो वे नो  
लेतुंग वा द दृति ग दे चिंता पेट  
न न न न रहे रुखा वा य क ड क  
विशि जागे संध्या स मे सीत संग  
अगे न न ए करे क से ला सोय  
ने वे दे आ प्र न न होय १३ दो

होरा। मंघर पौ वरुमा घमै न।

दुव श्रावण ता स। पुति अवाउयं

दित कह्यो वा पुराज पट मास॥

१५॥ अय पित्त कफ वायु जल

चोपरी सुष कटु ता व्या कुंठ र

लोप। सुक ही अघर स्वद अस्ता

प। मरुती दाव सी नगर पीत

सन कह्यो तने श्री



नैन०

बेहरुषासी स्वास मुषमी बोजु  
मुषको नाश हि यराचारी बल  
ग्रहरहे कंफकेलरुन एतेकहे  
देही पीडा ताबुदहे आलसहे  
या प्रजमे रहे देही श्रीतलनिडा  
नोश सषाअंगवडुतंडुताश  
मुषनही मुषमी गारहे उष  
वचसं पुंगहे नैनकवि

बौक ह्यो वषान् ॥ मारुत लंकन  
हते जान ॥ १५ ॥ अपपित्त कफव  
युको विचार ॥ दोहोरा ॥ स्त्रि संग  
मन्त्र बीजनां श्री ॥ तल सलिलना  
न ॥ मीजन मधुर सुगंधनां फूल  
कोपपित्त हान ॥ १६ ॥ कारक स  
नामिक कहुत प्रउदक सुपवा  
स ॥ ववन विरेचन ॥ इफुनि  
हो ॥ इक ककनां श्री ॥ तल



चैनः

दक्रवततउसडवमर्दननेलशरी  
र॥ सुरापापनसेकेदहनईन्हते  
जायसमीर॥ १८॥ अथसाध्यल  
रुन॥ मोरगा॥ होयत्रिवाजि  
सहीनकरपदनासातप्रही॥  
मडुरमनापरवीनमुनलरुन  
ताकेकहे॥ १९॥ चौपई॥ इंडीश्र  
गुरहेचैतप॥ सुषनिडाआ॥ सु  
प्रसन्न॥ तपितावचनसुने॥

रुकेहे। स्वादगंधसवकेगुनगहे  
विषुषस्वेदजाकोज्वरहोय। सर  
लस्वासहीनकफसोय। करड  
चिकीत्साताकोजान। सोतर  
जीवेकह्योवमान॥ २५॥ अथ  
सारपुलकत। सोरवा। जायसुभा  
रुतपित्तग्रहपीतहोय। कफगेह  
कफ। आवेज्वरकं।



九

होय निशांदाघकु निशीत दिनं.

पता सुख दोहों रा गुदान्त्र एत्र

सु. या कुलङ्गचंकी सो जत नुन

रं प्ररुं दं सिद्धा ज्ञान हो य हि म

जासु॥ शीश तप्त जाको रहे जमपुर  
जाको वासु॥ २४॥ दर्प न घृत तन  
तेल मे छाया देष डुआनि॥ शिश  
रहित तन देषिये॥ नासु पदम महि  
जानि॥ २५॥ मज्जुन की जेती न प्रंग  
कर मंदरु देनि हारि॥ सुकंही जि  
सुत॥ काल सो मरत कहो यविवा  
रि॥ २६॥ कर विवा रू॥ कुबुजे



आर्द्रा

नेजं  
८

आवेकलुनगंधं मत्तलज्जाउत्त  
नासंक्रयतासलेतजमफंद ॥ २५ ॥  
अपकालचक्रलिष्यते ॥ आदि  
जुशंतिमगमधिमूलसमसोय  
नंधतइद्विनामधरिइहि वि  
धिनोसजुहोय ॥ २६ ॥ रोगीनात्  
जुहोमध्रवजापजाहोजनधं  
प ॥ सोहितकलाविचारकेका

लच्छक्रधरिना म॥ २५ ॥ इति पंडित  
केशवराज्यपुत्रनेन सुषुविस्वि  
ते वैद्यमनोत्सवनाडी परीक्षावा  
तपितकफकोपनिदानसाध्यत्र  
साध्यलक्षणकालचक्रनामप्रप  
नो॥ देशः॥ २५ ॥ ज्वररु  
एलिमते॥ होहोरा॥ ज्वरत्रपडहि  
काविंदुग्रहमूर्तिगोरोवोसम्



नेन  
५

तीसार ॥ वेवन असुचि अंगने द  
तेज्वरदशालकण सुप्रकाश ॥ १ ॥  
अथ पित्तज्वरलक्षण लिख्यते ॥ हो  
होरा ॥ मूर्च्छा त्रिषा प्रलाप फुनि  
शिरोवर्तिन्नमचित्त ॥ नेत्रदाघक  
दुग्धावेदन ॥ दायलक्षन ज्वरणी  
॥ २ ॥ अथ कफज्वरलक्षण ॥ का  
सामास ॥ रोमोच्च गुरु वेहरा ॥ न

आसीत॥ ववननश्रुचिमुधमधुर  
ताकफज्वरलक्षनमीत॥३॥ अथ  
वायुज्वरलक्षन॥ शिरकेंडुरोमां  
वन्त्रमसीतकंपजंजाय॥ मोहं  
शितलेजुकवायुमुख.एंलक्षनं  
जु॥ वायु॥४॥ अथमलज्वरलक्ष  
न॥ शिरवा॥ हांयसोषपरलाप  
अस्थिपीडाग्निरवर्जितम॥



मन

॥ क्षणमलताप कर कुत पाय वि  
चारितिहि ॥ ५ ॥ अथ अजीर्णमु  
रक्त रुणं दोहोरा ववन उदर उ  
षव कुत कार होय जा सु ॥ जीरण  
जुरल रुण कह देषी जंम सुष  
काश ॥ ६ ॥ अथ वेद ज्वर लक्षणा  
नीडा जंम ए फुटत न होय मंग  
अथ वेद प्रलो सुवेद्य विचारि

कैलकुरुणज्वरं वेद ॥ ७ ॥ निमन  
वयन अत्राक्ति तनु उदर पीर फु  
ट अंग ॥ एलकुरुनज्वर दृष्टिके कुरु  
सुग्रंथ प्रसंग ॥ ८ ॥ अमकालज्व  
रकुरुण लिप्यते ॥ सो होरा ॥ शिश  
त प्रसवे दानित कुरुपद दानित ल  
हो य ॥ एलकुरुणज्वर काल के ति  
सहिउपायनको य ॥ अण्ड



नैतः  
५५

रपकलरुण सोरठा सप्तदिन  
अगंधवाह अथवा दस वा सुत  
हे पित्तकफघादसदिन प्रादि  
जानो ज्वरपरिपक्व १०० अ  
यज्वरविमुक्तकलरुण सेहर  
शोरकंडुप्रसेदतनदेहीलमुना  
जासु सुषपाको वडुनुषकिकु  
एककण ज्वरनासु ११ अथल

धामुदरीनचुकी॥चोपई॥सौठक  
टामफुहकरमल॥काकडासिंग  
रुटकचूर॥महजहवीगिलोप  
आवेजा॥सालचुपणीहईपीपरा  
मीरचकलोजीआहिमान॥प्रित्त  
पड॥पत्रअआन॥अगरमासाअ  
रुकुडा॥मिलाय॥लोवनवालाउ  
वीकाय॥तजुपतीसुखुरदारहिजा



नैवः

१२

न॥ मोथपरोलजकायनआन॥

आश्रनयापीपरिमल॥ एओषध

मेलकुसुमतल॥ जैकालिकिराय

तावान॥ सवओषधश्रधततुए

तेआन॥ इनसवहीनकोचूरनक

रकु॥ नामसुहृन्तलघुतिहिधर

हुं॥ चुरणपीजेजलमहिधाली

आंगीजुरभासहीततकाली॥ १२

चो ३३॥ हा घ मोह तं डात न जाय ॥ पो  
हो मो का मूल न साय ॥ हि य ग रं वि  
षा मूल स व जाय ॥ स न्य पात एक रि  
नं न रह हाय ॥ भ्रं मं जु उ च की रोग न सा  
य ॥ का स स्वा स की पी रा जाय ॥ रो ३॥  
अ ने क को न हि ज्ञान ॥ मे न क वि यह  
क लो न मान ॥ १॥ अ प म हा त्व री  
कु रा नि प ने ॥ दो हे रा ॥ सो र मी र



तेने०

१२

चंआरपीपरेटंकआवपरिवा  
गंधकविंपारदकहोदोयटंकए  
आन॥१४॥बीजधातुरेटंकडेपी  
सकुत्रोपधसोय॥रसत्रदकंसो  
मर्दकंकरिगोलिरतिदोय॥१५॥गो  
लिषाजेप्रातउविरसंअदरकंसोवा  
लि॥तापपित्तकंकवायकोनाशहो  
यतंतकाल॥१६॥तीजोडुजोनित्यको

नो सो इज्वर जाय ॥ सख्त विषम सुखा

तज्वर उदर माधिनर हाय ॥ २३ ॥

हा ज्वरों कुशा नाम कहि पंडित ली

जकु मान वैद्य मनो तस वना मति

हि माया की यो वषा न ॥ २४ ॥

सिद्ध जुद्ध ज्वरों कुशा छिप्यते ॥ कोपे

सीप न सम संक्र ॥ हर वाल लो

निला पोषा ॥ कुमा र सं



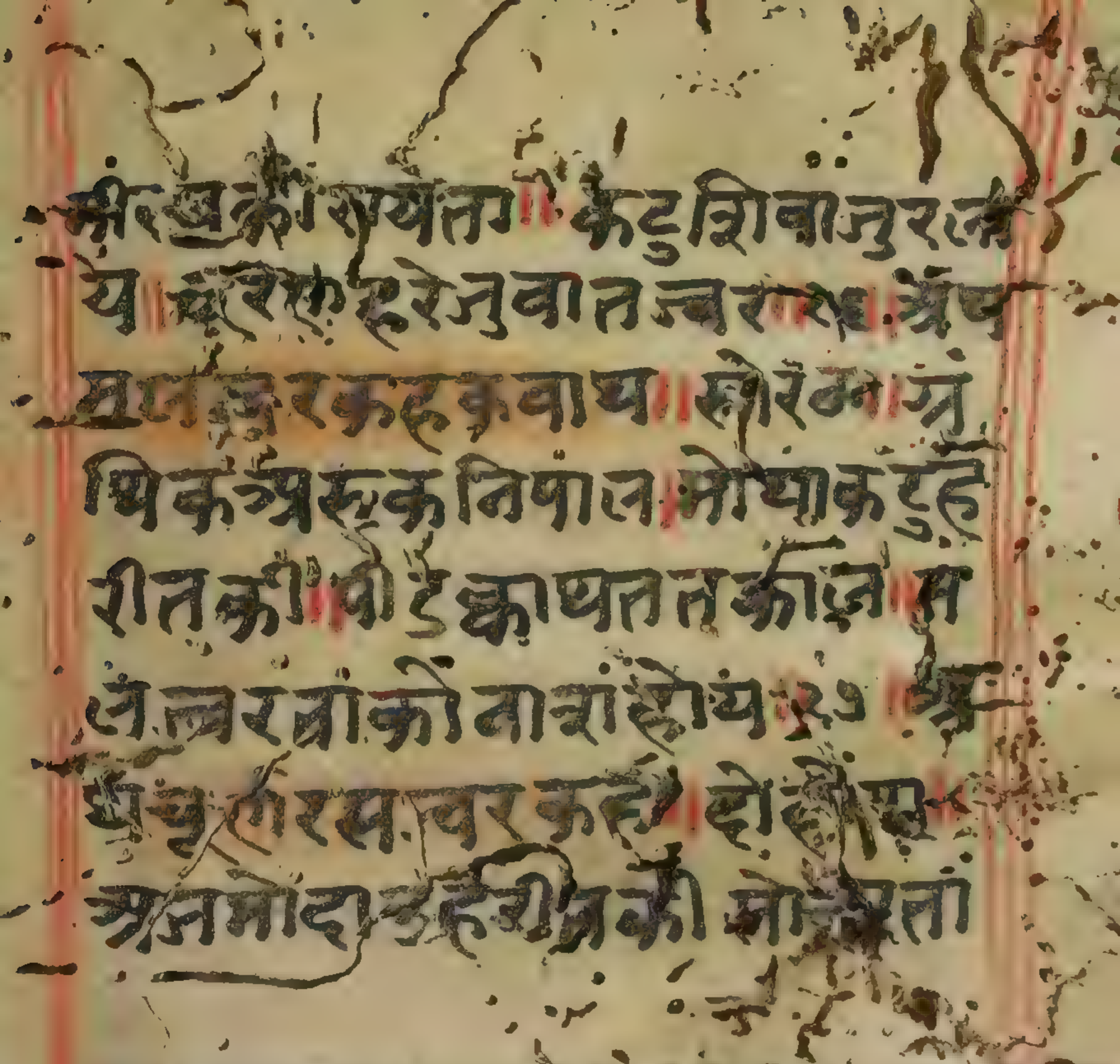
नैनं  
१४

धरलप्रहर ४ अंधमसकर गजसु  
टदेय प्रहर चार पावकरहे ॥ १० ॥ त  
लहोयतो जेऊ ॥ १० ॥ दोहोरा एकर  
तिप्रमानफुनिषंडसोदीजेजासु  
आतुंडधकोपपदेय होयसनेज्व  
रनासु ॥ २० ॥ कद्योज्वरांकुशचर  
गभलियंडितलेकुविचारि नास  
हिरोगअनेकुविधि सिद्धिप्रगटसं

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



वेदपित्तपापडावांनि सों ठें उहीर  
नारसुलेकें दाघपित्तज्वरनाशक  
रेड्ड २४॥ अणकपज्वरको नाश  
दादोरा सोंठि सिरच अरुकाय  
फंल यीपरताहिमिलाय नासजु  
लीजेतीरसुं कफ नुरछिनम डुजा  
य २५॥ अणकायज्वरकहवर  
सारद सोंठि सिरच फंल यीपरभीर



श्रीरखकी सायतग॥ कटुशिवाजुरल  
 ये॥ चरक हरेनुवात ज्वर॥ अच  
 मज्जर कहकवाय॥ स्त्रोरक॥ ग्रं  
 थिक अरु कनिपाल॥ मोया कह  
 रीतकी॥ पीटकायातत काज॥ स  
 लंत्तरवाको वाचा होय॥ २७॥ अ  
 धं चरक सचर कह॥ दोहो स  
 अजमादा अहरी प्रकी मोरता



१६

१६ ॥ हिमीलाय ॥ पीस पीये जल तिरुआ  
सज्वर लिन महि जाय ॥ २० ॥ अथ पे  
द ज्वर कह उपाय ॥ दो होरा ॥ मई न  
की जे अंग कह ॥ तेल तिल लून का पाय  
फेनि मज्जन जलत प्रसा ॥ पे दत्ताप  
॥ मीरा ॥ २१ ॥ अथ दृष्टि त्वरंजर  
॥ दो होरा ॥ पी परिमीर चक्रि  
यंत ॥ विवि ॥ मस ॥ पालि ॥ र



ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ  
ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ  
ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ  
ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ  
ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ  
ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ  
ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ  
ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ ਘੋਰੁ



नमः  
५२ अथ हृदयगाधर  
इत्यादि अरक्ष्ण सों वल्लुह यय वे लप  
तीसामि नर सपाय मोद लक्ष्म लक्ष्म  
कुडों इज्जव हस वलीज  
को वल्लुह नाजा फु निमहि पाय तंडु  
पीसि मि ला स मठा नात  
जिन ज वलेय अति सार पंने डि  
नमो ५४ अथ अति सार को लक्षु



गंगाधर सो होरा सो धातु की मरु  
रस अज सो दा नुरला य पी सा विरु  
सो दी जेय अति सारजु मि सं य  
ति सार को लेय सो होरा  
अरु जाय फल विल कष अ को मा  
या वि जे सो लेय कुं ता नि र  
ति सार कह रात य अ य को रा  
दि का पंजर अ ति सार को सो होरा



श्री ७  
३३

सोभ कदापती ॥ इन्द्र नव मो प्ररा सो भरी  
लाय ॥ काय जु करि के सो जी चे अति  
सारथ जाय ॥ ५७ ॥ चोपा ॥ चवन वा  
लु कुडा फुती स ॥ मोया दे जनु सम क  
वि पी स ॥ प्राको काय जु करो मि लाय  
आणि त अति सार जु लाय ॥ ५८ ॥ अ  
य अति सार कह गुटिका दोहोरा  
लोड इन्द्र नव मो चर स मोया विज्ञ स  
धाय ॥ दीजे जल सो गुटी कर अति सो

राशि हजाय ५५॥

करस मोया वेल जुधाय ॥ वावेद न

सों गुदिलु करी अतिसार नर हाय

६० ॥ अथ अतिसार कह चूर्ण ॥ योथा

सों चल हिंश वच चिवापंती आर ला

य ॥ पीस पीचे जत तसो अतिसार

पंजाय ॥ ६१ ॥ अथ काण्ठा नापे च

क अतिसार कह दो दोरा धनी या

मोया सों वंफु निवाधा निज कय धा



केन०

२३

लि कायजुकरि केदी जीये संग्रहणी  
कोटाखि ॥ ६२ ॥ अथ वाय संग्रहणी  
हंकाय चोपाई ॥ मोपासों व गलाय  
पत्तीसं ॥ तप्तनीर सोपी जेपासं ॥ आम  
अरुख संग्रहणी जाय वाय अलवि  
व मोहिन साय ॥ ६३ ॥ आम अरु चि  
ग्रहणी कहं काय गोयें छेद ॥ लो  
दपटी लजा लुगो या वेल् सो व जु पा  
वऊ धरिया पत्ती सग जोय बाजा

कंठाक्षायमिलावहुं समपी। सिञ्चो  
 पत्रिकापकीजे प्रातउवीकेपीजीये  
 आमभ्रजत्ररुचिसंग्रहणीनाइ  
 नकोकीजीये॥ ५४॥ इतिपंडितके  
 अत्रदासपुत्रनेनसुवविरचितेवे  
 ग्रामकोत्साहजुरसंनिपातत्रतिसा  
 रसंग्रहणीपतीकांरुनाद्वितीयस  
 मउपदेशः॥ २॥ अथयवेसीरोग  
 चिकीत्सातिथ्यते॥ मूरुगुटिका



चैत्र ०

ववेसी कह ॥ रोहोरा ॥ एक मिरन वि  
वि सों वफुनि चित्रा आठ मानि ॥ १ ॥  
षोडश भाग पुनि चरण कर डूँ जु जानि  
१ ॥ द्विगुण ले डूँ गुड जाप के गुटिका  
कर डूँ टोंक दोय ॥ पेट अफारा गुलाब  
दना शबने सी होय ॥ २ ॥ अरु चित्रा  
इंद्रज व सुखि संधा विज ॥ चरण पीजे  
तत्र सों रोग व विषी पेल ॥ ३ ॥ सूनी ववे  
सी कह ॥ अथ सारवा ॥ दुहा बली जु

आनि घृत लवेंग सुं पी जीये । टेक सा  
 त परमात । रक्त वचें सीता सें रहे ॥ ४ ॥  
 रोग वचें सी । कह चरणा । दोहो रं प्र  
 रण वचें अरु मुसलि । कुड़ा सों ठि सम  
 आग । पीसी डाड सों पी जीये रोग व  
 चे सी जाय ॥ ५ ॥ जगंदर रोग कह लेप  
 ॥ दंति हरद सुआ वरे । पीस फुनीर सी  
 लाय । लेप जुकी रे पात उठी रोग न  
 गंदर जाय ॥ ६ ॥ अस्त पिताई आनि



लेनः  
२५

के त्रिफलारससंयोग ताघसिलान्न  
द्रुजानके जायजगंदररोग १॥ जेन  
जगंदरकह ॥ सेंधासो विजुंदरदफ  
नि बटफलवचगिलोय ॥ जायपत्रघ  
लिघाडिये नाशजगंदरहोय ॥ ८ ॥ अप  
गुल्मरोगप्रतीकारविष्यंते ॥ दोहर  
सेंधासोचरसे वहिंग कंदूलानफ  
नित्रानि ॥ अग्निपापीपरअजमोदा  
जवषारविहंगहमान ॥ ९ ॥ इनका

मुरण की जीये घन सों वायु मी ला  
या सो ला मूल विसर चिका अरु अ  
रुचि रू न जाय ॥ १० ॥ अप आ म वात  
रोग चिकीत्सा सो य कह ले प ॥ सर  
ओ सो ठ सुहा जना विस ख पूरा ख  
रहार को जी सहित जु ले पं करि सो  
ज विधा हि निवार ॥ अप पिष्य  
जादि रू ए ॥ आ म वात रोग कह  
पी परि पा ठ करा दिजा नि सो वनु



न  
जीरे अंजया आनि॥ मोया चित्तापीप  
रिखल॥ गजपीपरिमीलायसंस्तुति  
तप्तनीरसोंपीजेपीस॥ आसंवातवे  
दनहीदीस॥ शूलश्रुचिफ्रीहानर  
हाय॥ सासिधासिछिनमहीजान  
१२॥ अथआमवांतकहचूर्ण दोहरा  
सोंठविडंगहरेतकीदेवदारुजुमी  
जाय॥ तप्तनीरसोंपीजीयेआमंवात  
नरहाय॥ १३॥ असकीपीडाउदरकह

उपाय ॥ अथ हृमरोगकोचूर्णं लिख्य  
 ते ॥ ~~केहूआ~~ दारुहृषड् एरंडफुत्रि  
 वायव्यादिगपतीस ॥ मिरच इंडुजव  
 आनिके ॥ लीजे समं करि पीस ॥ १४ ॥  
 प्रवारसोपीजीये आमवात नरं  
 हाय ॥ १५ ॥ ~~अथ~~ की पीक्षा उदर उष या  
 ओषधते जाय ॥ १५ ॥ अथ आमवात  
 कुरुचूर्ण ॥ गुगल शिवा ॥ पुनर्नवा दे  
 नदार गुगलीय ॥ पुनर्नवा लोपीजी



मेन

२०

येनाशं सोज का होय ॥ १६ ॥ अथक्रम  
रोगं कह दो होरा ॥ सैंधा निरुजा वि  
डंग फुनि पीस कुसम क रिकुजाग ॥ तप्त  
नीर सो पी जीये ॥ ना सैक्रम करोग ॥ १७  
अथ पूर्णक्रम रोग कह दो होरा  
त्रिकटा निरुजा ति विचव नीवप  
त्रैरुजाय ॥ मदिर कुहा जु विडंग  
नि चरए ॥ करइ मिनाय ॥ १८ ॥ धेनुमु  
त्रैमहि गाये के लंकर क परिवा न

सप्तसी वसन वपी जिये होय उंदर क  
महाय १५॥ अथ मूल रोग प्रतीकार  
चूर्ण ॥ दोहरा ॥ सोच रहिंग जु सो वि  
फुजि ॥ आग जु सभ करि जाय ॥ पीसपी  
जेतु न तप्त सो ॥ मूल विसृचि जाय ॥  
अथ हिज्वर क चूर्ण मूल कह दोहरा  
मिरचे पीपर सो विहिं ॥ सैधा जीरा  
दोय ॥ अज मोदा जल तप्त सो क बड़  
मूल न होय ॥ अथ मूल वारा दिसा



नेन.

मूलरोग कह ॥ सोर वा ॥ तुंवर पुकर  
मूल ॥ तिन लल ए जव वार दिग ॥ एस  
वहिन मेंचुस ॥ अजवायं तुं विडंग प  
ति ॥ २२ ॥ टंक एक परिवा त ॥ ए श्री प  
श वं जी जी ये ॥ ति वि ति त तंक ॥ नि  
ईव कोचुर ए की जी ये ॥ २२ ॥ त त नी  
रम ही पाया ॥ टंक दो य जी पी जी व ॥  
मूल गुल रु फ जाय ॥ वेंद्य न नो व  
व गें य ॥ २३ ॥ अचंद ए वाय मूल

कह दीजे ॥ दोहोरा ॥ सों वंमिर धंञ्ज  
रुषीये प्रज्जीताहि सीलाय ॥ पीस  
पपीये अतत प्रसों ॥ प्रूल सेग नरं हा  
य ॥ २५ ॥ अचपांडुरोग कमल वाय  
पपीकार ॥ काचपांडुरोग कहें ॥ दो  
होरा ॥ त्रिकलाकडु करी रागता वासा  
निंबगलोय ॥ काचपांडुसहेत तसों  
नासपांडुका होय ॥ २६ ॥ कलाञ्जर



नेन०

२५

नी आं वरे लोह चुन नु मिला स॥ वाटे  
मधु घृत पाय के पांडुरोग रुख लो जा  
य॥ २३॥ अथ कमल वाय कह अवले  
ह॥ दोहोरा॥ लोह चुन त्रिफला कडू  
दो नारज निघालि॥ घृत मधु सो अद  
वाटिये॥ कमल वाय कह टांलि॥ २४॥  
अथ अंजन कमल वाय कह॥ दोहरा  
गेरु हरत आं वरे॥ कर अंजन न य

नाम कमलवायका नाश होय म  
सुरम वृद्धोपाय ॥ २५ ॥ अथ कइ रोग  
उपचार चर्त्ता अकइ रोग कह ॥ दोह  
रा ॥ अस गंध सों वजुपी परे लवंग  
धूपी पाय ॥ तप्त नीर सों दीजीये क  
इ रोग जु न जाय ॥ २६ ॥ अथ गुटिका  
अकइ रोग कह ॥ दोहोरा ॥ अक म  
ल अरु लवंग कुनि पीर ॥



नेम  
३०

रि-आनि॥ गोली पाजे प्रात उवि होय  
दरि की हाति॥ २१॥ अपरु इजे गऊ  
हचरणी॥ सोरठा॥ त्रिफला सो उ वि डं  
ग मिरचे कणा जु मोष ही॥ पी परि  
मूल न वेग देवदा रुत जला ईची  
२२॥ इति श्री मंडित के शानंदा तपु  
त्रनेन सुष विरचिता यां वैद्यम तो  
संवत् १८८१ गंदरगुलम आमवत

कम मूल्यो डुरोग कम लवां हर्ष  
रोग प्रतीकार नाम तृतीया स मुद्राः  
३॥ अंघ्रि चकी कहना स॥ दो  
होरा॥ कीट म विक्लिता परस पी स ड  
हो नोपाय॥ नास जुही ने प्रातं वी  
ऊचकी व डुरन आ॥ १॥ अंघ्रि  
चकी कह रही हो होरा॥ मिरचे  
मी सरिल वंग फुनि जिनेर कीया



नेन  
३१

लि। माधुसौं पाजे पाततु वि हीच की  
पीरा टालि। २। अप हीच की कहु धूणी  
दोहोरा। मन सिलहर दजु आत के  
पीस फुसस करि जोग। चंदन जु धर  
नी दी जीये नास ही हीच की रोग। ३।  
अप छ। दिरो म प्रतीकार दोहोरा।  
चंदन मोषई जाई ची जा जा। कृणा  
लवंग। न गिरी अरु कमल फल

॥ १ ॥  
॥ २ ॥  
॥ ३ ॥  
॥ ४ ॥  
॥ ५ ॥  
॥ ६ ॥  
॥ ७ ॥  
॥ ८ ॥  
॥ ९ ॥  
॥ १० ॥  
॥ ११ ॥  
॥ १२ ॥  
॥ १३ ॥  
॥ १४ ॥  
॥ १५ ॥  
॥ १६ ॥  
॥ १७ ॥  
॥ १८ ॥  
॥ १९ ॥  
॥ २० ॥  
॥ २१ ॥  
॥ २२ ॥  
॥ २३ ॥  
॥ २४ ॥  
॥ २५ ॥  
॥ २६ ॥  
॥ २७ ॥  
॥ २८ ॥  
॥ २९ ॥  
॥ ३० ॥  
॥ ३१ ॥  
॥ ३२ ॥  
॥ ३३ ॥  
॥ ३४ ॥  
॥ ३५ ॥  
॥ ३६ ॥  
॥ ३७ ॥  
॥ ३८ ॥  
॥ ३९ ॥  
॥ ४० ॥  
॥ ४१ ॥  
॥ ४२ ॥  
॥ ४३ ॥  
॥ ४४ ॥  
॥ ४५ ॥  
॥ ४६ ॥  
॥ ४७ ॥  
॥ ४८ ॥  
॥ ४९ ॥  
॥ ५० ॥  
॥ ५१ ॥  
॥ ५२ ॥  
॥ ५३ ॥  
॥ ५४ ॥  
॥ ५५ ॥  
॥ ५६ ॥  
॥ ५७ ॥  
॥ ५८ ॥  
॥ ५९ ॥  
॥ ६० ॥  
॥ ६१ ॥  
॥ ६२ ॥  
॥ ६३ ॥  
॥ ६४ ॥  
॥ ६५ ॥  
॥ ६६ ॥  
॥ ६७ ॥  
॥ ६८ ॥  
॥ ६९ ॥  
॥ ७० ॥  
॥ ७१ ॥  
॥ ७२ ॥  
॥ ७३ ॥  
॥ ७४ ॥  
॥ ७५ ॥  
॥ ७६ ॥  
॥ ७७ ॥  
॥ ७८ ॥  
॥ ७९ ॥  
॥ ८० ॥  
॥ ८१ ॥  
॥ ८२ ॥  
॥ ८३ ॥  
॥ ८४ ॥  
॥ ८५ ॥  
॥ ८६ ॥  
॥ ८७ ॥  
॥ ८८ ॥  
॥ ८९ ॥  
॥ ९० ॥  
॥ ९१ ॥  
॥ ९२ ॥  
॥ ९३ ॥  
॥ ९४ ॥  
॥ ९५ ॥  
॥ ९६ ॥  
॥ ९७ ॥  
॥ ९८ ॥  
॥ ९९ ॥  
॥ १०० ॥



नेक

३२

सरे गं कह चूरी ॥ सों तपी परे का ऊँडा  
सिंगी ॥ पुष्कर मूल कचुर जा डेंगी ॥ मो  
थ मिर च जल त प्र जु ले ऊ ॥ महा स्वाम  
काना श करे ऊ ॥ ७ ॥ स्वास का स कह  
चूरी ॥ मंत्ररी या छंद ॥ कड़ी आई पुष्क  
र मूल जानि ॥ वा सा अरु सों वि कुल  
य गानि ॥ एपी स पीये संगत प्रतीर  
त वं स्वा म सुकी जाय पीर ॥ ८ ॥

ਸਮਝੀ ਪਾਸ ਕੀ ॥ ਦੋਹਰਾ ॥ ਸੋਚੁ ਵ  
ਹੈ ਪੀਪਰੇ ॥ ਕਾਕੁ ਡਾਸਿ ਜੀ ਜਾਨਿ ॥ ਆਰ  
ਜੀ ਨ ਕੁ ਆਰ ਚਿਲ ॥ ਏਸ ਮਧੀ ਸੁਭ ਆ  
ਨਿ ॥ ੧ ॥ ਗੋਲਿ ਦੀ ਜੇ ਨੀਰ ਸੋ ਟਾਂਕ ਏ ਕ  
ਸੰਘ ਸੋਧ ॥ ਨਿੰਨਾ ਜੁ ਸੁਖ ਮੇਰਾ ਧੀਧ੍ਰਿ  
ਸਥਾਂ ਸੰਕਾ ਹੋ ਧ ॥ ੨ ॥ ਕਾਸਾ ਹੋ ਚੜ੍ਹ  
ਪੀਪਰੇ ॥ ਏਸ ਮਧੀ ਸੁਭ ਆਨਿ ॥ ਗੋਲਿ ਕੀ  
ਜੇਤ ਹੋਤ ਸੋ ਹੋ ਧ ਪਾਸ ਕੀ ਹਾਨਿ ॥ ੩ ॥



जेन०

३३

अथ मंदाग्निसिद्धां सिकह चूर्ण ॥ वासा  
सो वजु पीपरे वच कटाई पाय ॥ पो  
स पां ये जल तप्त सो पां सिद्धां सिजा  
य ॥ १२ ॥ अथ मंदाग्निसिद्धां सिकह चूर्ण  
मंदाग्निकह ॥ दो होरा ॥ पीपरित्त  
हरितकी ॥ सुविषो चर पाय ॥ तप्तनी  
रसो पीत्तीये मंदाग्नित्तु मिताय ॥ १३ ॥  
अथ मंदाग्निसिद्धां सिकह चूर्ण ॥ दो होरा ॥

भाशिवाजुपीपरे औ फुतिचिन्नाचा  
लि ॥ पीसपीयेजलतप्रसो मंदाग्निक  
हटाति ॥ १५ ॥ अथरुधाकरगुटिका  
दादोरा ॥ त्रिकुटात्रिफलालो नहि  
जं ॥ अरुअजवाइनमेलि ॥ समगुड  
गोलिकीजीये मंदाग्निकरुपलि  
१५ ॥ अथचूर्णमंदाग्निकह ॥ चोपाई  
सेधासोंवविडंगआनि ॥ त्रिफलाति



नैन  
नैन

बीलमंगवानि॥ चित्ताहिंगअजवाय  
नजाति॥ जीरेदोनोवारदमाति॥ इन  
सबहिनकोचूरएकरहु॥ तिनपुटे  
गुनिबुकीधरहु॥ टेकरएकजोप्रात  
उविषाय॥ मंदागितुनमांदिपर  
य॥ अचविस्रचिकावतीकार  
सोरवा॥ तेलतिलीकीआतिकरप  
दमदनकीजीय॥ नासविस्रचिका

जानि सिद्धियोगपंडितक १७  
 इतिपंडितकेरावदास्तुत्रस्तुसुष  
 विरचितेवेद्यमनोत्सवे ॥ हिक्कातार  
 कासस्वांससंदांगि विसृचिकारे  
 गप्रतीकारनामदत्तुर्षससंज्ञेरा  
 = ४ = ॥ अष्टाष्टद्वैहिअवल  
 ह दोहारा जीमसंघाहिंगसे तेल  
 कटुमहिपांय जेपसुक्तेप्राप्तुव



निज  
३५

ॐ रं वृद्धकह ॥ १ ॥ ॐ उ वृद्धकह  
चूर्ण ॥ दोरा ॥ त्रिफलाचूरण की जी  
ये ध्वे वृद्धकह मदि घालि ॥ प्रात जू पीजे  
सात दिन ॥ ॐ य सो पं क ह दालि ॥ २ ॥  
ॐ वृद्धकह ॐ वृद्धा ॥ दोरा ॥ ए रं उ ते  
ल विहाल फुनि ॥ पय घृत के सं योग  
प्रात जू की जे सात दिन ॥ ना से ॐ उ ज  
राग ॥ ३ ॥ ॐ र वृद्धकह लेप ॥ जी रं अ

ॐ उजु कठफुनि चवह कुवे स्त्रिं लाय  
काजी सोजव पीजी ये अंरु जमि  
स ३३ अथ प्रमेह प्रतीकार ॥ प्रमेह  
करवर्ण दोहोरा ॥ मुह मुंटी दाडी  
मेकली सेतक य सम घंड ॥ दिख रह  
चूरी टंक उदय टले प्रमेह विहड ॥  
अथ प्रमेह वर्ण ॥ शं पा कुली ईला  
यची शिलाजित सम घंड ॥ सतनी



३०  
२२

रसो पीये रलेष मेह विहंड ॥ ५ ॥ अ  
थ मंत्रः ॥ कुरु प्रतीकार ॥ ए लोहि का  
थ ॥ दोहोरा ॥ ए ला वा स गो वरु ॥ मुद्रा  
हवी जुरला य ॥ पीये टं क ए करे ए का  
पा पा ए ने द जु मिला य ॥ ६ ॥ अथ चू  
मंत्र क धू क ह ॥ दोहोरा ॥ ए रं ड वा सा ॥  
ला य ॥ पी ए रु ते ज र ला य ॥ दधी सो  
पी जे आ तर वि मंत्र क धू जु मी टा य ॥ ७ ॥

अथ मन्त्रराधपतीकार ॥ अथ देवम  
न्त्रराधकह ॥ दोहोरा ॥ मन्त्रविष्ट  
के तेलकटुकमहिद्यालि ॥ ना  
विलेपजोकीजीये ॥ मन्त्रराधकह  
तालि ॥ अथ कायमन्त्रराधकह  
चोपाइ ॥ जो परुजवासाहेंडानि  
पाषाणजेदकनपावजावि ॥ यह  
कायजुपीनसहन ॥ जि ॥ सो मन्त्र



तेन  
३३

रोधमंका लपेलि ॥ अथ चूर्ण सूत्र  
रोधक दोहोरा ॥ त्रिफला सैन्धवा गो  
षरु बीजैषर हटाय ॥ तप्तनीर पो  
पीजीये सूत्र रोधनं रहाय ॥ अथ  
मृगी गोज प्रतीकार ॥ अथ पुष्करादि  
काथ दोहोरा पुष्कर सूत्र किराय  
ता क्रीमि सेंठ कंचूर दारु हलद अ  
रुंद नडु वच मांझा पीपर मूल ॥

उचयाकुवसारउड। काप्रजुने  
आनि॥ अपसमारउमरु। फुरो  
गुरुजीकीहानि॥ अपनासम  
गीकहसेहोरा॥ मिरचेसेहडमेघ  
सकुदिवसएकप्रमान॥ जलसुंन  
सजुहीजीने॥ होयमरुगीकीहानि॥  
अपकुरुरोगप्रतीच। ब्रह्माइ  
निफलवासाचिंतपदेन वैमि



जेन०  
३८

लोमससमकरि-ओलि॥ चूर्णपीजीमे  
जलहृ॥ थालि॥ कुष्ठरोगनासेतत  
काल॥ १४॥ अथ॥ चूर्ण॥ कुष्ठरोगकुह  
ठंड॥ त्रिफलांमज्जितवजिलोयकुह  
की॥ त्रिवनिसात्तजानि॥ होयवचंद  
रुहलदविष्टंगवासाएसमानजुश्री  
नि॥ मसपी॥ चूर्णकरकुविधसोपी  
जीरुपाणि॥ पुष्टरोगजुप्रबलभा

जे नास कइ अंग १५ ॥ अथ मंजिरा  
हिं कास वातरक्त कहं ॥ दोहे रा मे  
त्रिषु त्रिफल कइ ज नी निव मिले ॥ ग  
य ॥ देव दसरु वचं पीसके काषजु  
कीजे सोय ॥ १६ ॥ प्रात उबीजो पीसी  
ये वातरक्त नरहाय ॥ अश्रु मंड  
रु मा मगद कं डु रुं र किरा पु ॥ १७ ॥ अ  
प स्ये त कु र कह्ये ॥ रुषे सर इं द



मेन

गुंजावीज कववचवाता ॥ रासम  
पीसइ ॥ लेपुकीजे ॥ काजी  
आनि ॥ स्वेतुकुह ॥ सासतवजाति ॥ १८  
स्वेदकुकुहद्वितीयलेप ॥ दोहोरा  
मनसिजचित्रकवावंची ॥ पवाडन  
समालाय ॥ काजिसो ॥ जवलेपीये  
स्वेतकुकुहतरहाय ॥ १९ ॥ अथकंडु  
कहवर्ण ॥ दोहोरा ॥ हरदवावची

नीलदल अरु आंवरे मिलाय बंकरि  
बुंगो मूत्र सां पीवत कुंडुआ ॥ २० ॥ अ  
मकहलेप दोहारा मिरबेअ  
रुसिदूर फुति माहि पिघत संयोग  
मांघे लेष तु की जीये ना से पा मां रोग  
२१ अथ कुंडुआ द विचित्रि की कहल  
न दोहारा गंधक चोष विट्ठो फुति  
कुवंसिंगर फजाम हरन पवांसि इ



सं०  
५०

रफुजि प्रीसकु समकर आति ३२  
मुनिदिउ पत्रता बूलरस लेपकु  
इनेह मिलाय आमादाद विचिदि  
का ना सेए ते सेग ३३ सद कहले  
पु-चो पाई इपनिगंवा वजी वानि  
सैधा सिखा पापडा आति लेप मुनी  
अको विद्यालि सद पदुर ना सत  
तकाल ३४ आपले पलत कह

होहोरा ॥ चंदनकर सेना जु पाय  
कमलशिवाजीज संसनाय ॥ लेप  
जुकीजेजल सुंदरलि ॥ लूतविचा  
कहपुलमहि टालि ॥ २६ ॥ अरुपिंज  
रागप्रतीकार ॥ चोपाइ ॥ रुदलीपा  
तहीअ समकरि ॥ तामहि ॥ रहमिली  
य ॥ लेपजुकीजेबीरसुं मिंजु रोगन  
रहाय ॥ २७ ॥ लेपपिंजरोग कह पा



नेत्र  
४९

चरित्रा छंद चंदनहरतालकपुरवा  
नि सुहागा मूली बीज आनि जेनि  
रीरस सोलेप लय तो धि न संगति  
नमो हि पुराय २८ धि न रोग क्रह  
लेप सोरवा गंधक चंदन आनि  
नीबुर स सोलेपीये दिव संसातप  
रिवात धि न रोगा न न नोरहे २९  
अथ नास्त्यारोग प्रतीकार अथ

दग्धकरी शुक्तिका दधी सो पीसे  
सं निजु ओषध पंडित कह्यो नाश  
ना रुवा होय ॥ ३० ॥ अपरा स्त्रियां त  
कर ओषध का कजंघा को मूले  
पीस देयति हि काल पीदार कपका  
हं फुनि एते ना सही तल का ल ॥ ३१ ॥  
इति श्री पंडित वैद्य केशवदास पुत्र  
नेन सुष विरचिते वैद्यमनोत्सवं



नेन०

४२

कुण्डप्रमेहसूत्रहस्तसूत्ररोधश्राश  
मानकुष्टकुण्डपामादादविचचिक्का  
लेपिभननासाशस्त्रघातारोगप्र  
तत्कारनामपंचमोसमुद्देशः ॥ ५ ॥  
अथवातरोगप्रतीकारवातरोग  
कहगुटिकापाचरीशाबंदअस  
गंधसोवतिलसामजानिओफु  
निसमानतिहिषंडआनिओवध

जुवाय घृत सोमी लाय ॥ सो वात व्य-  
भिच्छिन्न सोहि जाय ॥ १ ॥ अथ चूर्ण वा-  
त रोग कह ॥ दो दो रात्रें गु संजाव  
ने प्ररा मुंडिता हि मिलाय ॥ २ ॥  
पाजे टां कुचे वात रोग न रहाय ॥ ३ ॥  
अथ वात रोग कह गुटिका ॥ वो पाई  
पीपर चीता अ संगंध जानि ॥ चव  
कु विटंग अ जे वासन आनि ॥ सो ठ



नेत०  
५३

कलोजीपीपरमल एतेओषधमेव  
कसमतुल दुनेगुडसुगोलिकरकु  
मित्रोय दोहोकेप्रमानलेध्वरकु  
प्रातहिउवियोगालिवाय वाय  
विकारओरासिजायि ३ अथके  
षवातपीडाकद दोहोरा सोव  
ओरएरुंडरसदेवदरुनुगलोय  
काषनुकरिकेपीजीये पीडावाय

नहोय ॥ ४ ॥ अथ लघुविषगर्भतैल  
नायकह ॥ चोपाई ॥ नीवातेलसेर  
एकजानि ॥ तलधर ॥ रोरसज ॥ नि  
गुंजा ॥ बीजधर ॥ बीज ॥ टाक ॥ पंच ॥ च  
सबलीज ॥ विधि ॥ सोते ॥ ननुकी ॥ जिआ  
नि ॥ लघुविषगर्भतैल ॥ य ॥ हजा ॥ नि  
मर्दन ॥ देही ॥ की ॥ जेता ॥ हि ॥ वात ॥ रोग  
बौरा ॥ सिजा ॥ हि ॥ अथ ॥ पित्त ॥ रोग ॥ गुप्त ॥ ती  
कार ॥ अथ ॥ चूर्ण ॥ पित्त ॥ कह ॥ पाघरी



संज्ञा  
१४॥

साहं द॥ इलाची कपूर उसीर वानि  
आवलेचंद नतल आति॥ पीसतुं पी  
वेअलमिलाय॥ तोपित को पंढित मा  
हिं ज्ञाय॥ ६॥ अथले पद धक ह  
होहोरा॥ वेली पल्लव आंवर॥ चंदन  
छटजु मिलाय॥ जल सोले पफुचर  
नजुग॥ दोध अथाज मिटाय॥ ७॥ अ  
थ छंद उवा की काह चूर्ण॥ होहोरा  
पीसि सुहोरा कमल कल अरु ईला

इची पाय ॥ सीततीर सों दीजीये छे  
इवा की जाय ॥ ८ ॥ अथ कफ को प्रती  
कार ॥ केंसर मिरचे पीसी करि मोडें  
जीले पाय ॥ मारो तो बाल धुंग फुमि  
हसम पीसि निलाय ॥ ९ ॥ पानी सों जो  
पाइजे टोंक अइउ विपात ॥ कफ पा  
सी अरु स्वास अम होय रुई को घा  
त ॥ १० ॥ कफ रो गाव ह बर ॥ दोहारा



नेन०

५५॥ कृष्णकटाईलवंगफुनि सो। विचारं  
गीपाय। पीसपी वेजलतप्त सो। कृष्ण  
वो। मोनरहाय॥ १०॥ अथ गंदे माल प्र  
तीकार दोहोरा। पापिरस रुकच ना  
रफुनि त्रिफलासमंकरि वांनि। की  
सपी येजलतप्त सो। ना स्रज्जीराजा  
नि॥ ११॥ अथ अजोरकहलेप भारं  
गीअरुसो। वफुनि तें। जलमहिम

लि॥ कं वचुवाकोलेपकरि॥ कृतिन॥  
लीरापेलि॥ १२॥ अथ मुखरोगपत्नीका  
रचूर्णं मुखपाकं कह॥ तपपीरइला  
यची सुतकथजुरलाय॥ मुखमेमेल  
ऊपीसकें॥ नररूपाकृजुमीटाय॥ १३॥  
दंतरक्तप्रवाहताकृदंरूपध॥ शोह  
रा॥ रसवांसेकोसहसकृतिमप  
ऊजुदोनासीय॥ पामिहंवाटेसात  
दिन॥ दोतरक्तनहीहोय॥ १४॥ दंत



नेन०  
५५

दुकीरक्तप्रवाहपाशाकहओषध  
दीहोरा॥ वासामोयाकथफुनि कं  
डूकवजोवाति॥ लोडमजीवमिलो  
यके पीसडुसमकरआति॥ १५ ॥ ओ  
षधलेदसनजिमलेस्तप्रवाहसु  
वाय॥ पी॥ कीरक्तप्रवलडुषनिम  
षमहीनुप्यार॥ १६ ॥ ओषधमुषपा  
ककह॥ दीहोरा॥ त्रिफलादाषजि  
लोयफुनिचंचलीददपाय दारुह

मदचक्रपाव फुनि ॥ एलीजेसमनी  
स ॥ १७ ॥ कापजुकरि कुरली करडु  
छोतामहिमधुघालि ॥ मदनपाक  
रतकोशमन एनासहीततकाल ॥ १८ ॥  
मुषकीलकहं होश ॥ सरसोसंधा  
लोदजवच ॥ एओरुसमत्रानि ॥  
जलसोवदकजुलपयि ॥ सुसकील  
काजानि ॥ १९ ॥ मुषगईकीबोध



जन्म

५५ तारंग छल्लीरातिलत्रयाम जीरास  
रसोपीतफुनि पीसफुलेपफुआनि  
मुषकीछाईनरहे २० छाईकंदल  
प दोहोरा सैंधालादिगुहरदफुव  
एओषधसमन्नाग मौबुरससोलेपो  
ये मुषकीछाईजाय २२ अषनासि  
कारोगपरीकार दोहोरा हवकये  
नहरीतकी दाडिमफलमिलाय सीत

नीरसों ना सदे रक्तगमन सो वाय  
 २२ ओषध पीन स रोग कह सो व  
 मिरच अरु पीपरे गुड सो वाजे आ  
 नि पीन स वेहर सी स डुब ना सई न  
 हों को जानि २३ अमना स पीन स  
 कह दोहोरा मिरचे अरु बंदा ल  
 फल पर मित्रि ले कर ने लि ना सनु  
 दीजे नीरसों पीडा पीन स प लि २४



नेत्र०

४८ अथ नेत्ररोगप्रतीकार ॥ अथ लेपने  
त्ररोगकद ॥ दोहोरा ॥ रसवतलो न  
हरीतकी गेरु हलदमी लोय ॥ पल  
केउपरलेपके नेत्ररोगनुमीटाय ॥  
२५ ॥ अंजननेत्रकद ॥ कातिकफल  
अरुजफुनि महिदोर ससंयो  
ग ॥ लोचनअंजनकीजीये रहेनये  
द्विगे ॥ २६ ॥ अथ अंजनरात्रिअथ

कह दोहोरा ॥ सुरमा अरु रज जुगल  
करिती नो सनी बंध ॥ नैन नी अंजन  
की जीये होय न लानि स अंध ॥ २७ ॥  
सावन जेरे वाल को तिल अंजन नय  
नाहि जाला को लानि स अंध फुनि  
निमष वीच नरहाय ॥ २८ ॥ अथप  
उवाज कह देख ॥ निरचेरु लोए  
गुड हती नो समझान ॥ नख सौले



कैत०  
४५

पुउउ के क्षय पउ वाल जान २५ रग  
डानेत्र रोग कह ॥ दोहरा ॥ सैधा कइ  
वाते लपुनि ॥ कांस पात्र महिं घालि  
करि रगडा अंजन कफु तेन पार कह  
गलि ॥ ३० ॥ सब लदीय कह अंजन  
दोहरा ॥ यो रात सत संभ मिंसरी मो  
ति मुंगा अनि ॥ तट्ट रो कफु नि ली  
जोयें इत का एह प्रवान ३१ ॥ करन

दशानश्रुचाकसुं काहीईनमहि  
लि॥ नवत्रयटांकनुलीजीये॥ कांस  
पात्रमहिडालि॥ ३२॥ उलिपयसोंपी  
सके दृगंजनंजुकरेऊ॥ सबलवा  
यकानाशहोच॥ दग्धमातपपरिऊ  
३३॥ सबलवायकारगडा॥ होहोरा  
मृतकतांवाजसकुनि॥ नीलाप्रोय  
आनि॥ सीपीचुनाकरकडी॥ साग



नेन०

५०॥

रकेनसमान॥ ३४॥ कोसापात्रमहि  
राडीये॥ घतगोक्रात्रमिला॥ निनि  
अंजनजोकीजीये॥ संवलवायनरहा  
य॥ ३५॥ अथपोटलीनेत्ररोगकहं॥ हो  
होरा॥ जीराकाहिफटकडी॥ त्रिफला  
सोएपाय॥ रसवतहायो॥ हलंदफ  
नि॥ ताम्रहलोदमि॥ त्राय॥ ३६॥ ए॥ ओष  
धसप्रआनिके॥ करडुपोटलिपीस

सर्वपीर को नाश होय तेन निर्मलाही  
स ३७ ॥ अंजन तिमर को लापा रावा  
म कह दा होरा ॥ सुरमा सेंधा शंघ  
फुनि मवसिल विकटु आनि ॥ कांति  
फला अरु मिसरी ॥ सागर फेन समान  
रू ॥ अंजे छे लि दुध से ॥ ति मिर रोगन  
रहाय ॥ फोलायो रूहाय फु बि नयन  
पारजु मियाय ३९ ॥ कर्ण प्रतीकाय दा



नेन

५१

होरा ॥ स्तक्रालसनतिलपत्ररस कान  
बीच सोपाय ॥ बहरापीरा पूजा दुषः  
तेरोगनसाय ॥ ४० ॥ कानरोगका औष  
ध ॥ दोहोरा ॥ आक्रपात सहि लं सुनघ  
सिंतामहिदाना सोय ॥ कानवीचरस  
मेलीये ॥ लूमीस्तूलनही होय ॥ ४१ ॥ देव  
दोरुवसो विष्णु सैन्धा सोफमिल  
ये ॥ अजामस्तु तप्तकरि करनव्या

जुमीलाय ॥ ४९ ॥ शिररोगप्रतीकार ॥ हो  
होरा ॥ देवदारुकुठकायफल ॥ अरंड  
तेलजुमीलाय ॥ कांजीसोंतबलेपी  
चे ॥ वातसिराजुमिताय ॥ ५० ॥ कफशि  
रवर्तकह ॥ पाछंरीयाहंद ॥ अरंडरा  
सन्नाकुंवजाति ॥ उडवचनिधीपरा  
मोयागानि ॥ जलतंदेसोपीसनाय  
कफशिरावर्तततकालजाय ॥ ५१ ॥



नेन०

५२

पित्तरोग कह लेष सोरग चंदनहि  
वाकपूर दुर्ब उसीर अरु आंवरे  
कमलबीज हफु बेर पित्तं शिरोव  
तेनाश होय ॥ ७५ ॥ लेष शिरोवर्त्ति  
कह दोहोरा कुवं मिरच अरु का  
यफल एरे डज उव च घालि तप्त  
नीर सोलवीये शिरोवर्त्तिक कह राखि  
७६ ॥ लेष शिरोवर्त्तिक कह दोहोरा

परिमीस्वहरीतकी एलीनोसमभासा  
कांजीसेतिलेपकरि पीरात्रिरकीजा  
य ॥ ४७ ॥ आधाशीशीप्रतीकार ॥ दे  
होरा ॥ कुवपीपपरेसारिवा वंचमु  
हवपीआन कांजीसेतिलेपकरि  
आधाशीशिहानि ॥ ४८ ॥ इतिश्रीप  
डितवेद्यकेशवशासपुत्रनेनमुष  
विरचितेवेद्यमनोत्सवेवातपित्त



नेन०

५३

क फ ग ल म धि ना सि का ने न गिरो  
वर्ति आ धा शी सिरो ग नाम षष्टोऽस्य  
मुदेरा ॥ ६ ॥ अप पेरै की ओ षष्ठ  
दी होरा गज के सरत पृषी र फुंति  
चंदन वाला पाय ॥ तें डुल जल सोल  
प करि प्रहर रोग यं ना यं ॥ ७ ॥ अपर  
ओ षष्ठ गज कुं कु म तें डुल सीता पी  
जै नीरमी लाय प्रहर रोग को नाश

होय मसुर साल नीषाय ॥ २ ॥ स्त्री कह  
पुह प हो न को ओषध ॥ सो वि नि र च  
अरु पी पर ॥ बल डंडी ले पाय ॥ तिल के  
काय सो पी जीये होय पुह प अ धि क  
र ॥ व न्ती वी ज फु नि गु ड क ण ॥ अ क र  
मे न फल आ न न ॥ दं ती सह दुं दु ग्ध सो  
वी ती कर दु ज्ञ ज्ञान ॥ ५ ॥ न ग मे रा वे प्रा  
न अ चि हो य प ति स नारि ॥ ओष ध जो



नेन

५४

गणेशस्तकदि कहो पुह उपकार ५  
ओषध गर्न हो नका मिरज फलत्र  
रुजाय फल सागर के न मिलाय वा  
गुवडिंगई लायची गज के सर सप्तना  
य ३ बंध्या गरन जु होय पिर योनि  
होष स्वजाय शाल मुदं क गोस्तीर  
यत यह फुति पप कराय ६ ओषध  
गर्न हो ए कह बोपाई मिरचे सोठ

मुषी परिआनि ॥ गजकेसर जु कटाई  
कानि ॥ जो घृत सों जो पीवे वाल ॥ तारु  
ह गज रहे तत काल ॥ ५ ॥ श्री बध गम  
होए का ॥ सोरठा ॥ गजकेसर अस  
गो ॥ सित गो रोचन सालि ॥ पीस पी  
ये गो की रसों ॥ गज होय तत काल ॥ १०  
गजकेसर गो सर्पि संग रितुं अंत क  
रे पाव ॥ दुग्ध जात जो जम करे ॥ होय



मैव.  
५५

गर्भते सुजात ॥ ११ ॥ धेनु दुग्ध सोम  
स एकरे पानि जो नार ॥ तृतीयादि  
सकृत् श्रुत हि ॥ होय गर्भ निरधार  
॥ १२ ॥ गर्भ पात हो हार ॥ आय लजा  
लुक मल कल मुहल विन्न रुपा  
तंदुल जल सोपी जीये गर्भ पुनः हो  
जाय ॥ १३ ॥ कष्टि स्त्री का ओषध हो  
हार ॥ पाट जड़ी जड आनि के कर

लेप पगधाय प्रसृत होयतत कास  
१४ अपरंच शोर रा जउ मुडी की  
आनि कटि बंधन कष्टी वधर नास  
धीर को जूनि होय प्रसृततत कास  
हो १५ नग संकोचन दोहोरां  
पांचकु एला फट कटो मायिलोड  
कचूर नर जडी कनि एर दिल ना  
जगमहि चूर १६ प्रदत ग्रे विचपा



नेन

॥६॥ यके करे पुरुष सो नोग ॥ जो निजु मति  
में को चहोय ॥ रहे न को ई रोग ॥ ७ ॥  
पर प्रयोग ॥ दो होरा ॥ मेल कुंधा ॥ फर  
कुंडी ॥ माजु लोध जु मेलि ॥ वेर जड़ी पु  
सिं पाय के ॥ सी कुन मा इलि ॥ १८ ॥  
अपरं च ॥ त्रिफला लोध जु खात की  
जामल तु जा जु होय ॥ यो न ले पजो  
की जीये ॥ दूध कुमारी सोय ॥ १९ ॥

कण जो निका ॥ सोरवा ॥ मवाजु गोत्रा  
आनि ॥ धोवे जो निजु प्रात उठि ॥ होय  
संको चन जान ॥ सिद्धि योग पंडित कहे  
२० ॥ गोली ॥ कोचन की ॥ दोहरा ॥ क  
हो ॥ कहर स मंगोली करि मधुपाय  
जो नि निच जवरा घीये ॥ ससी क  
न जाय ॥ २१ ॥ मोनि संकोचन दोहरा  
नीव पात को काप करि ॥ धोवे सोनि



नेत्र०

७७ जुनुतीय अति दुर्गंध जुना राहोय आ  
तेदितव दुपीय २२ अप कुचक्रना  
रता कह दोहारा अस गंध मं रुधाग  
न कणा वच कनि अर कु व सो च लेप  
जुकी जे तीर सु क विनही कुच दोय  
२२ सोरव जल तंदुल के आनि  
नास देई नय दिव सही क विनहीय  
कुच आनि प्रगट योग पंडित कहै २४

ओषधमणवे लका । निशाकुमारिन  
सुकरि कुचउपर जुधरेऊ । मणठे लेऊ  
नाशोहोयं सिद्धिगो गजाणेऊ । २५ । पुरु  
मचिकीत्ता । ओषधदीर्घस्व लहली  
करण कह दो होरा । विजया अर्कक  
नेर जइ रसाधं तह रायाव । गोलीजीजे  
पासकर लीजि आहसुकाय । २६ । पुरु  
महत्त सोया सिकरि कर फलैप इंदिय



नेन

१८

दीर्घकवि न स्थूल होय देवत ना जनी  
शु॥ २७॥ अपरं प्रयोग कचा कुव गज  
पीपरि अस गंध वला सु सोय नुरंग  
स्त्रन वनी तसो लिंग मुखाल स महो  
यः २८ लेप स्थूल वृद्धि कह अस गंध  
पारद गाज कणा रजनी सीता मि लाय  
लेप जु कीजे लिंग पर वृद्धि स्थूल हो  
य जाय २९ अप स्थ्यं नन अजा सेह

३०० इध फुनि वल जे मूज ड पाय ॥  
मर पदना न जु ले पीये चं न होय अक्षि  
काय ३० मदन प्रकाश चूँ लियते  
हो हों ॥ तालम बाणा मुसली सो व न  
या डो पाय ॥ कौंच बीज अस गंध फुनि  
से मध पुह प मिताय ३१ कजा सता  
बुरी मोचरस अवर लिस्टे जानि सी  
ता अर्थ सो पी जीये व फल नार्ति म  
नि ३२ अपर गुरि को मुं कुम सिंग



मेन

रफजायफलतालमवाणापाय ॥ को  
चवीजतजमंस्तकी अकलकराजु  
लाय ॥ ३३ ॥ तुंवरलवंगतमालेपत्र  
मुनिअजवांयूनआदि ॥ तीनमागए  
लीजीयेएकअफीअपरिवान ॥ ३४ ॥  
रसविनयगुटिकाकरक परमिति  
हंकुजुएक ॥ रात्रिसंमेनकरणकरक  
अलितरमेअनेक ॥ ३५ ॥ दुर्गध्वहरण  
प्रतीकार ॥ मोपाइ ॥ चंदनरजनमा

यक पूर। लोड अगार पद माष कचूर  
छटु मरु कां गज के सर पाय। मझी जड  
आन ले मिलाय। देही मरि नकी जे जास  
दुर्गा धिता छे छि न मेना स। पित्त रोग  
सर्व ना सहि जान। देष ग्रंथ म ति फल  
वधान। ३६ वगल गंध के अंधे  
होरा। मोया वे जहरी तकी चिंचा फल  
कुनि पाय। लेप जु की जे नार सु वल गं



नं०

धमिरिजाय ३१ ॥ गुटिकामुषदुर्गंध  
कह ॥ दोहोरां ॥ वेलचनेरईलायची  
जावंचीतजपाय ॥ गजकेसरंअकजा  
अफल ॥ एओषधसमजाय ३२ ॥ गोली  
करकृतभीरसों सेनकरकुमुषचा  
लिं ॥ आनं<sup>न३</sup>की दुर्गंधिता नां स होहित  
सकाल ३५ ॥ दुर्गंधिताकोलेप ॥ चोपर  
राजकेसरपहीजटपाय ॥ सिरसपत्र

अरु धोइ लाय ॥ जल सो ले पनु की जीये  
दुर्गो धिता मिर जाय ॥ ४॥ शिर की कर  
कात्री मध ॥ दो होरा ॥ आनिके जो दे  
की जड ही समान दधि पाय ॥ इरी शपा  
यके धोयके ॥ अरु आ मल मिलाय ॥ ५॥  
चंद्रमो मा मा लाती ॥ डीली संजु कर  
॥ जल सो पाव फुपी सकर होय डुर्ग  
धिताइ ॥ ६॥ इति पंडित वैद्यके रा



नेन

२

वदासपुत्रनेन सुषविरचिते वैद्यस  
नोत्सवेग्रंघंपदररोगस्त्रीपुहपगं  
पातककष्टीस्त्रीप्रस्तुतलिंगं लोचनम्  
लीट्टिकरणमुपडुंजितानाशना  
मस्तमोपुमावसंमाप्त इतिर्वैद्यस  
नोत्सवेग्रंघंपदररोगस्त्रीपुहपगं  
पातककष्टीस्त्रीप्रस्तुतलिंगं लोचनम्























